Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंकज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
16792
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

167928
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंकज

(उपन्यास)

आर्य साहित्य
Complete Vedic Books Store
The Vedic Ayurvedic Religious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 9869021448
Web: aaryasahitya.com

पंकज कीचड़ में पैदा हुआ भी पंकज ही है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

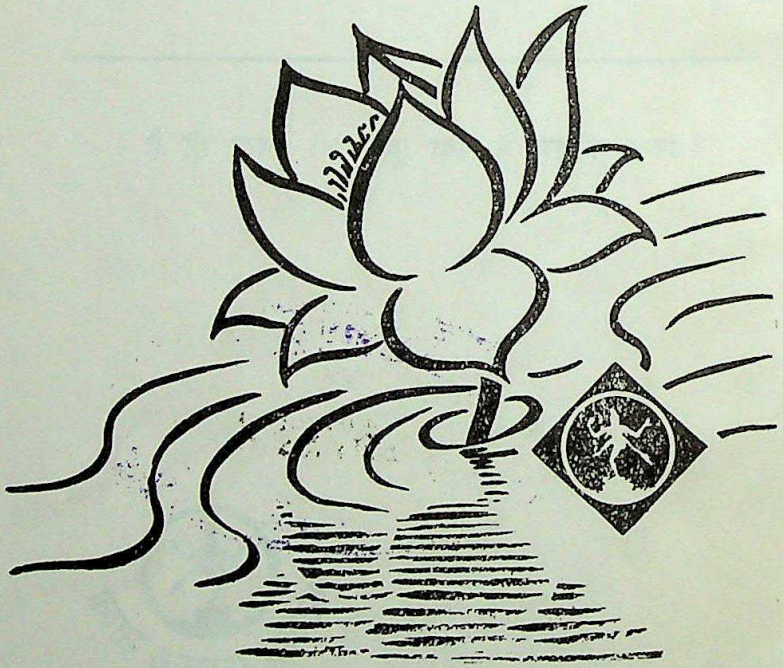

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

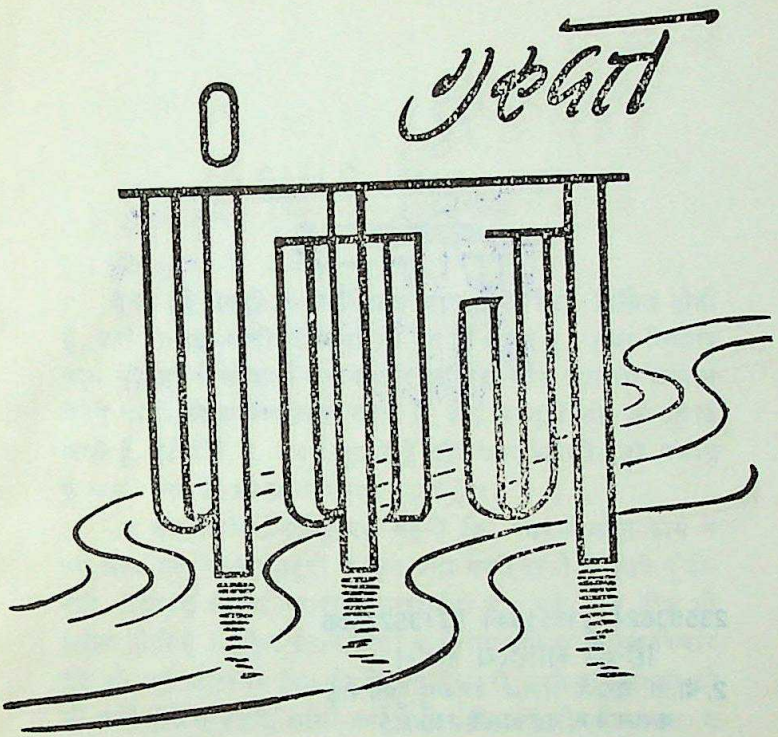

Central Library
167928
Gurukula Kangri (Deemed to be University), Haridwar
081
167928
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-P

23553624, 23551344, 9213527666
हिन्दी साहित्य सदन
2, बी. डी. चैम्बर्स, 10/54, देशबन्धु गुप्ता रोड़
करोल बाग, नई दिल्ली-110005
www.hindisahityasadan.com

मूल्य : ६० रुपये

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन
३०-पी, कनॉट सरकस, नई दिल्ली-११०००१

संस्करण : १९९६

मुद्रक : बालाजी ऑफसेट
शाहदरा, दिल्ली-११००३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

बनते हुऐ नगरों में, जहाँ महल और अटारियाँ निर्मित होती हैं, वहाँ दो-चार गन्दी बस्तियाँ भी बन ही जाती हैं। नगर-निर्माण कार्य में जहाँ लाखों रुपये लगाने वाले ठेकेदारों और इमारती सामान बेचने वालों की आवश्यकता रहती है, वहाँ मजदूरों की, जो खुदाई करते हैं, ईंटें ढोते हैं, सड़कें कूटते हैं और अन्य अनेकों इसी प्रकार के कार्य करते हैं, भी आवश्यकता रहती है।

यह एक प्रचलित उक्ति बन गई है कि नगर-निर्माण कार्य में इन अल्प आय वाले मजदूरों के लिए बनी गन्दी बस्ती के लिये पूंजी-पति, ठेकेदार अथवा व्यापारी उत्तरदायी हैं। यह बात ठीक भी प्रतीत होती है। महल बनाने वालों के मस्तिष्क में कभी यह विचार तक भी नहीं आता कि दिन भर मेहनत-मजदूरी करने वाले प्राणी को भी सर्दी-होने से बचने, आँधी-वर्षा में सिर छिपाने और फिर रात के समय कहीं एकान्तवास की आवश्यकता रहती है।

वे बेचारे मजदूर, अपनी स्त्री और काम करने योग्य पुत्र-पुत्रियों के साथ, दिन भर के परिश्रम के बाद, जब नगर के बाहर स्वामिहीन भूमि पर बनी कुटिया में, थकावट से लड़खड़ाते पगों से मन्द-मन्द गति से जा रहे होते हैं तो उन्हें देख जीवन की दूःभर स्थिति पर विचार करने के लिये विवश होना ही पड़ता है।

जब नई दिल्ली का निर्माण हो रहा था, तब यमुना के किनारे एक मजदूरों की बस्ती का भी निर्माण साथ-साथ होता जाता था। पहले नई दिल्ली पुराने नगर के उत्तर की ओर यमुना के किनारे, जहाँ आज तिमारपुर है, बनाने का विचार हुआ था। इसके साथ ही नगर के पूर्व की ओर यमुना तट पर एक गन्दी बस्ती का भी निर्माण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया ।

नई दिल्ली के बनाने की घोषणा भारत-सम्राट ने की थी । वाइसराय ने इसके प्रथम भवन का शिलान्यास किया था और इसके निर्माण के लिये देश-विदेश से इंजीनियर तथा ठेकेदार आये थे । परन्तु यमुना तट की इस गन्दी बस्ती के बनने की न तो किसी ने घोषणा की, न इसका शिलान्यास हुआ और न ही इसके बनाने के लिये किसी को कर देने अथवा धन लगाने की आवश्यकता हुई । यह स्वयमेव बनती चली गई ।

भगतू, जिला रोहतक का एक गरीब भूमिहीन किसान, जब दिल्ली में काम की धूम सुन, अपनी पत्नी और बच्चों के साथ आया और वाइसराय के लिये बनने वाले भवन में ईंटें ढोने का काम पा गया, तो प्रसन्नता से फूला नहीं समाया ।

भगतू की पत्नी मनकी को भी काम मिल गया । भगतू को एक रुपया और मनकी को बारह आने प्रतिदिन की मज़दूरी की बात हो गई । भगतू ने, जब से होश सँभाला था, दो-चार पैसे से अधिक, कभी हाथ में ले कर नहीं देखे थे । यह उसके जीवन का पहला दिन था, जब वह दिन ढलने पर पौने दो रुपये हाथ में पकड़ने और उनको स्वेच्छा से व्यय करने की आशा मन में बाँध बैठा था ।

भगतू के पुत्र और पुत्री को कार्य नहीं मिला, क्योंकि वे अभी छोटे ही थे । लड़की ग्यारह वर्ष की थी और लड़का दस वर्ष का । भगतू ने ठेकेदार को कहा भी था कि बच्चे कुछ काम तो कर ही देंगे, जो मन में आये दे दीजियेगा ; परन्तु ठेकेदार ने कह दिया, "नहीं, ये अभी छोटे हैं । इनको काम नहीं दिया जा सकता । कानून ऐसा ही है ।"

परिणामस्वरूप मोहिनी और सन्तू एक पेड़ के नीचे बैठ कंकड़ों से खेलते रहे और भगतू और मनकी काम करते रहे ।

दोपहर के समय एक घंटे की छुट्टी हुई । मनकी गाँव से भुना बाजरा और मकई लाई थी । अपने बच्चों के पास आकर वे उनको चबाने लगे । नमक और लाल मिर्च भी साथ थी । इससे मुख का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाद बना लिया जाता था।

बच्चे भूखे थे। माता-पिता ने मेहनत से चार घन्टे कार्य किया था। सबने पेट भर खाया और सो गये। समय पर घन्टा बजा और सब मजदूर काम पर जा पहुँचे। मोहिनी और सन्तू वहीं पेड़ के नीचे बैठे रहे। मोहिनी सो गई तो सन्तू वहीं अपने आस-पास नजर दौड़ाने लगा।

उस पेड़ से कुछ अन्तर पर वह विशाल भवन बन रहा था, जिसमें भारत-सम्राट का प्रतिनिधि, जिसकी लेखनी की गति से बड़े-बड़े राजा-रईसों के वारे-न्यारे होते रहते थे, आकर रहने वाला था।

बालक के मन में विचार उठ रहा था, "यह किसके लिए बन रहा है ? कौन बना रहा है ? हमारे लिए क्यों नहीं बन रहा ? इस घर में रहने वाले के माता-पिता क्या करते होंगे ? हमारे माता-पिता भी वैसा ही क्यों नहीं करते ?"

एक मुंशी हाथ में छड़ी लिए, बगल में हाजिरी लेने का रजिस्टर दबाये, आँख पर टेढ़ा चश्मा चढ़ाये, घूम-घूम कर, मजदूरों को काम करने के लिए कह रहा था। तीन बजे के लगभग मोटर में सवार, सूट तथा हैट पहने एक व्यक्ति आया और मोटर में बैठे-बैठे ही काम होता देख, मुंशी से बातें कर चला गया।

सन्तू और मोहिनी ने मोटर पहिली बार ही देखी थी। इसे बिना घोड़े के ही चलती देख खड़े-खड़े विस्मय करते रहे। मोटर गई तो मुंशी फिर घूम-घूम कर मजदूरों को डांटने-डपटने में लग गया। पाँच बजे से पूर्व एक सफेदपोश बाबू आया और हाथ में फीता ले, बने हुए काम की, कहीं-कहीं से पैमाइश करने लगा।

काम बन्द करते-करते साढ़े पाँच बज गये। मुंशी ने, बाबू को, जो ओवरसियर था, वृत्तान्त बताया। इसी समय भगतू आया और मुंशी की ओर देख कर कहने लगा, "हजूर ! मजदूरी मिल जाय।"

"क्यों, कल नहीं आओगे, क्यों ?"

"आऊँगा, हजूर !"

"तो मजदूरी शनिवार को मिलेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु तब तक पेट कैसे भरूँगा ?"

"यहाँ का कायदा तो यही है कि मजदूरी शनिवार को बँटती है।"

"आज तो अभी मंगलवार ही है हजूर ! हम तो तब तक भूखों मर जायेंगे।"

"तो मैं क्या करूँ ?"

इस पर ओवरसियर ने कह दिया—"मुंशी जी ! कुछ खाने-भर के लिए दे दो न।"

"ठेकेदार नाराज़ होंगे।"

"क्यों नाराज होंगे ? उन्होंने मेहनत की है, अपनी मज़दूरी माँग रहे हैं। उनमें से ही तो दोगे ?"

"पर मेरे पास तो इस समय नकद नहीं है।"

"अच्छा, कितनी मज़दूरी बनी है इनकी ?"

मुंशी ने हाजिरी का रजिस्टर निकाल कर भगतू और उसकी पत्नी की हाजिरी देख कर कहा, "दोनों के पौने दो रुपये।"

"यह लो एक रुपया इनको दे दो। कल वापस कर देना।"

ओवरसियर ने जेब से एक रुपया निकाल मुंशी के हाथ में दे दिया और मुंशी ने अपनी डायरी में कुछ लिखा तथा रुपया भगतू के हाथ में दे दिया।

भगतू ने अगला प्रश्न किया, "बाबू रसद-पानी कहाँ मिलता है यहाँ ?"

मुंशी ने हाथ उठा उँगली के संकेत से बताते हुए कहा, "वह देखो दूर, उस बरगद के पेड़ के नीचे एक खोखा है। वहां पर मिल जायेगा।"

भगतू ने देखा, समझा और सलाम कर उस पेड़ के नीचे जा पहुँचा, जहाँ पर वे अपने बच्चों को छोड़ कर आये थे। मोहिनी वहीं पर थी, किन्तु सन्तू लापता था।

सन्तू दिन-भर का बैठा-बैठा थक गया था। जब मजदूर काम बन्द कर रहे थे, तब सन्तू अपनी बहिन से यह कह कि "मैं ज़रा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखूं, यह क्या बन रहा है ?" वहाँ से तीर की भांति भागा और उस मकान पर बँधे पाड़ों के बीच जा पहुँचा। जब उसको किसी ने मना नहीं किया, तो वह घूम-घूम कर देखने लगा। दीवारें बन चुकी थीं। छतें पड़ रही थीं और पाड़ों का जाल बिछ रहा था। सन्तू एक कमरे से दूसरे और फिर तीसरे में घूमता हुआ चला जा रहा था। मोहनी पहले तो उसे देखती रही, किन्तु कुछ समय बाद वह उसकी दृष्टि से ओझल हो गया।

भगतू ने अपनी लड़की से पूछा, "सन्तू कहाँ गया है ?"

"उधर गया था, अब तो दिखाई नहीं देता।" उसने संकेत से बताया।

भगतू को कुछ चिन्ता लगी, परन्तु मनकी ने कह दिया, "आ जायेगा। पहले यह बताओ रात कहाँ कटेगी ?"

"यहीं पेड़ के नीचे। अभी मैं वहां से रसद लाता हूँ, तब तक तुम कुछ सूखी लकड़ी बटोर लो। दो ईंट रख चूल्हा बनाओ। मैं देखता हूँ कि क्या मिलता है !" फिर उसने मोहिनी से कहा, "मोहिनी ! तुम यहाँ पर बैठी रहना। हम खाने का प्रबन्ध करते हैं।"

: २ :

सन्तू लौटा तो उसके मस्तिष्क में उठने वाले प्रश्नों की संख्या बहुत बढ़ गई थी। वह आया तो माँ लकड़ी बटोरने के लिये और पिता रसद लेने के लिए गया हुआ था। मोहिनी अभी भी अपने माता-पिता के कपड़ों की गठरी के पास बैठी थी।

कुछ-कुछ अँधेरा हो चला था। काम करने वाले जा रहे थे। केवल चौकीदार ही रह गये थे और वे भी अपने खाने-पीने की चिन्ता में थे। किसी ने इन नवागन्तुकों की ओर ध्यान ही नहीं दिया था।

जब भगतू एक हंडिया, सेर भर बाजरा और पाव भर मूंग की दाल, नमक, मिर्च लेकर आया तो सन्तू उस समय मोहिनी को उस मकान का वृत्तान्त सुना रहा था।

भगतू ने उसे आया देख पूछा, "कहाँ गया था सन्तू ?"

"देखने गया था, बाबा !"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या देखने गया था ?"

"वह जो सामने मकान बन रहा है।"

"अभी तो बना ही नहीं, खाली दीवारों में क्या देख रहे थे ?"

"बहुत बड़ा है बाबा ! मैं तो बाहर निकलने का रास्ता ही भूल गया था। जब निकला तो मकान की दूसरी ओर जा पहुँचा। बहुत लम्बा चक्कर काट कर यहाँ आना पड़ा।"

मनकी ने चूल्हा बनाया तो मोहिनी उठकर बाबा से दिया-सलाई ले, सूखे पत्ते और पेड़ की पतली-पतली डालियों से चूल्हा जलाने लगी। मनकी ने हँडिया ली और समीप ही मकान बनाने के लिये लगे नल के पास ले जाकर उसे धोया और उसमें पानी ले, चूल्हे पर चढ़ा दी। भगतू बाजरा और दाल बीन रहा था। जब तक वह बीन कर खाली हुआ, हँडिया का पानी गरम हो गया था। बाजरा और दाल, नमक और मिर्च हँडिया में डाल दी गई और बाजरे की खिचड़ी बनने लगी।

इसके बाद करने के लिये कुछ काम नहीं रहा। मोहिनी चूल्हे के पास बैठी लकड़ियाँ संभालने लगी। अन्य तीनों पेड़ के नीचे बैठे बातें करने लगे।

भगतू बोला, "यह सब सामान चार आने का आया है, अभी बारह आने बचे हैं।"

मोहिनी ने पकाने के लिये आधा बाजरा और दाल चढ़ाये थे। आधे की एक पोटली बाँध पेड़ की एक डाल से लटका दी गई। भगतू ने पूछा, "इतने से पेट भर जायेगा क्या ?"

"गाँव में तो भर जाया करता था। आज भूख अधिक लग रही है। आज मेहनत भी तो खूब की है।"

"वह बाबू भला आदमी निकला। नहीं तो मुंशी कुछ भी देने वाला नहीं था।"

"वह कौन था ?"

"ओवरसियर बाबू कहते हैं।"

"वह क्या होता है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका उत्तर भगतू नहीं जानता था।

सन्तू मन में अलग ही विचार कर रहा था। वह सोचता था, हमारा घर कहाँ है, पिता ने बनाया क्यों नहीं, यहाँ पर कार्य करने वाले अन्य मजदूर कहाँ चले गये हैं, ये चौकीदार यहाँ पर क्यों ठहरे हुए हैं, इत्यादि-इत्यादि।

माता-पिता खाने की चिन्ता कर रहे थे कि सन्तू ने कहा, "बाबा ?"

"हाँ।"

"हम अपना घर कब बनायेंगे ?"

"मैं क्या जानूँ रे।"

"तो कौन जानता है ?"

"भगवान।"

"पर वह तो गाँव के मन्दिर में रह गया है ?"

"इस पर भी जानता वही है।"

"तुमने उससे पूछा नहीं ?"

"पूछा था, वह कहता था मेहनत करो, फल मिलेगा।"

"परन्तु बाबा ! वह जो मोटर में बैठ कर आया था, क्या मेहनत कर रहा था ? ईंट, चूना, सीमेंट और रेत वगैरह तो तुम लोग ढो रहे थे। कुछ लोग दीवार बना रहे थे, मुंशी देख-भाल कर रहा था। उस मोटर में बैठे व्यक्ति ने तो कुछ भी मेहनत नहीं की। इस पर भी सब उसको झुक-झुक कर सलाम कर रहे थे।"

"बेटा ! सुना है वह बहुत पढ़ा-लिखा आदमी है। उसको सब बड़ा साहब कहते थे। कहते थे, विलायत से पढ़कर आया है।"

"विलायत किधर है ?"

इसका उत्तर भगतू नहीं जानता था। इस कारण वह बितर-बितर अपने पुत्र का मुख देखता रहा।

दिन व्यतीत होने लगे। मार्च का महीना था। दिल्ली में मौसम खुश्क था। वर्षा की सम्भावना नहीं थी। इस कारण दोपहर की धूप कड़ी होती थी और रात को सर्दी हो जाती थी। भगतू दो चादरें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाया था। एक में पति-पत्नी इकट्ठे सो जाते थे और दूसरी में बहिन-भाई। पहले तो चौकीदारों ने उनके वहाँ रहने में आपत्ति की, परन्तु मनकी की आँखों में दया की भावना देख, वे शान्त हो गए।

शनिवार को वेतन वितरित हुआ। मुंशी ने हिसाब गिना और पौने आठ रुपये देकर अँगूठा लगवा लिया। पेशगी दिया हुआ एक रुपया हिसाब में काट लिया गया।

वेतन ले कर जब भगतू पेड़ के पास आया तो मनकी कहने लगी, "कहीं रहने का ठिकाना करना चाहिए।"

"यहाँ क्या है ?"

"एक तो गरमी बढ़ रही है, इससे लू में झुलस जायेंगे। दूसरे वर्षा भी तो अब आने लगेगी। फिर यह पेड़ से रसद लटकाये कब तक बैठे रहेंगे और···और···और भी तो बात है।"

"और क्या बात है ?"

इस पर मनकी मुस्कराई और मोहिनी की ओर देखती रह गई।

भगतू कुछ समझा और कुछ नहीं भी समझा। परन्तु उसने भी यह विचार कर लिया था कि इस प्रकार खानाबदोशी की भांति रह कर काम नहीं चल सकता। इसलिए उसने मनकी से कहा, "अच्छा, तुम खाने का प्रबन्ध करो। मैं मकान का पता करके अभी आता हूँ।"

भगतू वहाँ से उठकर सोहनू चौकीदार के पास चला गया। ईंटों को जोड़ चारदीवारी-सी बना, उसके ऊपर घास-फूस डाल छत वाली कुटिया बनाकर सोहनू उसमें रहता था। वह पहाड़ी था। बीड़ी पीने का बहुत ही शौकीन था। अपनी कुल्ली के बाहर बैठा वह बीड़ी पी रहा था कि भगतू ने उसके समीप पहुँच कर कहा, "सोहनू ! यहाँ कहीं सिर छिपाने के लिये भी स्थान मिल सकता है ?"

"भैया, तुम्हारी बीवी भी मुझ से इस विषय में पूछ रही थी। मैंने उससे कहा कि ऐसी ही एक कुल्ली बना ले। दो-तीन मास तो निकल ही जायेंगे।"

"उसके बाद क्या होगा ?"

"तब तक यह इमारत बनकर पूर्ण हो जायेगी। हम सब को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी अन्य स्थान पर जाना पड़ेगा, तुम भी साथ ही चल पड़ना।" भगतू को विस्मय हुआ कि मनकी ने यह बात उसे नहीं बताई। फिर कुछ विचार कर बोला, "मैं तो कोई पक्की जगह चाहता हूँ, जहां एक बार बैठ जाऊँ तो फिर वहाँ से कोई उठाने वाला न हो।"

"मरने पर भी कोई उठाने आयेगा, तो नहीं उठना।"

इस व्यंग से भगतू को कोई प्रसन्नता नहीं हुई। परन्तु एक मजदूर का जीवन तो इन सब बातों से ऊपर होता है। उसने कह दिया, "भैया! वह तो सब के साथ है। मरने में अभी देरी है। तब तक तो न जाने कितनी गरमियाँ, बरसातें और सरदियाँ निकलेंगी! तब तक रात को निश्चिन्ता से सोने की बात के विषय में सोच रहा हूँ।"

'व्यर्थ में रुपया गँवाओगे। कुछ जमा करना चाहिये। न जाने किस समय क्या आवश्यकता आन पड़े।"

भगतू ने बात बदल कर पूछा, "ये मजदूर लोग किधर जाया करते हैं?"

"उनसे ही पूछ लेते तो ठीक रहता। अब कल तो काम बन्द रहेगा, परसों जब वे लोग आयें तो उनसे पूछ लेना।"

इस प्रकार कुछ निश्चित उत्तर न पा, भगतू अपने ठिकाने की ओर लौटने लगा ही था कि चौकीदार ने कहा, "वहाँ पेड़ के नीचे इस प्रकार खुले में बीवी को सुलाना ठीक नहीं। उससे कहो, यहाँ इस कुल्ली में आ कर सो जाया करे और हम-तुम बाहर सो जाया करेंगे।"

"बात तो ठीक कहते हो भैया! परन्तु तुमको कष्ट होगा।"

यह कह कर वह जाने लगा तो सोहनू भी उठ कर उसके साथ चल पड़ा। भगतू ठहर गया। उसने पूछ लिया, "किधर जा रहे हो?"

"तुम्हारी समझ में तो कोई बात आती नहीं। अब तुम्हारी बीवी को समझाने के लिये जा रहा हूँ।"

भगतू झगड़ा करना नहीं चाहता था। जब वह काम की तलाश में गाँव से दिल्ली की ओर चला था, तो गाँव के लाला ने कहा था, "नगर के लिए चले तो हो, किन्तु बीवी का ध्यान रखना, वहाँ झपटने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाले बहुत रहते हैं।"

"उस बेचारी को झपटकर कोई क्या करेगा ?" भगतू ने कहा था।

"उसकी आँखों में जादू है। उस पर तो परवाने झपटेंगे।"

भगतू को अपनी पत्नी की आँखों में स्नेह और सरलता दिखाई देती थी। इसीलिये उसने लाला की बात की ओर कोई ध्यान ही नहीं दिया था। आज उसको वह बात याद आ गई। उसने सतर्क हो कहा—"भैया ! तुम अपनी कुल्ली में ही बैठो। आज तो हम जा नहीं रहे, फिर किसी फुरसत के समय समझ लेना।"

"अरे भैया ! चलो भी।"

मोहिनी खिचड़ी पका रही थी। सन्तू पेड़ से ढासना लगाये अपनी कल्पना के दुर्ग बना रहा था। उसके मन में रह-रह कर आता था, उनका अपना इतना बड़ा मकान क्यों नहीं हो सकता ?

भगतू अपनी पत्नी के पास आया तो सोहनू चौकीदार भी उसके साथ आ गया। मनकी अपनी ओढ़ने वाली गुदड़ी की मरम्मत कर रही थी। सोहनू ने आते ही कहा, "सन्तू की माँ ! यह तुम्हारा मनसेधु कह रहा है यहाँ बाहर नंगे में तुमको बहुत कष्ट हो रहा है। इस कारण मैं कहने के लिये आया हूँ कि वहाँ उस कुल्ली में चल कर रहो। तुम बच्चों के साथ भीतर रहना, हम मर्द बाहर सो जाया करेंगे।"

इस प्रस्ताव को मनकी, कम से कम कुछ दिनों के लिए तो मान जाती परन्तु इसके पूर्व सोहनू मनकी से एक और प्रस्ताव कर चुका था। जब भगतू रसद खरीदने के लिए गया हुआ था, तो वह मनकी के पास आकर बोला था, "मनकी, आज मेरे पास दो रुपये फालतू हैं।"

"तो मैं क्या करूँ ?" उसने विस्मय से सोहनू का मुख देखते हुए पूछा था।

"मैं ये रुपये तुमको दे देना चाहता हूँ।"

"क्यों ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रात जब सब सो जायें तो उस कुल्ली में चली आना। इसलिए।"

"अच्छा आऊँगी। जाओ दूर बैठो, कोई देख लेगा।"

इस भूमिका में मनकी उसके नवीन निमन्त्रण का अर्थ स्पष्ट समझ रही थी। उसने अब फिर बात टालने के लिए कह दिया, "भैया ! तुम बहुत अच्छे हो। अब तुम जाओ, हम परस्पर विचार करके ही तुमको अपने निश्चय के विषय में बतायेंगे।"

सोहनू को इतनी सुगमता से सफलता की आशा भी नहीं थी। अतः वह चला गया। उसे भी खाना पकाना था।

: ३ :

खाना खाते हुए मनकी ने कहा, "चौकीदार के सिर पर काम का भूत सवार है। मैं इसीलिए कह रही थी कि कहीं मकान ढूंढना चाहिये।"

"मनकी ! मैं समझता हूँ, परन्तु इस समय इतनी जल्दी तो यह सम्भव नहीं है। कल कुछ प्रबन्ध कर लिया जावेगा।"

"देखो, भोजन कर उस बनिये की दुकान पर जा कर पता करना। कदाचित् वह कुछ सहायता कर सके।"

यह बात तो भगतू को सूझी ही नहीं थी। उन्होंने भोजन किया और बच्चों को सोने के लिए कह, दोनों उस बनिये की दुकान पर, जहाँ से उनकी रसद आती थी, जा पहुँचे।

भगतू ने कहा, "लाला ! यहाँ रहने के लिए कहीं कोई स्थान मिला सकता है ?"

"अब तक कहाँ रहते थे ?"

"हमको आये अभी पांच ही दिन हुए हैं। अभी तक तो उस पेड़ के नीचे ही पड़े हैं।"

"राम राम ! वहां किस प्रकार सोते होंगे ? यहां तो साँप-बिच्छू बहुत होते हैं। और कभी-कभी तो रात को भेड़िया भी आ जाता है।"

"भेड़िया तो नहीं देखा, हां गीदड़ों को बोलते अवश्य सुना है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बस दो प्राणी हो या कोई और भी है ?"

"दो बच्चे भी साथ हैं।"

"कहाँ हैं वे ?"

"वहीं पेड़ के नीचे सो रहे हैं।"

"तो जल्दी जा कर उनको ले आओ। तुम नहीं जानते भाई, यह जंगल है। यहाँ रहना अपनी जान को जोखिम में डालना है। देखो, आज रात को तुम लोग यहाँ दुकान के बाहर पड़े रहना। कल दिन के समय तुमको एक झोंपड़ी दिलवा दूंगा। यहाँ से कुछ दूर तो पड़ेगी, किन्तु रात को सुख से सो सकोगे।"

"कब तक दुकान बन्द करोगे ?" भगतू ने पूछा।

"अभी एक घंटा भर बैठूंगा। दुकान को तो मैं ताला लगा जाता हूं, किन्तु बाहर चौकीदार सोता है। तुम इस ओर पड़े रहना। कल रहने का बन्दोबस्त हो जायेगा। महीन का दो रुपया भाड़ा देना होगा।"

भगतू और मनकी बच्चों को लेने के लिए चले गये। मार्ग में चलते हुए मनकी ने कहा, "भला आदमी प्रतीत होता है लाला।"

"यह भेड़िया, सांप और बिच्छू की बात तो हम लोगों के दिमाग में कभी भी नहीं आई थी।"

"पाँच रातें तो आराम से गुजर गईं। अब आगे की भगवान जाने।"

"आज वहाँ से चला आना चाहिये। कम-से-कम सोहनू से तो छुटकारा मिलेगा।"

सोहनू अपनी कुल्ली में बैठा भोजन कर रहा था कि ये चुपचाप अपना संक्षिप्त-सा सामान बटोर और बच्चों को चुप रहने का संकेत कर, वहाँ से चल, बनिये की दुकान के पिछवाड़े आ गये।

एक पक्के चबूतरे पर लकड़ी के तख्तों का खोखा बना था। एक ओर दरवाजा था, ऊपर टीन की छत थी। भीतर अन्न, तम्बाकू बीड़ी-सिगरेट, तेल इत्यादि घर का सब सामान रखा था। लाला बिक्री कपड़े में बाँध रहा था। भगतू ने लाला के सामने खड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो कहा, "लालाजी ! हम आ गये हैं । आपकी इस हमदर्दी के लिए हम जीवन भर कृतज्ञ रहेंगे ।"

"अच्छा किया है । तनिक ध्यान से सोना । कहीं से चोर सेंध न लगा लें ।"

इस अचानक भगदड़ का अर्थ सन्तू की समझ में नहीं आया । मोहिनी ने सोहनू और अपनी माँ में हुए वार्त्तालाप को सुना था और कुछ उसे समझी भी थी । यह न समझते हुए भी कि क्यों पुरुष स्त्रियों से मीठी-मीठी बातें करते हैं, वह सुनती थी । कभी अपने पिता और माँ को एक ही गुदड़ी में सोये फुस-फुस बातें करते हुए भी सुनती थी । अतः बिना कुछ भी समझे, सोहनू की किसी वैसी ही बात की आशंका कर, यह भगदड़ उसी का परिणाम मान बैठी थी ।

रात जब सन्तू और मोहिनी समीप सोये तो सन्तू ने पूछा, "हम यहाँ क्यों आ गये हैं ?"

"सोहनू के कारण ।"

"क्यों, उसको क्या हुआ है ?"

मोहिनी इस 'क्यों' का उत्तर नहीं जानती थी । उसने कुछ सोच कर कहा, "उसने माँ को कुछ कह दिया था । माँ ने बापू से कहा और हम यहाँ चले आये ।"

सन्तू ने समझा कि उसने उसकी माँ को कुछ गाली दी होगी । इससे उसको क्रोध चढ़ आया । परन्तु अब तो सोहनू सामने था नहीं, इस कारण उसको शान्त होना पड़ा ।

अगले दिन लाला ने अपनी दूकान के चौकीदार के साथ भगतू को भेज दिया । उसने कहा, "लखन ! भगतू को जमना के समीप की झोंपड़ियाँ दिखा देना । उनमें से यह जिसे पसन्द करे, दे देना और एक महीने का दो रुपया किराया पेशगी ले लेना ।"

लखन लाला का एक गरीब रिश्तेदार था । वह लाला के यहाँ इन झोंपड़ियों का प्रबन्ध करता था और रात को दूकान की चौकसी करता था । वह भगतू और उसके बाल-बच्चों को दूर यमुना तट पर ले गया । वहाँ तीस के लगभग ईंट और फूस की झोंपड़ियाँ बनी हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं। उनका फर्श कच्चा था। झोंपड़ियों के आगे एक गड्ढा था, जिसमें पाना जमा था। उस पानी पर मच्छर उड़ रहे थे। जब वे वहाँ पहुँचे तो उन झोंपड़ियों में रहना वाला एक पुरुष कहीं टट्टी कर आया था और आबदस्त ले रहा था।

लखन ने कुटिया का द्वार खोला तो वह मच्छरों से भरी पड़ी थी। भूँ-भूँ कर उसके चारों ओर मच्छर उड़ने लगे। मनकी ने कुटिया में घुस कर देखा। छत का फूस हलका पड़ गया था और ऊपर देखने पर कुछ-कुछ आकाश दिखाई देने लगा था। भगतू तो बाहर का वातावरण देखकर ही उसको नापसन्द कर बैठा था। मनकी भीतर गई और बाहर आकर कुछ विचार करने के लिए खड़ी हो गयी। वह आदमी, जो गड्ढे के जल में आबदस्त ले रहा था, धोती की लाँग टाँगता हुआ, इस कुटिया में रहने के लिए आये हुओं को देखने वहाँ आकर खड़ा हो गया। मनकी ने भी उसको देखा और माथे पर त्योरी चढ़ा कर लखन से पूछने लगी, "कोई दूसरी दिखाओ, जो इस गड्ढे से कुछ दूर हो।"

"उसका किराया तीन रुपया मासिक है।"

"दिखाओ तो।" मनकी ने कहा।

लखन उन्हें एक अन्य कुटिया के सम्मुख ले गया। उसके समीप कोई पानी नहीं था। मच्छर भी कम थे, परन्तु छत उससे भी अधिक उखड़ी हुई थी। मनकी ने देखा, वही आदमी जो वहाँ पर आबदस्त ले रहा था, सामने की एक कुटिया के अन्दर चला गया। इसका अभिप्राय वह यही समझी कि वह वहीं सामने की कुटिया में रहता है।

मनकी ने दीर्घ निःश्वास लेते हुए कहा, "ठीक है, छत टूटी है, इस कारण दो रुपये ही दूँगी।"

"छत की हम मरम्मत करवा देंगे।"

"जब करवा दोगे तो एक रुपया और ले जाना।"

लखन मनकी की आँखों को देखकर बोला, "ठीक है, मैं लाला को कह दूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगतू ने अपनी अंटी में से दो रुपये निकाल कर कहा, "भैया ! लाला से कहना, तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद है।"

लखन गया, तो मनकी एक कुशल गृहणी की भाँति कुटिया को रहने योग्य बनाने के लिए विचार करने लगी। उसने मोहिनी और सन्तू से कहा, "जाओ गोबर इकट्ठा कर लाओ।"

स्वयं वह दो-चार ईंटों की खोज करने लगी। कुछ अन्तर पर नगर की ओर एक मकान बन रहा था। वहाँ से दो ईंटें लाकर, उसने चूल्हा बना लिया। मोहिनी और सन्तू गोबर लाये तो मनकी कुटिया के बाहर, जहाँ चूल्हा बनाया था, गोबर की पुताई करने लगी। फिर उसने झोंपड़ी की दीवार और भूमि की पुताई कर भी दी।

झोंपड़ी ठीक करने के बाद वे यमुना जी में नहाने के लिए चले गये। वहाँ तो इमारत के लिए लगे नल से स्नान हो जाता था, यहाँ कोई नल नहीं था। यमुना से नहा कर आये तो मार्ग से एक घड़ा खरीद कर ले आये। मनकी ने भगतू से कहा, "यमुना का पानी मैला है। इधर नगर की ओर जाओ, कहीं कुआँ, अथवा नल लगा मिले तो जल ले आना।"

नल आधे मील के अन्तर पर मिला। वहाँ से भगतू पीने के लिए घड़े में पानी ले आया।

अगले दिन मोहिनी और सन्तू को कुटिया में छोड़ वे मजदूरी करने के लिये चले गये। सोहनू ने मनकी को ईंटें ढोते देखा तो उसके समीप जाकर पूछनें लगा, "कहा चले गये हो तुम लोग ?"

मनकी ने बताना ठीक नहीं समझा। उसने कह दिया, "यहाँ से दूर एक मकान मिल गया है।"

सोहनू बोला, "मैं रात से भर तुम्हारी प्रतीक्षा करता रहा हूँ।"

"क्यों, जूते खाने का विचार था क्या ?"

यह सुन सोहनू मुस्कराया और अपने काम में लग गया।

दिन पर दिन व्यतीत होने लगे। इनको प्रति सप्ताह साढ़े दस रुपये मजदूरी मिल जाया करती थी। उसमें से दो रुपये की रसद, चार आने की लकड़ी, चार आने का नमक-मिर्च, आलू-प्याज और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार आने का सरसों का तेल ले आते। इस प्रकार सात रुपये प्रति सप्ताह बचा लेते थे। झोंपड़ी को वे प्रति दिन साफ़ करते रहते थे। छत की मरम्मत भी वे अपने आप ही करने लग गये थे। रविवार के दिनों में पेड़ों की डालियाँ काट लाते थे और उनका छप्पर बाँध, छत पर डाल, ऊपर रस्सियों से सूके पत्ते बाँधने लगे थे। वे चाहते थे कि वर्षा आने से पूर्व उसका टपकाना बन्द हो जाये।

सन्तू को तो देहात में सर्वत्र निर्धनता व्यापत दिखाई देती थी। गाँव का जमींदार भी मैले ही कपड़े पहिन कर बैठा दिखाई देता था। वहाँ धनी और निर्धन में प्रत्यक्ष में बहुत कम अन्तर दिखाई देता था। यहाँ नगर में तो वह अन्तर इतना अधिक था कि सन्तू की बाल-बुद्धि को भी अखरता प्रतीत होता था।

सन्तू की आत्मा इस अन्तर को देख फड़फड़ाती थी। वह अपनी सीमाओं को पार करना चाहता था। इसके लिए वह दिन भर घूम-घूम कर उपाय सोचने लगा था। दिन भर वह कुटिया में बैठ नहीं सकता था। मोहिनी तो घर पर ही बैठी रहती थी, परन्तु सन्तू उसको "अभी आया" कह कर बाहर निकल जाता था और घूम-घूम कर अपने मन की चंचलता को शान्त करता रहता था।

: ४ :

सन्तू एक दिन अकेला खेलता-खेलता, रेल के पुल के नीचे से निकल लाल किले के समीप जा पहुँचा। किले के पार्श्व में बहुत बड़े खेल के मैदान में कई बच्चों को खेलते देख उसके मन में भी खेलने की लालसा जाग उठी। देहात में वह कबड्डी और गुल्ली डंडा खेलने का शौकीन था। एक स्थान पर कुछ बच्चे गुल्ली डंडा खेल रहे थे। वह उनको खेलते हुए देखता खड़ा हो गया। उसको वे लड़के अनाड़ी समझ आये। उस मण्डली में कुछ तो उससे भी बड़ी आयु के थे। परन्तु न तो उनके निशाने ठीक बैठते थे न ही वे "दुल" करारे लगा सकते थे।

जब दो तीन लड़के खेल चुके तो उसने एक से पूछ लिया, "मैं भी खेलूं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

167928
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों, तुम क्यों खेलोगे ?"

इस प्रश्न से सन्तू एक क्षण के लिए घबराया परन्तु तुरन्त ही वह साहस पकड़ बोला, "इसलिए कि मैं तुम सबसे अच्छा खेल सकता हूँ।"

"ओह !" उस लड़के ने सन्तू को सर से पाँव तक देखकर एक अन्य को आवाज़ दे दी, "ओ इस्माइल ! इधर आना।"

इस्माइल हाथ में डंडा लिये गुल्ली को फेंकने वाला था। उसने उसकी ओर देखा और वहीं खड़े-खड़े पूछ लिया, "क्या है बब्बू ?"

R 089.9143
GUR-P

"यह कहता है, मैं भी खेलूँगा।"

"पहले मुझे खेलाये फिर बताऊँगा।"

"बब्बू ने सन्तू से पूछा, "क्या नाम है ?"

"सन्तू।"

"अच्छा, पहले इस्माइल को खिलाओ।"

इस्माइल उनकी मण्डली में सबसे अच्छा खेलने वाला था। उसने गुल्ली को फेंका तो वह पर्याप्त दूर जाकर गिर पड़ी। उस ओर मण्डली के बच्चे गुल्ली की झपट नहीं सके। सन्तू दूसरी ओर खड़ा था। वह उस ओर यह कहता हुआ भागा, 'ठहरो, मैं निशाना बींधूंगा"

दूसरे साथी समझते थे कि इतनी दूर से तो निशाना लगाया नहीं जा सकता। वे यह करते कि वहाँ से गुल्ली पहले खुत्ती के पास फेंक देते और फिर समीप से डंडे का निशाना बाँधते। यदि समीप से वे निशाना बींध भी देते, तब भी एक पारी इस्माइल को और मिल जाती। दूसरे लड़के अभी विचार ही कर रहे थे कि कौन गुल्ली को उठाये और खुत्ती के समीप फेंके कि सन्तू ने वहाँ पहुँच गुल्ली को उठा निशाना साध फेंक दिया। इस्माइल मात हो गया। गुल्ली डंडे को लगी।

सब चकित रह गये। बब्बू ने सन्तू के पास पहुँचकर कर कहा, "तो अब तुम खेलोगे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस्माइल बब्बू और सन्तू के समीप आकर कहने लगा, "आज का खेल खतम हो गया। अब किला खुल गया है और देखने वाले लोग आने लगे हैं।"

सन्तू ने विस्मय प्रकट करते हुए कहा, "आने लगे हैं तो हमें क्या ?"

"हम उनको देखेंगे।"

दूसरे लड़के समझ गये कि सन्तू को न खेलने देने के लिए ही यह बात कही गई है। वे सब चुप रहे। इस्माइल उनकी मण्डली का सरगना था।

एक ने डंडा उठाया, दूसरे ने गुल्ली जेब में डाली और सब किले के फाटक की ओर चल पड़े। सन्तू भी उनके साथ-साथ था। वह विचार कर रहा था कि देखे ये क्या करने जा रहे हैं।

ये लड़के सड़क के किनारे, जहाँ लोग ताँगे से उतर कर किले में जाने के टिकट खरीद रहे थे, जाकर खड़े हो गये। औरतें, मर्द, लड़के, लड़कियाँ, बूढ़े, युवा सब प्रकार के लोग आते थे और चार-चार आने का टिकट खरीदकर भीतर चले जाते थे।

बब्बू को सन्तू अधिक पसन्द था। वह उसके समीप खड़ा था। सन्तू कुछ देर तक वहाँ खड़ा लोगों को किले के भीतर जाते देखता रहा। उसे इसमें कुछ रस नहीं आया। दस-पन्द्रह मिनट तक देख उसने बब्बू से पूछ लिया, "तुम लोग क्या देख रहे हो यहाँ ?"

बब्बू ने उल्टे उससे ही विस्मय में पूछ लिया, "तुमको कुछ दिखाई नहीं दे रहा ?"

"सब कुछ दिखाई देता है, परन्तु इसमें क्या मज़ा है ?"

"वाह देखो, उस औरत के साथ जो लड़की जा रही है कैसी लग रही है।"

"जैसी कोई लड़की होती है।"

बब्बू खिलखिलाकर हँस पड़ा। सन्तू प्रश्न भरी दृष्टि से उसकी ओर देखता रहा। उसको अभी हँसने का कारण समझ में नहीं आया था। बब्बू ने कहा, "तुम भी बुद्धू हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बुद्धू ? भला कैसे ?"

"यह लड़की बहुत सुन्दर है।"

सन्तू ने लड़कियों के सौंदर्य के विषय में कभी विचार भी नहीं किया था। एक बात वह समझ गया था कि ये शहर के लड़के हैं। उससे कुछ तो अधिक समझते होंगे। साथ ही बब्बू उससे दो इंच ऊँचा और प्रत्यक्ष में उससे मज़बूत लड़का था।

सन्तू ने कहा, "होगी। मैं तो बाज़ार देखने के लिये जा रहा हूँ।"

"वाह ! बाजार में क्या है। यहाँ तो अभी पन्द्रह मिनट में बीसियों औरतें और लड़कियाँ दिखाई दे गई हैं।"

"तो उनको क्या करें ?"

बब्बू खिलखिला कर हँस पड़ा। उसने कहा, "तो चलो। किधर चलोगे ?"

"मुझे औरतें और लड़कियाँ देखने में रुचि नहीं है।"

"कितने वर्ष के हो ?"

"दस का।"

"तभी। मैं जब दस का था तब मैं भी ऐसा ही सोचा करता था। पर अब मैं तेरह वर्ष का हो गया हूँ। मैं अपनी माशूका ढूँढ रहा हूँ।"

सन्तू को यह सब नवीन भाषा लग रही थी। वह चल पड़ा। परन्तु बब्बू उसके साथ था। वह चलता-चलता उससे अपने में यौन के प्रादुर्भाव की कहानी सुनाता रहा। सन्तू अधिकांश न समझता हुआ, उसके साथ चलता रहा। चाँदनी चौक के, सन्तू और बब्बू ने कई चक्कर लगाये और सड़क के दोनों ओर खड़े ऊँचे-ऊँचे मकानों को देख-देख कर सन्तू अपने मकान की कल्पनाएँ बनाता रहा।

दो-ढाई घण्टे भ्रमण के बाद सन्तू को अपनी बहन की याद आई। वह एकाएक खड़ा हो गया और अपने साथी से बोला, "अब मैं चलूंगा।"

"किधर।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"घर को।"

"किधर है तुम्हारा घर ?"

सन्तू ने समझाया, "सीधा जाकर किले की दीवार के साथ-साथ बायीं ओर जाकर रेल की सड़क से नीचे से नदी के किनारे की ओर। वहाँ किनारे पर बस्ती में।"

बब्बू ने नाक चढ़ाया। वह बस्ती भीख मांगने वालों की बस्ती विख्यात थी। उसने पूछा, "तो तुम लोग भीख माँगते हो ?"

"नहीं, मेरे माता-पिता मज़दूरी करते हैं।"

यह काम भी बब्बू को छोटा ही प्रतीत हुआ। उसने कह दिया, "मैं तो समझा था कि तुम किसी दुकानदार के लड़के हो।"

"नहीं।"

"तो जाओ।" उसने सन्तू को छोड़ दिया।

सन्तू मध्याह्न के भोजन के समय के पीछे वहाँ पहुँचा। मोहिनी कुल्ली के बाहर खड़ी उसकी राह देख रही थी। सन्तू अभी दूर ही था कि मोहिनी ने आवाज़ दे दी, "सन्तू ! सन्तू !"

सन्तू ने भी मोहिनी को देखा तो भागकर चला आया। मोहिनी ने पूछा, "कहाँ गये थे सन्तू !"

"ज़रा घूमने गया था !"

"पर मुझे भूख लग आयी है और तुम दिखाई ही नहीं दिये।"

"तो तुमने खा लिया है ?',

"नहीं, तुमको ढूंढ रही थी।"

"भूख तो मुझे भी लगी थी, परन्तु मोहिनी ! नगर के मकानों को देखने में भूल भूल गया था।"

"वाह ! भूख कैसे भूल सकते हो !"

"भूल गया था।"

उसने रोटी खाई। कुछ देर तक आराम किया। मोहिनी आराम करने लेटी तो सो गई। सन्तू लेटा-लेटा अपनी छत के छिद्रों को देख-देख, पुनः चाँदनी चौक के मकानों का विचार करने लगा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह कैसे होगा ?" यह प्रश्न उसके मन में अनेक रूपों में उत्पन्न हो रहा था।

उस दिन सायंकाल उसने अपने बाप से पूछ ही लिया, "बाबा ! एक अच्छा मकान कितने में बन जावेगा।"

"किस लिये पूछते हो ?"

"मैं अपना मकान बनवाऊँगा।"

"बनवा सकते हो। परन्तु उसके लिए बहुत रुपये चाहिएँ। रुपया मिलता है काम करने से। ईमानदारी से काम करने से और भगवान की कृपा से।"

"मैं काम कब करूँगा।"

"अभी तुम छोटे हो। यहाँ नगर में छोटे लड़के काम नहीं कर सकते। तीन चार साल बाद तुम हमारे साथ काम पर चल सकोगे।"

सन्तू को वह समय बहुत दूर प्रतीत हुआ।

अब वह नित्य माता-पिता के काम पर चले जाने के उपरान्त नगर की ओर चला जाता था। उनके माता-पिता का प्रातः कलेवा लेकर काम पर जाते थे। उस समय मोहिनी और सन्तू भी पेट भर-कर खा लेते थे। मोहिनी बर्तन साफ करने लग जाती थी और सन्तू कुल्ली से फरार हो जाता था।

उसका बब्बू मित्र बन गया। उसकी मण्डली के दूसरे लड़कों सन्तू की अल्पायु और यौन सम्बन्धी बातों से अनभिज्ञ जान उसका साथ पसन्द नहीं करते थे। बब्बू को एक बात सन्तू में पसन्द आई कि वह दुकानों पर लगे भूषण, वस्त्र तथा अन्य प्रयोग के सामान देखने में रुचि रखता था। बब्बू को कुछ ऐसा समझ आया कि सन्तू बहुत ही चपल स्वभाव का है और वह उससे किसी दुकान की वस्तु उठवाकर उसे भगा देगा और फिर उसको बेचकर दावत करेगा।

इन दोनों में घनिष्ठता होती जाती थी। ये मण्डली के दूसरे लड़कों से भी मिलते थे परन्तु वे सन्तू की ऐसी अवहेलना करते थे मानो वह एक नगण्य जीव है।

इस पर भी सन्तू बारह बजे मध्याह्न अपने घर को लौट जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था और मोहिनी के साथ मध्याह्न का भोजन किया करता था। इस प्रकार एक मास के लगभग निकल गया था। इतने काल में उसने बब्बू के साथ आधी दिल्ली देख डाली थी।

एक दिन वह मध्यान्ह के समय घर लौटा तो उसकी कुल्ली के बाहर पड़ोस की एक औरत रामी खड़ी थी। सन्तू विस्मय में उसका मुख देखने लगा तो उस औरत ने पूछ लिया, "कहाँ गये थे लल्ला ?"

"ज़रा टहलने के लिए चला गया था।"

"क्या नाम है तुम्हारा ?"

"सन्तू।"

"देखो सन्तू ! यह दिल्ली है। गाँव नहीं। यहाँ भले और बुरे सब प्रकार के लोग रहते हैं। बुरों से बचकर रहोगे तो सुखी रहोगे।"

"बुरे कैसे होते हैं।"

"जो बुरी बात कहें और करें।"

सन्तू अब बुरी और अच्छी बात के विषय में विचार करने लगा था। वह बब्बू की बातों पर विचार कर रहा था। उसको कुछ यह समझ आया था कि वह लड़कियों को बीवी बनाने की बातें किया करता है। वे बातें जरूर बुरी होंगी।

: ५ :

बात यह हुई थी कि मोहिनी को अकेला बैठे देख सामने की कुटिया वाला इनकी कुटिया के चक्कर काटने लगा था। कई दिन चक्कर काटने के बाद एक दिन उसको मोहिनी से बात करने का अवसर मिल गया। मोहिनी अपनी कुटिया के बाहर खड़ी सुस्ती निकाल रही थी। उसने पूछा, "क्या नाम है तुम्हारा ?"

मोहिनी ने उसके मुख पर देखा तो वह मुस्कराने लगा। माथे पर त्यौरी चढ़ाकर मोहिनी ने कहा, "हँस क्यों रहे हो ?"

"इसलिए कि तुम मुझे बहुत अच्छी लग रही हो ?"

"तो इससे मुझे क्या ?"

"तुम्हें भी कुछ है। देखो, वह मेरी झोंपड़ी है। खाली पड़ी है, मैं वहाँ अकेला होता हूँ। तुम वहाँ आओ तो तुम को कुछ दूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या दोगे ?"

वहाँ आओ तो बतऊंगा ।"

"अच्छा माँ आ जाय तो आऊँगी ।"

"नहीं, माँ को नहीं बताना । वह तो मना कर देगी ।"

इस समय बगल की झोंपड़ी में से एक औरत निकल आई और उस आदमी की ओर देख कर बोली, "करमू हरामी ! क्या कह रहा है लड़की को ? तेरी लड़की के बराबर है, शरम नहीं आती इस तरह की बातें करते हुए ?"

"रामी माँ ! क्या कह रहा हूँ ! यही तो न कि वह यहाँ अकेली बैठी रहती है, वहाँ आ जाये तो दिल बहल जाया करेगा ।"

"तेरा दिल बहलाने वाली कहाँ गई है ?"

"वह भीख माँगने के लिए गई हुई है ।"

"और तू क्यों नहीं गया ?"

"मुझ हट्टे-कट्टे को देख कोई देता नहीं । सब कह देते हैं नौकरी कर लो ।"

"तो करते क्यों नहीं ? देख तो, इनके माँ-बाप दोनों काम पर जाते हैं । दो रुपये कमा कर लाते हैं ।"

"मुझ से काम नहीं होता, रामी माँ !"

"अच्छा देख, यहाँ से दूर रहा कर, नहीं तो जूतों से पिटवा दूंगी ।"

रामी माँ का हल्ला सुन पास-पड़ोस की झोपड़ियों से तीन-चार और स्त्रियाँ बाहर निकल कर आ गईं । करमू तो वहाँ से टल गया । रामी की माँ बताने लगी, "यह करमू बड़ा बेईमान है, इस सीधी-सादी बेचारी लड़की को फुसला रहा था ।"

सब मोहिनी को कहने लगीं, "देखो, इसका कहा न मानना । कभी फिर कुछ कहे तो भाग कर हमारे पास आ जाना ।"

मोहिनी समझी कि यह करमू भी कुछ वैसी ही बात कहता था, जैसी सोहनू चौकीदार ने उसकी माँ को कही थी । इससे वह सतर्क हो गई ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्तू अब कई दिन से मध्यान्ह खाना खा कर भी बाहर निकल जाता था और सायंकाल अपने माता-पिता के लौटने से कुछ ही देर पहले वापस आ जाया करता था। आज वह मध्यान्ह के समय वापस आया तो रामी माँ उसको समझाने लगी। मोहिनी भी कुल्ली से निकल आयी। उसने पूछ लिया, "सन्तू ! तुम रोज ही कहाँ चले जाया करते हो ?"

"क्यों क्या बात है ?"

"यह सामने को झोपड़ी वाला आज मुझसे कह रहा था कि अकेले में मैं उसके यहाँ चली आया करूँ।"

"क्यों ?"

"वह मुझको कुछ देगा।"

सन्तू घूमने-फिरने से नगर के आवारा लड़कों की संगति में आ चुका था। इससे एक महीने में ही वह पुरुष-स्त्री के सम्बन्धों के विषय में मौखिक रूप में ही बहुत कुछ समझने लगा था। उसने कह दिया, "उसके झोंपड़े में मत जाना और न ही उसको यहाँ आने देना।"

"मुझे अकेले डर लगने लगा है।"

"अच्छा, मैं कल यहीं रहूँगा।"

उस दिन सन्तू घर पर ही रहा। अगले दिन भी वह घूमने नहीं गया। झोंपड़े के बाहर एक पेड़ था। सन्तू वहाँ उस पेड़ के नीचे बैठा कंकड़-पत्थरों से खेलता रहा। मोहिनी भीतर बैठी अपने पिता के कुरते की मरम्मत कर रही थी। दोनों मध्यान्ह का भोजन कर चुके थे। इस समय सन्तू का साथी बब्बू वहाँ पर आया और उसको पेड़ के नीचे बैठा देख, उसके सम्मुख आ खड़ा हुआ।

सन्तू ने विस्मय में उसकी ओर देखते हुए कहा, "तुम यहाँ कैसे आये ?"

"तुम न तो कल आये न ही आज।"

"आज बहिन कहने लगी कि अकेले में उसको डर लगता है, इसलिए मैं खेलने नहीं आया।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम्हारी बहन भी है ?"

"हाँ, क्यों ?"

"दिखाओ।"

"क्यों दिखाऊँ ?" इतना कह कर सन्तू उठ कर अपने मित्र के सम्मुख खड़ा हो गया।

वह लड़का बोला, "ज़रा देखूँगा कि कैसी है ?"

"मैं बताता हूँ, कैसी है···।" इतना कहते-कहते उसने एक घूंसा उसके मुख हर जड़ दिया। बब्बू उससे दो इंच लम्बा था। आयु में भी तीन वर्ष बड़ा था। वह ऐसी आशा नहीं करता था। अतः एक-दो क्षण तो वह भौंचक्का-सा हो उसको देखता रहा। इतने में सन्तू ने उसको दो घूंसे और जमा दिये।

अब वह लड़का सन्तू पर पिल पड़ा। भद्दी-भद्दी गालियों के साथ वह सन्तू के मुक्कों का उत्तर देने लगा। सन्तू उससे गुत्थम-गुत्था हो गया। उसकी गालियों का हल्ला सुन मोहिनी और अन्य झोंपड़ियों की स्त्रियाँ, बच्चे आदि बाहर निकल आये। रामी-माँ भी आई और दोनों लड़कों को छुड़ा कर पूछने लगी, "क्यों लड़ रहे हो ?"

सन्तू की नाक से रक्त बह रहा था, परन्तु उसके साथी की आँख सूज कर कुप्पा हो रही थी। सन्तू ने ज़ोर से अपना सिर उसके पेट में दे मारा था और वह पेट पर हाथ रख टेढ़ा हो गया था।

सन्तू ने रामी-माँ को बताया, "रामी माँ ! यह बहिन को गाली देता था।"

"क्या गाली देता था ?"

"कहता था, उसको देखूंगा, वह कैसी है।"

रामी-माँ ने पाँव से जूती उतारते हुए कहा, "भाग जा हरामी ! नहीं तो टाँट गंजी कर दूंगी।"

सन्तू का साथी पेट को दबाये हुए वहाँ ले चला गया। रामी-माँ ने सन्तू के नाक और सिर पर पानी लगा, उसके रक्त को बन्द किया और मोहिनी से कहा, "तुम माता-पिता के जाने पर मेरे झोंपड़े में आ जाया करो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"माँ नाराज़ होंगी।"

"नहीं होंगी, मैं बता दूंगी।"

शाम को जब भगतू और मनकी काम पर से लौट कर आये तो रामी ने उनको सन्तू के झगड़े का वृत्तान्त सुना दिया और साथ ही अपना प्रस्ताव भी उनके सम्मुख रख दिया। रामी माँ की भी एक लड़की थी। रामी का घर वाला कपड़ा मार्किट में एक लाला की नौकरी करता था। उसे बीस रुपया वेतन तथा एक समय का भोजन मिलता था।

रामी चालीस वर्ष से अधिक आयु की स्त्री थी। उसका घर-वाला भी लगभग उसी आयु का था। लड़की आठ वर्ष की थी। हनुमानजी की बहुत मिन्नत मानने के बाद यह सन्तान हुई थी। इससे उमका नाम देवी रख दिया था।

इस बड़ी अवस्था में सन्तान पा वे भगवान् राम और उसके भक्त श्री बजरंगबली के गुण गाते नहीं अघाते थे।

भगतू को रामी के घर वाले ने समझाया, लड़की में जवानी के लक्षण दिखाई देने लगे हैं, ज़माना बहुत बुरा है, इसको तुम देवी की माँ के यहाँ छोड़ जाया करो, देवी और वे साथ ही खेल लिया करेंगी।

परिणाम यह हुआ कि भगतू और मनकी अपने झोंपड़े में ताला लगाकर जाने लगे। सन्तू अब पहले से अधिक स्वतन्त्र हो गया। यों तो उस को घर पर भी अपनी बहिन के अतिरिक्त एक अन्य साथिन देवी मिल गई थी, इस पर भी उसको लड़कियों के साथ खेलने की अपेक्षा, बाज़ार में घूमना अधिक पसन्द था।

सन्तू को एक और बात का पता लग गया। वह अपने आवारा मित्रों के साथ घूमता हुआ आती-जाती लड़कियों और औरतों के विषय में उनके कटाक्ष सुना करता था। उन मित्रों में से एक को अपनी बहिन को देखने की इच्छा जान वह समझ गया था कि वह उसके विषय में क्या देखना चाहता है। उसके मन पर इसकी प्रति-क्रिया हुई। वह समझ गया कि जैसे वह अपनी बहिन के विषय में उनकी टीका-टिप्पणी नहीं सुनना चाहता, वैसे ही अन्य बहिनों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाई भी तो नहीं चाहते होंगे। वह समझ गया था कि वह उन लड़कों की बातें सुन और उनमें भाग ले, कुछ अच्छा काम नहीं कर रहा है। उसने उनसे मेलजोल बन्द कर देने का निश्चय कर लिया था।

अगले दिन जब वह अपने भ्रमण पर निकला तो उसको चांदनी चौक के किनारे, लाल किले के पास अपने मित्रों की टोली खड़ी दिखाई दी। बब्बू ने, जिसकी पिछले दिन सन्तू के साथ लड़ाई हुई थी, सन्तू को देखा तो उसने अपने साथियों को उसकी ओर हाथ का संकेत कर बता दिया। इस पर सब के सब "मारो साले को" कहते हुए सन्तू की ओर लपके। सन्तू उनका हल्ला सुन समझ गया कि उसकी खैर नहीं। अकेला वह इन सबका मुकाबला नहीं कर सकता था। अतः वह सिर पर पाँव रख कर भागा।

बाज़ार में आने जाने वालों ने जब एक के पीछे छः-सात लड़कों को भागते देखा, तो सन्तू को पकड़ कर उन मारने वालों को रोकने लगे। बीस-तीस की भीड़ इकट्ठी हो गई। लोगों ने समझा कि कोई जेब कतरा किसी की जेब कतर कर भागा है। सन्तू ने कह दिया, "ये मुझको मार रहे हैं।"

इस पर एक लाला ने उसके आगे खड़े हो कर पूछा, "क्यों लड़ रहे हो ?"

"इसने मुझको कल पीटा था।"

इस पर सब हँस पड़े। उस लड़के की आँख अभी सूज रही थी। सन्तू से वह हृष्ट-पुष्ट और ऊँचे कद का दिखाई देता था। लाला ने कहा, "तो तुम अकेले मार खा कर, अब सब मिल कर इससे बदला लेने के लिये आए हो ?"

"हाँ, हम सब दोस्त हैं।" उनमें से एक बोल पड़ा।

इस पर उस लाला ने कह दिया, "और मैं इसका दोस्त हूँ। तुम सब मिल कर एक को पीटोगे तो मैं इसकी ओर से लड़ूंगा।" इतना कह लाला ने घूर कर उनकी ओर देखा। उसकी समझ में आ गया था कि ये आवारा लड़के हैं।

उस लाला के ऐसा कहने पर, वे छहों पीछे हट गए और एक-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक करके वहाँ से खिसकने लगे। इस पर खड़े हुओं ने ताली बजा दी।

वह लाला जाने लगा तो सन्तू ने कृतज्ञता भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा। लाला के मन में कुछ आया। उसने कहा "ऐ लड़के! इधर मेरे साथ आओ। उधर तो तुमको वे फिर पीटेंगे।"

: ६ :

उस लाला की चाँदनी चौक में गोटा-किनारी की दुकान थी। वह रामनारायण गोटे वाले के नाम से विख्यात था।

लाला रामनारायण सन्तू को अपनी दुकान पर ले गया। रामनारायण का बड़ा भाई गद्दी पर बैठा था। वह भाई के साथ एक मैले-कुचैले, फटे कपड़ों में, दस वर्ष के लड़के को आते देख प्रश्न भरी दृष्टि से उसको देखने लगा।

रामनारायण ने कह दिया, "भैया! कुछ नहीं। इस अकेले को छः सात आवारा लड़के पीट रहे थे। उनसे छुड़ा कर लाया हूँ।"

"तो यह आवारा नहीं है क्या?"

"इस अकेले ने अपने से दुगने बड़े लड़के को पीटा है।"

"इसलिए तुम इसे अवारा नहीं समझते?" रामनारायण का बड़ा भाई हँस पड़ा।

रामनारायण ने मुस्कराते हुए भाई को देखा और सन्तू को एक ओर ले जा कर बैठा दिया। उसने उससे पूछा, "ये तुम्हारे ही साथी थे क्या?"

"नहीं, ये लाल किले के मैदान में खेला करते हैं। मैं भी पहले इनके साथ खेल लेता था।"

"तो तुम उससे लड़े क्यों थे?"

"यह कल कहीं घूमता हुआ हमारे झोंपड़े के बाहर आ गया। मैं वहाँ बैठा था। वह मेरी बहिन से हँसी करने लगा तो मैंने पीट दिया। चोट मुझको भी आई थी परन्तु मैंने उसको अधिक मारा था।"

"कहाँ रहते हो तुम?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रेल के पुल के पार जो बीस-तीस झोंपड़ियाँ हैं, वहाँ रहता हूँ।"

"क्या करते हो ?"

"मेरे माता-पिता तिमारपुर में किसी इमारत पर मज़दूरी करते हैं। मुझे मुंशी ने कोई काम नहीं दिया। वह कहता था, मेरी उमर अभी छोटी है।"

"वहाँ तो प्रायः भिखारी ही रहते हैं ?"

"हम भिखारी नहीं हैं।"

"तो तुम चोरी करते हो ?"

"जी नहीं, हम मेहनत-मज़दूरी करके कमाते हैं।"

"तो तुम कोई काम क्यों नहीं करते ?"

"कोई काम मिले तो करूं।"

"अच्छा, तुम अपने बाप को लेकर आना। मैं तुमको नौकर रख लूंगा। हमारे पास रहना होगा। यदि चोरी नहीं करोगे तो हम तुम्हारी तरक्की कर देंगे।"

"तरक्की ! हम अपना मकान बना लेंगे क्या ?" सन्तू के मुख से उसके मन की बात निकल गई।

रामनारायण हँस पड़ा और हँस कर पूछने लगा, "क्या करोगे मकान बना कर ?"

"रहूँगा उसमें। हम दूसरों का मकान बनाते हैं। अपना भी बनाना चाहते हैं।"

"हाँ, रुपया इकट्ठा करोगे तो बना लोगे।"

"कल रविवार है। मैं अपने पिता को ले कर आऊँगा।"

सन्तू दुकान से निकला तो पहचानने के लिये उसके बाहर खड़ा हो देखने लगा। वह पढ़ा-लिखा बिलकुल नहीं था। इस कारण कोई ऐसी पहिचान देखना चाहता था, जिससे अगले दिन आकर वह ढूंढ सके। रामनारायण के बड़े भाई राधाकृष्ण ने उसे इस प्रकार खड़े देखकर पूछा, "क्या देख रहा है ?"

"दुकान की पहचान कर रहा हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'भाग जाओ !"

इस समय तक सन्तू को दुकान के सामने सड़क पर लगा पानी का नल दिखाई दे गया था। उसकी पहचान कर वह वहाँ से चला गया।

सन्तू गया तो राधाकृष्ण ने कहा, "यह क्या बला पकड़ कर लाये हो ? वह दुकान को पहचान रहा था। क्या जाने रात को चोरी करवा दे।"

"पर भैया ! चोरी तो इसके बिना भी हो गई थी। चोरी होती है चौकीदार की बेईमानी से। चौकीदार चुस्त हो तो कोई कैसे चोरी कर सकता है ?"

"परन्तु यह था कौन ?

"एक बहादुर और समझदार लड़का है। बहुत गरीब मालूम होता है। इसको नौकर रखने का विचार कर रहा हूँ।"

"सब चौपट कर दोगे।"

"तो क्या करूँ ? घर का काम बढ़ रहा है। 'लाज' का कोई मददगार भी तो चाहिये ?"

राधाकृष्ण ने असन्तोष का भाव प्रकट किया और मौन हो गया।

बात यह थी कि इनके पिता का देहान्त हो चुका था। इस पर भी दोनों भाई इकट्ठे ही रहते थे। किनारी बाज़ार में एक बड़े से मकान में दोनों का निवास था। भोजन पृथक् बनता था; खर्च, कपड़े, आभूषण और स्वभाव भी पृथक्-पृथक् थे। मकान और दुकान साझे में थी। दोनों दुकान से तीन-तीन सौ रुपया निकाल लेते थे और दुकान की सम्पत्ति बढ़ती जाती थी।

राधाकृष्ण की कोई सन्तान नहीं थी और रामनारायण के तीन बच्चे थे। दो लड़के और एक लड़की। इस कारण जहाँ राधाकृष्ण की पत्नी को कुछ काम नहीं था, वहाँ रामनारायण की पत्नी काम के भार से दब रही थी। वह कई बार अपने पति से कह चुकी थी कि कोई छोटी उमर का नौकर ला दो। एक नौकर पिछले साल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखा था, जो तीन-चार दिन के बाद ही रामनारायण की पत्नी का लॉकेट चुरा कर भाग गया था।

राधाकृष्ण की सम्मति थी कि नौकर नहीं रखना चाहिए और रामनारायण का सुझाव था कि लाज को अपनी वस्तुएँ संभाल कर रखनी चाहियें। लाजवन्ती ने वचन दिया था कि अगली बार वह सतर्क रहेगी।

रात घर जाकर रामनारायण ने सन्तू के विषय में लाज को बताया। उसने कहा, "एक लड़का नौकरी के लिये देखा है। नौ-दस वर्ष का होगा। बहुत ही गरीब है। कल यदि वह आया और उसके पिता ने स्वीकार कर लिया तो रख लूंगा। परन्तु यदि वह भी चोरी करके भागा तो इसका दोष तुम पर लगेगा।"

दूसरे दिन सन्तू अपने पिता को लेकर आया तो उस समय राधाकृष्ण ही दुकान पर बैठा था। उसने पूछा, "क्या चाहते हो?"

"वे दूसरे लाला नौकर रखने को कहते थे।" सन्तू ने कहा।

"ज़ामिन लाओ।"

सन्तू तो ज़ामिन का अर्थ ही नहीं समझ सका। भगतू ने कह दिया, "लाला साहब, इस शहर में हमारा कोई परिचित नहीं है।"

"तो नौकरी नहीं मिलेगी।"

भगतू दुकान के बाहर आया तो सन्तू भी बाहर आ गया। सन्तू वहाँ से जाने में आनाकानी कर रहा था। भगतू ने कहा, "सन्तू! लगता है तुम दुकान भूल गए हो।"

"नहीं बापू! यही दुकान है। यहीं रुकते हैं, दूसरा लाला आ जावे तो बात करेंगे। यह तो कल भी काटने को दौड़ता था।"

सन्तू ने बाहर दुकान की पटरी पर खड़े-खड़े यह कहा था। भगतू ने कुछ विचार कर कहा, "तुम कहो तो ठहर जाते हैं। परन्तु उम्मीद नहीं दीखती।"

सन्तू ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया और प्रतीक्षा में वह इधर-उधर देखने लगा। चौथाई घण्टे तक दोनों लाला की प्रतीक्षा में पटरी पर खड़े रहे। लड़का कह रहा था, "बापू! लाला कहता था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा भी अपना मकान होगा। उसके लिये हमें रुपये इकट्ठे करने चाहियें।"

भगतू ने भी मुंशी से यही सुना था। एक दिन वेतन बांटने के समय उसने मुंशी से पूछा था, "दिल्ली में एक छोटा-सा मकान बनाने में कितना रुपया लग जायेगा ?"

"यदि भूमि हो तो दो हज़ार के लगभग में बन जायेगा।" मुंशी का कहना था।

"एक हज़ार में कितने सौ होते हैं ?"

"दस सौ का एक हज़ार होता है।"

भगतू विचार करता था कि उसके पास दो मास में पचास अर्थात् आधा सौ एकत्रित हुए हैं। बीस महीने में एक हज़ार और फिर इससे दुगुने समय में दो हज़ार। यह समझता था कि इस जीवन में ही मकान बन सकता है। सन्तू नौकरी करे तो कदाचित् मकान बनाने की तारीख और पहिले भी आ सकती है। इस कारण वह सन्तू को नौकर कराने के लिए खड़ा था।

रामनारायण आया तो बाप-बेटे दोनों को पटरी पर खड़े देख, उनके समीप आ पूछने लगा, "यह तुम्हारा बाप है ?"

"जी। ये कहते हैं कि मैं नौकरी कर सकता हूँ।"

"कितना वेतन लोगे ?"

"जो आप प्रसन्न होकर दे दें।" भगतू ने कहा।

"मैं तो चार रुपया महीना दूंगा और साथ में रोटी कपड़ा।"

"और रविवार को छुट्टी ?" सन्तू ने पूछा।

"किसलिए ?"

"माँ-बाप से मिलने के लिये।"

"ठीक है, आधे दिन की छुट्टी मिल जांया करेगी।"

: ७ :

सन्तू के लिए यह एक नवीन अनुभव था। गाँव में ज़मींदार का घर था। वहाँ वह बहुत बड़ा आदमी समझा जाता था। यहाँ लाला रामनारायण जैसे सैकड़ों चाँदनी चौक के बाज़ार में थे। कई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुकानें तो उसके लाला की दुकान से भी बड़ी थीं। इस पर भी लाला का मकान तो जमींदार के मकान से बहुत बढ़िया था।

किनारी बाज़ार में एक गली में मकान था। यह तीन मंज़िल की हवेली थी। मकान के बीचों-बीच ज़ीना था और ज़ीने के दोनों ओर प्रत्येक छत पर दो-दो कमरे और एक-एक कोठरी थी। प्रत्येक मंज़िल पर कमरों के बीच में एक छोटा-सा आँगन था और ये आँगन लोहे के सींखचों से ढके हुए थे। इस प्रकार प्रकाश नीचे भूमि के आँगन तक आता था।

मकान पक्का था, बहुत साफ सुथरा और हवादार था। रामनारायण दिन के तीसरे पहर सन्तू को लेकर घर आया। रामनारायण की पत्नी लाजवन्ती ने सन्तू को देखा और स्वीकार कर लिया। उसने पूछ लिया "क्या नाम है तुम्हारा ?"

"सन्तू।"

"सन्तू ?"

"जी सन्तराम।"

"ठीक है। देखो, पहले स्नान करो। जाओ उस गुसलखाने में नहाकर दूसरे कपड़े पहन लो। ये कपड़ें बहुत मैले हैं। तुम इन कपड़ों से लल्ला को उठाओगे तो उसके भी कपड़े मैले कर दोगे।"

सन्तू देख रहा था कि सत्य ही लाला के बच्चों के कपड़े उससे बहुत उज्ज्वल और सुथरे थे।

लाज ने अपने कमरे में जा सन्दूक में से एक धोती और लाला का एक कुरता निकाल दिया। रामनारायण ने कुरता देखा तो कह दिया, "यह तो इसके घुटनों तक लटक जावेगा।"

"पहले इसको ये गन्दे कपड़े उतार लेने दीजिये। कल इसको इसके नाप के कपड़े बनवा दीजियेगा।"

सन्तू को अगले ही दिन तीन जोड़ी कपड़े बनवा दिये गये। एक टोपी और एक जूता भी ले दिया गया। सन्तू ने देखा कि इन नये कपड़ों में उसकी सूरत-शक्ल ही बदल गई है। लाला के गुसलखाने में दर्पण लगा था। उसमें उसने नये कपड़ों में अपने आपको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखा तो चकित रह गया। वह उन लड़कों से, जिनके साथ वह किले के बाहर मैदान में खेला करता था, विलक्षण और भला मालूम होने लगा था।

घर में बड़ा भाई राधाकृष्ण अपनी पत्नी के साथ रहता था। उसके कोई सन्तान नहीं थी। बड़ा भाई बड़े लाला के नाम से सम्बोधित किया जाता था और छोटा भाई छोटे लाला कहकर पुकारा जाता था। सब बड़े लाला की पत्नी को बड़ी माँ कह कर पुकारते थे। सन्तू के लिए भी राधाकृष्ण बड़े लाला और उसकी पत्नी बड़ी माँ हो गई। वह रामनारायण की पत्नी को छोटी माँ कहकर पुकारने लगा।

राधाकृष्ण ने अपदी पत्नी चन्दो बीबी को पहले ही दिन रात के समय कहा था, "रामनारायण एक और बला ले आया है। पहला उसकी बीवी का लौकेट लेकर भाग गया था। देखें, यह क्या गुल खिलाता है।"

चन्दो बीबी ने भी सन्तू को स्नानादि करने और नये कपड़े पहिनने के उपरान्त देखा था। उसको सन्तू एक भला लड़का ही समझ आया था। उसने कह दिया, "यह लड़का पहले नौकर से भिन्न मालूम होता है।"

"क्या भिन्नता देखी है तुमने ?"

"सभ्य है, सुशील है, एक घण्टे में राम के बच्चे से हिल-मिल गया है।"

"तो ये चोर न होने के लक्षण हैं ?"

"नहीं, इस पर भी ये विकसित मन के लक्षण हैं। मन में ही तो चोरी करने की भावना बनती है।"

"तुम बुद्धू की बुद्धू ही रहीं। चोरी तो कर ही वह सकता है जिसका मन उन्नत हो। बुद्धू तो चोरी कर सकते ही नहीं।"

"मैं तो भगवान भरोसे ही रहती हूँ। जो कुछ उसका होगा वह ले जायेगा।"

"यह तुम पर लाज के विचारों का प्रभाव हो गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान ! भगवान !! प्रायः अयोग्य और निर्धन ही ऐसा कहा करते हैं।"

चन्दो ऐसा नहीं समझती थी। उसको भगवान का आश्रय रखने वाले लोग अधिक चतुर समझ आते थे। परन्तु अपने पति को तो वह कह नहीं सकती थी। इस कारण चुप कर रह गई।

इसकी एक प्रतिक्रिया चन्दो बीबी के मन पर हुई। वह यह कि वह अपने अनुमान कि सन्तू एक भला लड़का है, की परीक्षा करने के लिये उसका भली भाँति निरीक्षण करने लगी। सन्तू बहुत सुबह उठता था और पूर्ण घर की सफाई करता था। चन्दो बीबी ने उसकी ईमानदारी की परीक्षा के लिये कई बार कुछ रेजगारी ऐसे स्थान पर रखी, जहाँ वह सफाई किया करता था। उसे यह देख कर बहुत प्रसन्नता हुई कि वह सफाई कर रेजगारी को फिर वैसे ही रख देता था जैसे वह पड़ी होती थी। कभी एक रुपया अथवा अठन्नी भी फेंक कर परीक्षा की गई।

चन्दो बीबी ने अपनी परीक्षा का परिणाम अपने पति को बताया। राधाकृष्ण को इस विवरण से भी सन्तोष नहीं हुआ। उसने कह दिया, "जिस दिन उसको अपने माता-पिता से मिलने जाना होगा, उस दिन सावधानी की आवश्यकता होगी।"

रविवार के दिन सन्तराम को आधे दिन की छुट्टी मिलने वाली थी। इस कारण वह उस दिन चार बजे प्रातःकाल जाग पड़ा और पूर्व इसके कि घर के लोग जागें, वह घर की सफाई कर स्नान कर जाने के लिये तैयार हो गया। रामनारायण सात बजे उठा था। उस समय सन्तराम धुले कपड़े, टोपी और जूता पहिन जाने के लिये तैयार खड़ा दिखाई दिया। रामनारायण ने सन्तराम को तैयार खड़े देख कर पूछ लिया, "जा रहे हो ?"

"जी।"

"भोजन करके जाना।"

सन्तू राजी हो गया तो रामनारायण ने पूछा, "कब तक लौटेंगे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तीसरे पहर आ जाऊँगा।"

"देखो, रविवार के दिन हमारा शाम का नाश्ता दुकान पर आता है। उसे लेकर वहाँ पहुँचा जाना।"

"जी पहुँचा दूँगा।"

एक सप्ताह के व्यवहार से रामनारायण सन्तू पर विश्वास करने लगा था। इससे वह आशा करता था कि यह लड़का उनके लिये सुखकारक होगा।

सन्तू बच्चों से खेलने लगा। लाज ने दस बजे तक भोजन तैयार कर लिया। सन्तू को सबसे पहले खिला कर विदा कर दिया गया। वह अभी गया ही था कि राधाकृष्ण अपने कमरे से निकल आया। वह अपने कमरे में खाना खाता हुआ रामनारायण और सन्तू की बात सुनता रहा था। उसने कमरे से निकलते ही रामनारायण से पूछ लिया, "राम! वह गया?"

"राम राम भैया! हाँ वह आधे दिन की छुट्टी लेकर चला गया है।"

"आज तुमको देखना चाहिए कि वह कुछ लेकर तो नहीं गया।"

"यदि वह कुछ ले गया होगा तो मैं उससे छीनने के लिये उसके पीछे भागने वाला नहीं।"

"परन्तु कोतवाली तो जाया जा सकता है।"

"हाँ, अगर कोई बहुत कीमती वस्तु ले गया हो तो। परन्तु लाज कहती है कि वह चोर नहीं है।"

"अभी इतनी जल्दी कुछ नहीं कहा जा सकता।"

इस समय लाज कमरे से निकली और घूँघट निकाले थोड़ा झुक कर पाय लागूं कर चली गई।

चन्दो बीबी भी कमरे से निकल आई और बोली, "राम, तुम्हारे भैया तो इस लड़के का विश्वास करते ही नहीं।"

राधाकृष्ण ने कह दिया, "कर भी कैसे सकता हूँ! गरीबी में पला लड़का और भिखारियों की बस्ती में रहता हुआ चोर न हो, यह सम्भव ही नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर भैया !" रामनारायण का कहना था, "किसी रईस का लड़का मेरे घर की सफाई करने के लिये तो आयेगा नहीं। नौकर रखना है तो किसी गरीब का लड़का ही रखना होगा।"

"तो ले लो मज़ा। एक बार पहले ले चुके हो। फिर लोगे।"

रामनारायण जानता था कि राधाकृष्ण सदा ग्राहकों को ठगने का यत्न करता रहता है। इस कारण उसको एक निर्धन पर सन्देह करने में कारण प्रतीत नहीं हो रहा था।

राधाकृष्ण ने भविष्यवाणी कर दी—"मेरा तो मन कह रहा है कि वह लौटेगा ही नहीं। जो कपड़े उसने पहन रखे हैं, वह उसके वेतन से अधिक के तो हैं ही।"

रामनारायण इस बात पर केवल मुस्करा दिया।

उस दिन लाज ने अपने पति को दुकान पर जाते समय कह दिया, "यदि सन्तू न आया तो तीसरे प्रहर का नाश्ता करने घर पर आ जाइयेगा।"

"बहुत कठिन है। परन्तु तुम चिन्ता किस लिए करती हो ? नहीं आऊँगा तो हम दोनों भाई बाजार से कुछ लेकर खा लेंगे। तुम बस अपने समय पर नाश्ता कर लेना।"

रविवार का दिन विशेष बिक्री का दिन होता था। सरकारी कार्यालयों, स्कूलों, कालिजों और अन्य कार्यालयों में छुट्टी होती थी। उनमें काम करने वाले कर्मचारी इस दिन सप्ताह भर के काम किया करते थे और चाँदनी चौक में भीड़-भाड़ रहती थी। इस दिन दोनों भाई दिन का भोजन कर ही घर से जाते थे और फिर रात के समय दुकान बन्द कर ही घर लौटा करते थे।

सन्तू रविवार को दिन के दस बजे घर पहुँचा। उसके माता-पिता खाना खा आराम कर रहे थे। मोहिनी देवी के साथ, रामी माँ की झोपड़ी में थी।

सन्तू अपनी झोंपड़ी में गया तो उसके माता-पिता जाग पड़े। "ओ सन्तू !" माँ ने पुत्र को गले लगाते हुए कहा और उसकी आँखों से टप-टप आँसू लुढ़कने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सुनाओ सन्तू ! किस प्रकार रहे इतने दिनों तक ?"

"बहुत मज़ा रहा बाबा ! काम तो करना पड़ता है, परन्तु मेहनत मज़दूरी का काम नहीं। ललाइन का एक बच्चा है। छः मास का होगा। बस उसको खेलाना पड़ता है। घर में चौका-बासन तथा सफाई के लिए एक और औरत आती है।"

सन्तू के बाद उसके माता-पिता की दृष्टि उसके कपड़ों पर गई। कपड़े साफ-सुथरे और सन्तू के नाप के ही थे। माँ ने पूछ लिया, "ये कपड़े तो तुमको पूरे आ रहे हैं।"

"हाँ, लाला ने साथ की दुकान के दर्जी को कह कर बनवा दिये हैं।"

"ये तुमने खुद ही धोये हैं ?"

"हाँ, तीन पोशाक बनवाई हैं। एक धोता हूँ, दूसरी पहनता हूँ। एक पड़ी रहती है।"

"सन्तू तो गोरा-गोरा हो रहा है।" मनकी ने भगतू से कहा।

"हाँ !"

"क्या खाने को मिलता है रे ?" भगतू ने पूछ लिया।

"नित्य साग-भाजी तथा दाल मिलती है। गेहूँ की रोटी और सफेद चावल होते हैं। साथ चटनी, अचार और कभी-कभी एकाध टुकड़ा मिठाई का मिल जाता है। वहाँ लाला के घर में पाँच बार खाते हैं। प्रातः दूध पीते हैं, कभी कभी मुझे भी आधा गिलास दे देते हैं। दोपहर को मैं दोनों लालाओं का भोजन लेकर दुकान पर जाता हूँ। तीसरे पहर ठंडाई बनती है और साथ में मठरी, समोसा, दालमोठ होती है। रात को प्रायः पूरी साग होता है। कभी हलुवा और कभी मिठाई होती है। जब-जब वे खाते हैं, मुझे भी देते हैं।

"नित्य स्नान करने को कहते हैं। स्नान करते समय साबुन तेल लगाने को देते हैं।"

इस समय पड़ोस के झोंपड़े में से रामी माँ और उसकी लड़की देवी तथा मोहिनी भी संतू की आवाज सुनकर उसको देखने के लिए आ गईं। रामी माँ ने मुस्कराते हुए सन्तू को देखा तो कह दिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सन्तू तो बाबू बन गया है।"

"हाँ रामी माँ ! लाला ने नाई से मेरे भी बाल कटवा दिए हैं। नाई ने मेरे बाल भी वैसे बना दिये हैं, जैसे लाला के लड़के, कुमार के बनाये हैं।"

"अच्छा, तो क्या खाओगे, रोटी बनाऊँ ?" मनकी ने पूछा।

"नहीं माँ ! भोजन तो कर आया हूँ। ललाइन कहती थीं कि चार बजे तक पहुँच जाऊँ, नहीं तो लल्ला रोयेगा।"

इस पर रामी माँ हँसने लगी। उस बस्ती में रामी माँ चौधराइन थी। सब औरतें उससे सब विषयों पर राय किया करती थीं। बच्चों के पैदा होने से उसके दाँत निकालने तक की सब बातों की वही राय दिया करती थी। कुछ भी कष्ट हो जाय, सर्वप्रथम उससे ही पूछा जाता था। बच्चा तो उसके घर में एक ही था, इस पर भी, उसके अपने आस-पास की बातों में रुचि लेते रहने से उसको बहुत बातों का ज्ञान हो गया था।

रामी माँ ने पूछा, "जब वह रोता है, तो क्या करते हो तुम ?"

"रामी माँ ! जैसे तुम सोहनी की मुन्नी को लोरी दिया करती हो, वैसे ही मैं उसको गोद में ले लोरी देने लगता हूँ। इससे वह चुप हो जाता है। मुझसे बहुत हिल-मिल गया है।"

भगतू और मनकी अपने बच्चे को साफ-सुथरा और नहा-धो चम-चम करता देख बहुत प्रसन्न हुए। चार रुपये तो कुछ अधिक वेतन नहीं था, परन्तु उसको सुखी और प्रसन्न देख वे भी सुख अनुभव करते थे।

जब सन्तू के आने की नवीनता समाप्त हो गई, तो रामी माँ अपनी झोपड़ी में चली गई। उसका घर वाला भी आज दोपहर के समय आ गया था। देवी और मोहिनी बाहर गई तो सन्तू भी उनके साथ बाहर चला आया। पेड़ के नीचे दोनों बैठी तो सन्तू की समझ में आया कि यदि वह भूमि पर बैठेगा तो उसके कपड़े मैले हो जायेंगे। आज ही वह धुले हुए कपड़े पहन कर आया था। इसलिए वह खड़ा रहा। देवी ने कहा, "सन्तू, बैठो न ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्तू की आँखें तो कह रही थी—तुम्हारा लँहगा पता नहीं कब का धुला हुआ है। उसका रंग भी गहरा है। परन्तु मेरा पायजामा और कुरता तो सफेद और धुले हुए हैं।

देवी समझ गई। उसने कह दिया, "कपड़ों के मैला होने से डरते हो ? लो मैं अपना लहँगा बिछा देती हूँ।" इतना कह उसने अपने लहँगे का एक छोर बिछा दिया।

अब तो सन्तू इंकार नहीं कर सका। वह उस पर बैठ गया। देवी ने कहा, "तुम तो सन्तू, अब बाबू बन गये हो ?"

"नहीं देवी ! बाबू तो बड़ी-बड़ी किताबें पढ़ा करते हैं। मेरे लाला का बड़ा भाई है न, उसको सब बड़े लाला कहते हैं। उसकी बीवी का भाई कभी-कभी आता है। वह पढ़ता है और बड़ी-बड़ी पोथियाँ लिये होता है। उसको सब बाबू कहते हैं।"

देवी विस्मय में सन्तू का मुख देखती रह गई। मोहिनी ने कह दिया, "सन्तू ! तुम नहीं पढ़ सकते क्या ?"

"मैं···।" सन्तू इसका उत्तर न दे सका। वह मुख देखता रह गया। मोहिनी सन्तू को बहुत ही विचित्र लड़का मानती थी। अपने गाँव में और वहाँ भी वह अपनी आयु से बड़ों को भी पीट चुका था। उस दिन वहाँ उस पेड़ के नीचे ही उस लड़के को, जो उससे ड्योढ़ा प्रतीत होता था, उसने पीटा था। इसके अतिरिक्त मोहिनी ने रामी माँ को भी सन्तू की प्रशंसा करते सुना था। इससे वह गर्व अनुभव करती थी।

मोहिनी ने कहा, "वह लड़का, जिसको तुमने पीटा था, एक दिन फिर आया था और तुमको पूछता था। रामी माँ ने अपनी झाड़ लेकर उसको पीटने के लिए दौड़ी तो वह भाग खड़ा हुआ।"

इस सूचना से सन्तू को क्रोध चढ़ आया। यदि वह लड़का इस समय सामने होता तो सन्तू उससे भिड़ जाता।

जब सूर्य पश्चिम की ओर ढलने लगा तो सन्तू उठा और अपने माता-पिता तथा रामी माँ को राम-राम कह कर चाँदनी चौक की ओर भाग गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह लाला के घर पहुँचा तो मुन्ना अभी सो रहा था। ललाइन ने दीवार से घड़ी में समय देखा। अभी चार बजने में पाँच मिनट शेष थे। इससे उसने सन्तोष की साँस ली।

उन दिनों दुकानों पर रविवार की छुट्टी नहीं होती थी। यह समझा जाता था कि रविवार के दिन अधिक बिक्री होती है। आस-पास के गाँव के लोग और नौकरी-पेशा, जिनको उस दिन छुट्टी होती थी, खरीद के लिए बाज़ार करने आते थे। ललाइन ने सन्तू से कहा, "ठीक वक्त पर आ गये हो। लालाजी आज नाश्ता दुकान पर ही करेंगे। तुम वहीं दे आओ।"

एक पेचदार ढकने वाले लोटे में सेर भर दूध और एक कटोर-दान में नमकीन, मठरी, समोसे, दालमोठ इत्यादि डाल कर उसे दे दिया गया। जब सन्तू जाने लगा तो बड़ी लालाइन भी ऊपर से आ गई और बोली, "बड़े लालाजी से कह देना कि उनके लिए भी नाश्ता इसी में है।"

सन्तू एक हाथ में दूध का लोटा और दूसरे में कटोरदान लिए हुए दुकान पर जा पहुँचा।

रामनारायण समान ले दुकान के भीतर अलमारियों के पीछे चला गया। वहाँ जा उसने अपने तथा अपने भाई के लिए सामान पृथक्-पृथक् कर दिया। कुछ थोड़ा-सा सन्तू के लिए भी एक बड़े कागज पर अलग रख दिया। वह स्वयं बाहर चला आया और आ कर राधाकृष्ण को भीतर नाश्ता करने के लिए भेज दिया।

सन्तू जब भी दुकान पर जाता था और उसको प्रतीक्षा करनी पड़ती थी, तो वह उस समय देखा करता था कि वहाँ क्या काम होता है। इनकी दुकान पर लोग सोने-चाँदी के पुराने आभूषण, पुराना तिल्ला गोटा किनारी बेचने के लिये आते थे। आज रविवार का दिन होने के कारण सरकारी नौकर अधिक आ रहे थे।

राधाकृष्ण भीतर नाश्ता कर रहा था। रामनारायण गद्दी पर बैठा हुआ एक बुढ़िया की पुरानी किनारी तोल रहा था। तोलने के बाद उसने किनारी को भली-भाँति देखा और मूल्य बताते हुए कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चार रुपये दस आने।"

बुढ़िया बोली, "दे दो।"

रामनारायण ने किनारी को संदूकची में रखा और उसमें से ही पैसे निकाल कर बुढ़िया को दे दिये। इस समय खुला पायजामा, कुरता पहने, सिर से नंगा एक आदमी आया और पूछने लगा, "बड़े लाला कहाँ हैं?"

"यहाँ हैं, बताओ।" वह आदमी कुछ परेशानी-सी अनुभव कर रहा था। इतने में एक सफेद पोश अपनी पत्नी और बच्चे को लेकर वहाँ पहुँच गया। उसने एक सोने की चूड़ी दिखाकर कहा, "इसका मोल लगा दीजिये।"

रामनारायण ने कसौटी पर चस लगाई और कह दिया, "पन्द्रह रुपये तोला की है।"

"कितना खोट होगा इसमें?"

"चार रत्ती भर।"

"पूरा दाम बताइये।"

रामनारायण ने चूड़ी तोली और कागज़ पर हिसाब लगाकर बताया, "बाईस रुपये तेरह आने।"

"आप देंगे?"

"हाँ।" रामनारायण अपने रजिस्टर में लिख इनसे हस्ताक्षर कराना चाहता था कि वह खुले पायजामे बाला आदमी उसको एक कागज़ की पुड़िया देते हुए बोला, "लाला! इसे रखो, मैं अभी थोड़ी देर में आता हूँ।"

रामनारायण ने उसे सिर से पाँव तक देखा। किन्तु कुछ समझ नहीं सका। उसने उससे कहा, "एक मिनट में लालाजी आ रहे हैं, ठहर जाओ।"

विवश हो वह आदमी पीछे हट कर खड़ा हो गया। सन्तू देख रहा था कि वह आदमी चंचल-सा हो रहा है। रामनारायण उस बाबू से हस्ताक्षर करा, बाईस रुपये तेरह आने देने लगा तो राधा-कृष्ण नाश्ता कर दुकान के भीतर से निकल आया। रामनारायण ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबू को रुपया दिया और नाश्ता करने के लिए भीतर चला गया।

राधाकृष्ण गद्दी पर बैठा तो वही सिर से नंगा, कुरता-पायजामा पहने हुए आदमी फिर आया और राधाकृष्ण के हाथ में कागज की पुड़िया देखकर कहने लगा, "लाला ! इसे अभी रख लो। मैं थोड़ी देर में आऊँगा।

लाला ने उसके चले जाने पर उस कागज़ को खोलकर देखा तो उसमें एक अँगूठी, जिसका नगीना बहुत चमक रहा था, दिखाई दी। लाला ने अँगूठी को बड़े गौर से देखा। हाथ पर तोल कर अनुमान लगाया और फिर सड़क पर इधर-उधर देख, उसने अँगूठी को लोहे की तिजोरी के अन्दर रख दिया।

यह सब कुछ अन्य आने वाले और बेचने वालों से विलक्षण था। सन्तू इस आदमी और अँगूठी को देख कर सोच रहा था कि यह क्या है और क्यों हैं ?

इतने में रामनारायण भी दूध पी बाहर आ गया। उसने सन्तू से कहा, "सन्तू ! यह तुम्हारे लिए रखा है खाकर बर्तन समेटो और घर चले जाओ।"

: ६ :

सन्तू को सोने के लिए, सबसे ऊपरी की मंज़िल पर, सीढ़ियों के एक कोने में छोटी-सी कोठरी मिली हुई थी। आज रात वह यहाँ सोने के लिए पहुँचा तो दोनों लाला मकान की छत पर टहलते हुए बात-चीत कर रहे थे।

"भैया!" रामनारायण कह रहा था, "यह चोरी का माल लेकर तो हम कभी भी फँस सकते हैं ?"

"परन्तु यहीं से तो पैसा पैदा होता है। इस अँगूठी मे से कम-से-कम दो-ढाई हज़ार बच जायेगा।"

"और यदि कहीं फँस गए तो लेने के देने पड़ जायेंगे।"

"तुम व्यर्थ में ही डरते हो। सारे बाज़ार में यही कुछ होता है, और हो रहा है।"

"पर भैया ! हम तो सत्य व्यवहार करते हैं। हमारी दूकान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की मशहूरी ही इस कारण है कि अनजान, अज्ञान कोई भी आये, सब की वस्तु का हमारे यहाँ उचित मूल्य लगता है।"

"यह मशहूरी तो इस प्रकार के काम पर पर्दा डालने के लिए है। हम सबसे कम आय करते हैं। कभी किसी स्थान पर घाटा भी हो जाता है। यदि इस प्रकार के काम न करते होते तो आज तक हमारा दीवाला निकल चुका होता।"

"नहीं भैया यह ठीक नहीं है। मुझे उस आदमी की सूरत-शक्ल पसन्द नहीं।"

इस पर राधाकृष्ण ने आगे कुछ नहीं कहा। सन्तू कान लगा कर दोनों की बातें सुन रहा था। उसको उस नंगे सिर वाले आदमी की बेचैनी का रहस्य पता चल गया। जब उसकी समझ में यह आ गया कि वह कोई चोर था तो उसको कँपकँपी हुई। उसके मन में राधाकृष्ण के लिए कुछ अधिक मान नहीं था और अब तो उसके प्रति घृणा का भाव जागृत हो गया था।

एकाएक राधाकृष्ण ने कह दिया, "तब तो हमको दुकान पर भी बँटवारा करना पड़ेगा। हमारा काम राम-खाता नहीं है। आखिर खर्चा बढ़ रहा है, यह सब आयेगा कहाँ से ?"

"तुम समझते हो कि यह सब कमाई हम कर रहे हैं ? नहीं भैया ! भगवान देता है और वह तो तब और भी अधिक देगा, जब हम चोरों से सम्बन्ध तोड़ लेंगे।"

"देखो राम ! चोरी की उसने। मैं न लेता तो उससे कोई और ले लेता। जो दो हज़ार मेरी तिजोरी में पड़ने वाला है, वह किसी और की तिजोरी में चला जाता।"

रामनारायण ने कह दिया, "मैं यह काम नहीं करूंगा। मुझे भगवान पर भरोसा है। मैं भूखा नहीं मरूँगा।"

"ठीक है, सोच लो। मैं तो समझता हूँ कि सर्राफ़े के काम में यह सब होता ही है।"

"भैया ! इसको घर में न रखना। आज रात ही कहीं निकाल दो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधाकृष्ण हँस पड़ा। उसने कह दिया, "यह पहला काम नहीं है राम ! पिताजी भी इस प्रकार करते रहते थे।"

दोनों भाई नीचे उतर गये। सन्तू के मन में बवण्डर उठने लगा था। छोटे लाला के लिए उसके मन में आदर का स्थान था।

बड़ी ललाइन बड़े लाला से भिन्न स्वभाव की थी। वह सन्तू से बहुत मीठा बोलती थी। वह उसे हमेशा बेटा कहकर पुकारा करती थी। उसके घर पर जिस दिन विशेष पकवान बनता था, अपने देवर के बच्चों को बुलाकर खिलाती रहती थी। सन्तू को भी उस अवसर पर उसका भाग मिल जाता था। छोटे लल्ला से, जिसको सन्तू से लाया करता था, वह बहुत प्यार करती थी। इससे सन्तू अपनी ललाइन के अपेक्षा बड़ी ललाइन के घर अधिक रहता था। कारण यह था कि बड़ी ललाइन का भाई बाबू भी सन्तू से अधिक मेल-जोल रखता था।

इस अँगूठी का गुल अगले दिन खिला। सन्तू प्रायः पाँच बजे उठ पड़ता था। आज उसको समय से पहले ही जगाया गया। वह जागा तो उसकी दृष्टि बड़ी ललाइन पर पड़ी। वह उसे धीरे-धीरे आवाज दे जगा रही थी।

"हाँ, बड़ी माँ !"

बड़ी ललाइन ने कहाँ, "जल्दी उठो। कुछ काम है।"

सन्तू उठकर खड़ा हो गया। ललाइन ने उसको एक डिबिया दी और कहा, "यह लो, इसे जेब में डाल लो और अपने पिता के झोंपड़े में चले जाओ। इसको वहाँ अपने पास संभाल कर रखना। यहाँ नहीं आना। तुमको दो महीने की छुट्टी है और उसका वेतन और खाने-पीने के लिए यह ले जाओ।" इतना कह उसने एक नोटों का बण्डल उसके हाथ में दे दिया।

सन्तू बितर-बितर ललाइन का मुख देख रहा था। उसने समझा कि लड़का बात समझा नहीं। इस कारण उसने बात स्पष्ट करते हुए कहा, "इस डिबिया में एक बहुत ही कीमती वस्तु है। पुलिस उसको लेने के लिए आ रही है। इसको लेकर भाग जाओ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब तुमको हम वापस बुलायेंगे तो इतना ही इनाम और देंगे।"

इस समय तक सन्तू को रात की बात, जो दोनों भाइयों के मध्य हुई थी, स्मरण हो आई। रामनारायण की बात कि इससे वे फँस सकते हैं और अब पुलिस के आने की बात सुन, वहाँ से भाग जाने के विषय पर विचार करने लगा। उसने पूछा, "छोटी माँ से पूछ लूं?"

"मैंने पूछ लिया है। जल्दी करो, बहुत कम समय है।"

सन्तू ने जूता पहना और धड़ाधड़ सीढ़ियाँ उतरता हुआ मकान के दरवाजे पर जा खड़ा हुआ। अभी तक डिबिया उसने हाथ में पकड़ रखी थी। अब उसे अपने कुरते की जेब में रख, वह गली से बाहर निकला और किनारी बाजार में जा खड़ा हुआ। इस प्रातःकाल के समय में बाजार सुनसान था, दुकानें बन्द थीं। कोई आने-जाने वाला दिखाई नहीं देता था। वह दरीबा की ओर चल पड़ा। जब वह दरीबा में पहुँचा तो कोई विरला स्त्री-पुरुष उसको यमुना-स्नान के लिए जाता दिखाई दिया। वहाँ से वह चाँदनी चौक की ओर चल पड़ा। इस समय उसको दो दर्जन पुलिस वाले तेजी से चलते हुए सामने से आते मिले। उनके साथ बड़ा लाला राधाकृष्ण भी था। सन्तू एक ओर हट कर दीवार के साथ लग कर खड़ा हो गया। वह पुलिस वालों को निकल जाने के लिये रास्ता देने खड़ा हो गया था।

यहाँ खड़े उसने राधाकृष्ण को पुलिस वालों के साथ नंगे सिर जाते देखा। राधाकृष्ण ने उसको देखा अथवा नहीं, वह नहीं जानता था।

जब पुलिस वाले निकल गये तो वह समझा कि लाला पकड़ा गया है और उसी अँगूठी की तलाश हो रही है। वह इतना समझ गया था कि दुकान की तलाशी हो चुकी है और घर की तलाशी होने जा रही है।

उसने देखा, पुलिस उसके मकान किनारी बाजार की ओर घूम गई है। वह वहीं खड़ा विचार कर रहा था कि क्या करे। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। वह समझता था कि उस पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा उसके झोंपड़े पर किसी को सन्देह नहीं हो सकता कि हजारों रुपये की वस्तु उसके पास वहाँ पड़ी होगी। केवल उसको बताना नहीं चाहिये। उसके मन में प्रश्न उत्पन्न हुआ था कि वह इस विषय में अपने बाबा को भी बताये अथवा नहीं।

वह मन-ही-मन विचार करता था, "उसको बताने से क्या लाभ होगा ?

यदि नहीं बतायेगा तो क्या कहेगा कि उसकी नौकरी छूट गई है ? किन्तु जब वह अपने अग्रिम वेतन के रुपये दिखायेगा तो बाबा समझेगा कि उसने चोरी की है। वह उसको पीटेगा और कान पकड़ कर लाला की दुकान पर ले जायेगा। इससे तो बात गुप्त नहीं रह सकेगी।

इस पर भी वह चोरी के माल को छिपा ले क्या ?

इस प्रकार वह कुछ भी निश्चय नहीं कर सका। इस समय तक वह यमुना के समीप तक पहुँच गया था। उसका अपना घर क्षण प्रति क्षण समीप आता जा रहा था।

निदान वह अपने झोंपड़े के बाहर पहुँच गया। इस समय तक भी वह निश्चय नहीं कर सका था कि क्या करे। सत्य बात बताये अथवा झूठ बोले। यदि झूठ बोले तो कितनी मात्रा में ?

इस समय भगतू घड़ा लिए पानी लेने नल की ओर जाने लगा तो सन्तू को वहाँ खड़ा देख वह स्तब्ध रह गया। उसने पूछा, "सन्तू है क्या ?"

"हाँ बाबा !"

"इस समय आये हो ?"

"हाँ बाबा ! अभी आकर खड़ा ही हुआ हूँ।"

"तो भीतर आओ।"

"बाबा, तुम पानी ले आओ।"

भगतू ने आवाज दे दी, "ओ मनकी ! सन्तू आया है।"

मनकी आँखें मलती हुई बाहर निकल आई। उसने सन्तू को भीतर बुला अपनी गुदड़ी में बैठा कर पूछा, "क्या है, सन्तू ! कैसे आये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो ?"

'माँ ! लाला पर मुसीबत पड़ गई है। उसको पुलिस पकड़ कर ले गई है। मुझे छुट्टी दे दी गई है।"

"क्यों ?"

"यह मुझे मालूम नहीं। ललाइन ने कहा है कि मेरी नौकरी छूट गई है और मैं जा सकता हूँ, सो मैं चला आया।"

"कुछ पैसे दिये हैं ?"

"कहती थी दो-चार दिन बाद आना, मिल जावेंगे। माँ वह रो रही थी। इस कारण मैंने जिद नहीं की।"

इससे माँ को सन्तोष हो गया। उसने कह दिया, "कुछ हानि नहीं हुई। किसी दूसरे स्थान पर काम मिल जायेगा।"

भगतू को जब यह किस्सा सुनाया गया तो उसको बहुत दुःख हुआ। पिछले दिन वह अपने लड़के को देख मन में बहुत मनसूबे बनाने लग गया था।

सन्तू को अपने अनायास ही असत्य बात बताने और सफलता-पूर्वक बहुत कुछ छिपाने पर आश्चर्य हुआ था। जब उसके माता-पिता मजदूरी करने चले गये तो उसके तथा मोहिनी के लिए बाजरे की खिचड़ी पका कर छोड़ गए। सन्तू ने खिचड़ी की काली-काली सूरत देखी तो खा नहीं सका। इस पर भी मध्याह्न तक जब भूख तेजी से लगी तो वह उसको ही खाने के लिए बैठ गया।

मध्याह्न के समय रामी माँ और देवी उसकी झोंपड़ी में आये। मोहिनी आज उसकी झोंपड़ी में नहीं गई थी। इसका कारण जानने के लिए वे दोनों आई थीं।

: १० :

रामी माँ ने जब सन्तू की बात जो उसने अपने माता-पिता को सुनाई थी, सुनी तो उसने पूछ लिया, "पुलिस क्यों पकड़ कर ले गई है लाला को ?"

सन्तू रामी माँ को सारी बात सच-सच बताने के लिए तैयार हो गया। वह मन में विचार करता था कि रामी माँ अवश्य ठीक राय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देगी। इस पर भी वह पूर्ण सत्य नहीं बता सका। उसने पूछ लिया, "रामी माँ ! मालिक की बात को छिपाना चाहिए अथवा बता देना चाहिए ?"

रामी माँ गम्भीर हो गई। कुछ क्षण विचार कर बोली, "तो तुम कुछ बात जानते हो ? क्या कोई बुरी बात है ?"

"अवश्य है, पुलिस पकड़ने के लिए जो आई थी।"

"देखो सन्तू ! हम लोग सत्य-झूठ, पाप-पुण्य, अच्छे-बुरे में भेद नहीं कर सकते। इस कारण जो कुछ तुम्हें पता हो, ज्यों-का-त्यों बता देना। उसमें न राई कम न राई अधिक बताना अथवा कहना।"

"तो अपने आप पुलिस में बताने के लिए चला जाऊँ ?"

"इसकी आवश्यकता नहीं। जब कोई पूछे तो बता देना।"

"देखो रामी माँ ! पुलिस के सामने न आने के लिए ही उन्होंने मुझे यहाँ भेजा है।"

"नौकरी से निकल दिया है क्या ?"

"नहीं, उन्होंने कहा है मुझे इस काल का वेतन मिलेगा।"

"तुम्हारा स्वयं पुलिस में जाना ठीक नहीं। एक बार देवी के पिता भी पुलिस में एक चोरी की सूचना देने के लिए गए थे। जहाँ वे काम करते थे, उस दुकान में चोरी हो गई थी। इनको कुछ पता था। ये बताने चले गये। पुलिस वालों ने इनको ही पकड़ लिया। पन्द्रह दिन हवालात में रखा और इस काल में तीन बार खूब पीटा। ये बेचारे तो कुछ अधिक जानते नहीं थे। कुछ बता नहीं सके। पुलिस ने तो छोड़ दिया, परन्तु चोरों के वकील ने कई बार तो इनको कचहरी में बुलाया, इनकी साक्षी कराई और फिर इनके ऊपर ही चोरी करने का अपराध लगाया। बहुत कठिनाई से वे बचे, परन्तु वहाँ, से नौकरी छूट गई।

"देखो बेटा सन्तू ? चोरी करना पाप है। परन्तु जिसका अन्न खाया हो, उसके विरुद्ध कुछ कहना भी तो पाप है।"

इस बात ने सन्तू की आत्मा को शान्ति प्रदान की। फिर रामी माँ ने कह दिया—"कबीरा तेरी झोंपड़ी, गलकटियन के पास। जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करनगे सो भरनगे, तू क्यों भया उदास !"

सन्तू ने वह डिबिया, जो उसको बड़ी ललाइन ने दी थी, बिना किसी को उसके विषय में कुछ कहे, अपनी झोंपड़ी के सामने के पेड़ की जड़ में, एक गढ़ा खोदकर दबा दी। यह उसने तब किया, जब रामी माँ अपनी बेटी और मोहिनी को लेकर वहाँ से चली गई थी।

सन्तू ने जेब के रुपये भी निकाल कर गिने। दस-दस रुपये के दस नोट थे। अभी तक वह यह नहीं विचार कर सका था कि इन रुपयों को कहाँ छिपाया जाए ?

दिन पर दिन व्यतीत होने लगे। सन्तू को देवी के पिता का पुलिस द्वारा पीटा जाना, जब भी स्मरण होता, तो वह भयभीत हो जाता था। वह दुकान की ओर जाने का भी साहस नहीं कर सका। कुछ दिन व्यतीत होने पर भगतू ने उससे कहा, "बेटा ! जाकर पता करना कि तुम्हारे लाला छूटे अथवा नहीं। यह भी पता करना कि वे तुम्हारा वेतन देंगे अथवा तुम्हें नौकरी पर रख लेंगे ?"

"बाबा ! यदि वे फिर नौकर रख लें तो क्या मैं नौकरी कर लूँ ?"

"हाँ, मैं समझता हूँ कि इसमें तुम्हारा भला है।"

इससे सन्तू ने आज चाँदनी चौक जाने का साहस किया। उसने दूर से ही दुकान को देखा। वह खुली थी। इस पर साहस कर वह कुछ और आगे बढ़ गया। वह दुकान के सामने जा खड़ा हुआ। रामनारायण ने देखा तो माथे पर त्यौरी चढ़ा कर पूछा, "अबे सन्तू ! कहाँ चला गया था ?"

सन्तू का विचार था कि छोटे लाला को पता होना चाहिये कि वह कहाँ और क्यों गया है। इससे वह दुकान पर चढ़ जूता उतार, लालाजी के सम्मुख बैठ कर बोला, "तो आपको बड़ी माँ ने बताया नहीं ?"

'क्या बताया नहीं ?"

"यही कि मैं कहाँ चला गया था ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो उनको बता कर गये थे ?"

"उन्होंने ही भेजा था। मैंने कहा था कि छोटी माँ को बता कर जाता हूँ तो वे कहने लगीं कि उन्होंने उनसे पूछ लिया है। इस कारण मैं बिना छोटी माँ को बताये चला गया।"

"अब कहाँ नौकरी करते हो ?"

"आपकी ही। मुझे बड़ी माँ ने कहा था कि मेरी नौकरी छूटेगी नहीं।"

"अबे गधे ! तू मेरा नौकर था, मुझे बताये बिना तुम्हें कहीं नहीं जाना चाहिये था। अब तुम जानो और तुम्हारी बड़ी माँ जानें, मैं क्यों वेतन दूँगा ?"

"उन्होंने कई महीने का वेतन तो पहले ही दे दिया था।" इतना कह सन्तू ने जेब से नोटों की गड्डी निकाल कर दिखा दी।

रामनारायण ने नोट हाथ में पकड़ कर गिने और विस्मय में वह सन्तू का मुख देखने लगा। इस पर सन्तू ने उसके घर से भाग कर जाने का पूर्ण वृत्तान्त बता दिया।

"वह डिबिया कहाँ है ?"

"मैंने एक जगह छिपा कर रखी है।"

"अपने बाप के पास ?"

"जी नहीं, मैंने उनको यह नहीं बताया। पुलिस में देने के लिए जाने का भी विचार नहीं किया।"

"क्यों ?"

"हमारे पड़ोस में एक रामी माँ रहती है। वह बहुत ही समझदार है। उससे मैंने पूछा था कि मुझे पुलिस को बताना चाहिये अथवा नहीं। वह बोली, हम न्यायकर्त्ता नहीं हैं। हमें अपने मालिक के कामों पर कुछ कहने की आवश्यकता नहीं।"

"तो डिबिया कहाँ रखी है ?"

"एक स्थान पर भूमि में गाड़ रखी है।"

"वहाँ से कोई निकाल ले तो ?"

"कोई जानता नहीं, किसी ने गाड़ते देखा नहीं। इसलिए मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझता हूँ कि कोई नहीं निकाल सकता।"

रामनारायण ने कुछ काल तक विचार कर कहा, "तुम जानो तुम्हारी बड़ी माँ जाने। उनसे पूछ लेना कि वे अपनी डिबिया लेंगी कि नहीं। यह लो अपने रुपये भी सँभालो।"

"लालाजी ! इन रुपयों का मैं क्या करूँगा ? मुझे तो अपना वेतन चाहिये।"

इस पर रामनारायण फिर कुछ विचार करने लगा। वह नहीं जानता था कि इस विषय में क्या करे। उस रात जब उसने कहा था "भैया ! इसे रात ही को कहीं निकाल दो, घर पर न रखना।" तब यह समझ नहीं सका था कि उसका भाई उस चोरी के माल को कहाँ छिपा कर रखेगा। अब यह देख कि उसके भाई से तो उसकी भाभी ही अधिक चतुर निकली है, वह विचार करने लगा कि इसमें उसका क्या कर्त्तव्य है ?

: ११ :

राधाकृष्ण को यह पता नहीं था कि पुलिस को इतनी जल्दी चोरी का पता चल जायेगा और वह दिन चढ़ने से पूर्व ही उस अँगूठी का सुराग पा जावेगी। वह उस रात रामनारायण से बातचीत कर अपने कमरे में गया और उसने अँगूठी को निकाल, उसमें से नगीना पृथक् कर दिया। अँगूठी के सोने के ढाँचे को वह गला देना चाहता था। किन्तु फिर कुछ विचार कर उसने उसे अपनी जेब में रख लिया। और नगीना, जो दस कैरट का हीरा था, एक पीतल की डिबिया में रख उसने अपनी पत्नी को दे दिया। उसने कहा, "अभी रखो, सुबह लेता जाऊँगा।"

परन्तु पुलिस तो रात को ही आ गई। एक कॉन्स्टेबल ने रात के दो बजे ही दरवाजा खटखटाया। राधाकृष्ण नीचे उतरा तो पकड़ लिया गया। उसको कहा गया कि दुकान की तलाशी होगी। वह चल पड़ा। बड़ी ललाइन ने अपने पति को पुलिस के साथ जाते देखा तो वह समझ गई। उसको रात वाली डिबिया का स्मरण हो आया। उसको विश्वास हो रहा था कि यदि वह हीरा दुकान पर नहीं मिला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो घर पर खोज होगी और अगर घर से निकल आया तो चोरी पकड़ी जाने के साथ-साथ चोर भी पकड़ा जायेगा। इस कारण वह विचार करने लगी कि इसको कहाँ छुपाया जाए।

बारी-बारी से सब स्थानों का, जहाँ वह उस समय रखा जा सकता था, विचार करने पर उसको कोई भी स्थान सुरक्षित नहीं जँचा। इस समय उसको सन्तू का स्मरण हो आया। उसको विदित नहीं था कि सन्तू को उस चोरी के माल के विषय में कुछ जानकारी है। इस कारण वह समझी कि उनको बिना बताये माल रखने वाला बनाया जा सकता है। अतः वह डिबिया ले उसके कमरे में जा पहुँची।

इस प्रकार वह सन्तू को पुलिस के आने से केवल पाँच मिनट पूर्व ही वहाँ से निकाल पाई थी। इस कारण जब पुलिस घर पर पहुँची तो उसने एक प्रकार से सुख की साँस ली। इस समय तक एक दुर्घटना हो चुकी थी। दुकान की तलाशी लेने से पूर्व राधाकृष्ण की तलाशी ली गई, तो उसकी जेब में से अँगूठी का ढाँचा निकल आया। वह पुलिस ने अपने अधिकार में ले लिया। और अब हीरे की खोज होने लगी। दो घण्टे तक दुकान की तलाशी होती रही, किन्तु हीरा न मिला। इस कारण पुलिस राधाकृष्ण की घर की तलाशी लेने के लिए चल पड़ी।

घर की तलाशी होने लगी तो रामनारायण को पता चला कि पुलिस तो रात के दो बजे ही आ गई थी, परन्तु उसको जगाया नहीं गया। पूर्ण घर की तलाशी ली गई, किन्तु हीरा फिर भी नहीं मिला।

जब रामनारायण से पूछा गया तो रामानारायण ने इस विषय में अपनी अनभिज्ञता ही प्रकट की। राधाकृष्ण हवालात में भेज दिया गया। साथ ही रामनारायण को दस बजे कोतवाली में उपस्थित होने के लिए कहा गया।

कोतवाली में जाकर रामनारायण को पता चला कि अँगूठी बेचने वाला हथकड़ियों में बँधा पड़ा है। उसको दोनों भाइयों को पहचानने के लिये वहाँ लाया गया था।

रामनारायण को विदित हुआ कि वह आदमी बड़े ठाट की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोठी में खानसामा है और जो अँगूठी चुराई गई है वह लाट साहब की पत्नी की है। वह अँगूठी बम्बई के एक जौहरी से दस हजार रुपये में खरीदी गई थी।

पिछले दिन अब्दुल्ला खानसामा किसी काम से 'हर ऐक्सेलैंसी' के सोने वाले कमरे में गया था और उसके वहाँ जाने के पाँच मिनट बाद ही अँगूठी गुम पाई गई। वह सोने के पलंग के पास एक तिपाई पर रखी हुई थी।

तुरन्त अब्दुल्ला की खोज आरम्भ हुई। और जब वह नहीं मिला तो पुलिस में रिपोर्ट कर दी। अब्दुल्ला रात को आठ बजे कोठी में लौटा तो पकड़ लिया गया। जब पुलिस ने उसे यातनाएँ देनी आरम्भ कीं तो वह बक गया और उसने उस दुकान का पता दे दिया, जहाँ उसने अँगूठी दी थी। उसने बताया था कि दुकान पर दो भाई बैठते हैं, छोटा भाई तो ऐसा माल नहीं लेता, बड़े भाई को वह अँगूठी दे आया है। बड़े भाई ने अभी मूल्य नहीं दिया है।

इस प्रकार बयान लिख मैजिस्ट्रेट से तलाशी की आज्ञा ले, पुलिस रात के दो बजे अब्दुल्ला को साथ लेकर राधाकृष्ण की दुकान पर जा पहुँची। अब्दुल्ला से दुकान का नाम तथा उसके घर का पता पूछ राधाकृष्ण को दुकान पर बुला लिया गया।

अँगूठी का ढाँचा तो लाला जी की जेब से निकला, परन्तु हीरा न तो जेब से न दुकान से और न ही घर से मिला। अब्दुल्ला ने बताया कि उसने उसी लाला को अँगूठी दी थी।

राधाकृष्ण ने पुलिस में बयान दिया कि यह आदमी केवल अँगूठी का ढाँचा बेचने ही मेरी दुकान पर आया था। मैंने इससे पूछा था, कि इसका नगीना कहाँ है? इसने कहा कि वह तो बिल्लौर का टुकड़ा था। इसने फेंक दिया है। मुझे इसने यह भी नहीं बताया था कि यह उस अँगूठी को कहीं से चुरा कर लाया है। मैं इसके नगीने के विषय में कुछ नहीं जानता।"

थानेदार ने पूछा, "इसकी खरीद रजिस्टर में क्यों नहीं लिखी गई?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह खरीदी ही नहीं थी। मैंने उसको कहा था कि वह बिल्लौर का टुकड़ा ले आये तो दाम लगाऊँगा। मेरा विचार था कि दस-बीस रुपये का तो वह भी जरूर होगा। इसने दिन के समय लाने का वचन दिया था। इसी कारण मैंने वह ढाँचा अभी तक अपनी जेब में ही रखा था। इसको चस लगा कर भी नहीं देखी।"

"यह पहले भी कभी कुछ बेचने आया है ?"

"हाँ, एकाध बार पहले चाँदी के कुछ आभूषण लाया था, जिन्हें यह अपनी पत्नी के बताता था।"

रामनारायण के भी बयान हुए। उसने कहा, "मैं इस आदमी को नहीं जानता। मैंने इसको पहले कभी नहीं देखा।

"हमारी दुकान साझे में है। परन्तु हम पृथक्-पृथक् रहते हैं। हम दुकान में बराबर के पत्तीदार हैं। दुकान पर सब माल की खरीद और बिक्री लिखी जाती है। मुझको भाई ने कोई अँगूठी नहीं दिखाई। मैं खरीद-फरोख्त का हिसाब रजिस्टर में लिखता हूँ। यह अँगूठी दुकान के लिये खरीदी जाती तो लिखाई जाती।"

इस पर भी पुलिस ने राधाकृष्ण को नहीं छोड़ा। मैजिस्ट्रेट के सम्मुख राधाकृष्ण को उपस्थित किया गया तो उसने पुलिस को चार दिन का रिमाण्ड दे दिया। चौथे दिन मैजिस्ट्रेट ने पुलिस से पूछ लिया, "चोर के बयान पर किसी भले घर के आदमी को पकड़ लेना तभी ठीक होता है, जब कोई प्रमाण मिल जाय। प्रमाण इस बात का होना चाहिए कि दुकानदार जानता था कि अँगूठी का ढाँचा चोरी का है। यह कैसे जान सकता था ? इसलिए इसकी जाँच के लिए उसने अंगूठी खरीदी नहीं, केवल रख ली थी।"

पुलिस ने बहुत कहा, परन्तु दस हजार की जमानत पर राधाकृष्ण को पुलिस की जाँच तक के लिए छोड़ दिया गया। जमानत हो गई और राधाकृष्ण शुक्रवार सायंकाल घर आ गया।

शुक्रवार प्रातःकाल ही सन्तू दुकान पर आया था और रामनारायण ने उसको अपनी भावज के पास भेज दिया।

सन्तू जब ललाइन के सामने उपस्थित हुआ तो उससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूछा, "अभी क्यों आये हो ?"

"मैं यह पता करने के लिए आया था कि अब क्या करना चाहिए ?"

"देखो सन्तू ! कल किसी समय आना। आशा है बड़े लालाजी आ जायेंगे और फिर वे ही बतायेंगे कि तुमको क्या करना चाहिये। वह तुमको भारी इनाम भी देंगे। लेकिन वह चीज कहाँ रखी है तुमने ?"

"एक स्थान पर भूमि में गाड़ कर रख दी है।"

"तो भाग जाओ। उस जगह की रखवाली करना। वह डिबिया गुम नहीं होनी चाहिए।"

रामनारायण के बच्चों ने सन्तू को आते हुए देख लिया था। रामनारायण का बड़ा लड़का तो स्कूल चला गया था। लड़की, जो तीन वर्ष की थी, उसको आया देख हल्ला करने लगी—"सन्तू आया, सन्तू आया।"

रामनारायण की पत्नी रसोई घर में थी। आवाज़ सुन वह बाहर चली आई। लड़की ने बताया—"वह बड़ी माँ के कमरे में गया है।" रामनारायण की पत्नी वहाँ जा पहुँची। अपनी जेठानी और सन्तू की बातें सुन उसको विदित हो गया कि चोरी के विषय में सन्तू का भी कुछ भाग है। जब सन्तू चला गया तो जेठानी ने देवरानी से सब बातें कह दीं।

सब वृत्तान्त सुन लाजवन्ती ने पूछ लिया, "तो सन्तू को पता था कि वह चोरी की वस्तु है ?"

"उसको सन्देह तो हो गया होगा। जिस प्रकार मैंने उसको उस दिन भगाया था और वह कह रहा है, उसने लाला जी को पुलिस के साथ आते देखा था, वह समझ तो गया होगा। आज वह यह पूछने के लिए आया था कि क्या वह उस वस्तु को ले आये ? साथ ही वह कह रहा था कि जो रुपया मैंने उसको दिया था, उसे वह सुरेश के पिताजी के पास जमा करा आया है। कहता था कि उसको केवल वेतन चाहिए। वेतन से अधिक लेगा तो वह हराम की कमाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगी।"

"तो फिर तुमने उसको क्या कहा है ?"

"मैंने तो उसे कल आने के लिये कहा है।"

लाजवन्ती मन में सन्तू के चरित्र का अनुमान लगा रही थी। इस समय रामनारायण दुकान से आ गया। उसने पूछ लिया, "भोजन तैयार है क्या ? आज भैया की पेशी है।"

भोजन के समय लाजवन्ती ने जेठानी के साथ हुए वार्तालाप का विवरण सुना दिया। इस पर रामनारायण ने कहा, "सन्तू आज दुकान पर भी आया था और उसने यह सब मुझे बताया है। वह सौ रुपया मुझे दे गया है।"

"बहुत ही विचित्र लड़का है !"

"हाँ, अपने ढंग का ईमानदार है। मुझे उसकी बातों से विश्वास हो गया है कि वह जानता था कि उस डिबिया में चोरी का कीमती माल है। इस पर भी उसने न तो अपने माता-पिता को इस विषय में बताया, न ही उसकी चोरी कर लेने की इच्छा प्रतीत होती है। पाँच दिन तक उसकी जेब में सौ रुपया पड़ा रहा। उसको भी उसने छुआ नहीं है।

"वह पुलिस में रिपोर्ट करने भी नहीं गया। उसने अपनी एक पड़ोसिन से पूछा था कि वह अपने मालिक का भेद पुलिस को बताये अथवा नहीं। उसकी पड़ोसिन ने उसको न बताने की सलाह दी है। किन्तु सन्तू ने उस पड़ोसिन को भी यह नहीं बताया कि चोरी का माल उसके पास है।"

"बहुत ही चतुर प्रतीत होता है।"

"यह तो है ही। साथ ही उसमें नैसर्गिक ईमानदारी भी है।"

"वह कल आयेगा। जेठानीजी का विचार है कि जेठजी आज छूट जायेंगे। अब बताइये, सन्तू को रखना है अथवा नहीं ?"

"उसका क्या दोष है ? वह अभी बच्चा है। उसको कानून की लम्बी-चौड़ी बातें विदित नहीं। उसको समझा देंगे तो ऐसी भूल नहीं करेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

: १ :

चन्दोबीबी के माता-पिता दिल्ली के ही रहने वाले थे। उसके पिता दिल्ली में बहुत बड़ी आढ़त की दुकान करते थे। नाम था लाला बनवारी लाल। इनकी नगर में बहुत मान-प्रतिष्ठा थी और दिल्ली के बड़े-बड़े अधिकारियों से मेल-जोल था।

जब पुलिस राधाकृष्ण के घर की तलाशी लेकर और राधा-कृष्ण को साथ लेकर कोतवाली लौट गई तो चन्दोबीबी ने कपड़े पहिने और सीधी अपने पिता के घर जा पहुँची। उसने उतनी बात ही बताई जितनी वह जानती थी और जितनी वह अपने पति की कम से कम निन्दा कर बता सकती थी। उसने कहा, "पिताजी! रात वे कह रहे थे कि एक आदमी, एक बिना नगीने की अँगूठी लेकर आया था और उसे बेचना चाहता था। लाला जी को सन्देह हुआ कि यह चोर है। उन्होंने उसका नगीना भी माँगा। उस आदमी ने कहा कि वह अगले दिन नगीना ले आयेगा। वह साधारण काँच है। इस पर लाला जी ने वह अंगूठी अपनी जेब में रख ली। उसकी खरीद नहीं की थी। उसका कुछ भी दाम नहीं दिया था। अकस्मात् रात पुलिस आई और दुकान तथा घर की तलाशी लेने लगी। लाला जी की जेब से वह बिना नगीने की अँगूठी निकल आई। और तो कुछ निकला नहीं और पूलिस उनको पकड़कर थाने ले गई है।"

चन्दोबीबी ने अँगूठी के नगीने के विषय में तथा उसके छिपाने में अपने भाग की बात नहीं बताई।

बनवारी लाल एक ठेठ व्यापारी था। वह एक ऐसे वकील को बुला राय करने लगा जो प्रायः चोरों के मुकद्दमे किया करता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले दिन तो कुछ नहीं हो सका। पुलिस को रिमाण्ड दे दिया गया। इधर बनवारी लाल को चार दिन का अवसर मिल गया। उसने मिस्टर नवलकिशोर मैजिस्ट्रेट का परिचय प्राप्त किया। इसके सम्मुख ही राधाकृष्ण को उपस्थित किया गया था।

नवलकिशोर का दामाद शम्भूनाथ, घटनावश बनवारी के लड़के केदारनाथ का मौसियासाला निकल आया। केदारनाथ अपनी पत्नी को लेकर उससे मिला। शम्भूनाथ ने स्पष्ट कह दिया, "बिना मुकद्दमा सुने तो लाला छोड़े नहीं जा सकते।"

"परन्तु मैं उनको छुड़ाने के लिए नहीं कह रहा। अभी तक लाला जी के विरुद्ध यह तो पता चला नहीं कि वे जानते थे कि माल चोरी का है। साथ ही उन्होंने अभी खरीद मुकम्मल नहीं की थी। माल अभी आया ही नहीं था। ऐसी अवस्था में हम तो यह चाहते हैं कि पुलिस और रिमाण्ड माँग ले तो लालाजी की जमानत हो जानी चाहिए।"

"परन्तु जमानत बहुत बड़ी होगी।"

"लाखों की भी हो तो हम दे देंगे।"

"इतनी की मैं सिफारिश कर दूँगा।" शम्भूनाथ ने कहा और केदारनाथ शम्भूनाथ को लेकर अगले दिन मैजिस्ट्रेट नवलकिशोर के घर जा पहुँचा। नवलकिशोर तो इतनी भी बात मानने के लिए तैयार नहीं होता था। उसका कहना था कि बड़े लाट की बीवी की अँगूठी के मुआमले में वह किंचिन्मात्र भी ढिलाई नहीं कर सकता।

केदारनाथ एक योग्य वकील था। उसने कह दिया, "पिताजी! बड़े लाट के घर किसी ने चोरी की, क्या यह पर्याप्त कारण है कि दिल्ली नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को तंग किया जाए?"

"बरखुरदार!" नवलकिशोर ने कह दिया, "उस प्रतिष्ठित की जेब में चोरी हुई वस्तु का एक भाग जो निकल आया है।"

अब शम्भूनाथ ने कह दिया, "हम लालाजी को छोड़ देने के लिए नहीं कह रहे। मुकदमा हो, मुलज़िम पकड़ा जावे। अँगूठी के नगीने की खोज की जाय, परन्तु इस खोज और मुकद्दमे के काल में लालाजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को जमानत पर छोड़ दिया जाये।"

"शम्भूनाथ जी ! ऐसा करने के लिए भी बड़े अफसर मुझसे अप्रसन्न हो जायेंगे। परन्तु जब तुम कहते हो तो मैं किसी बड़ी जमानत पर राधाकृष्ण को छोड़ दूँगा। और हाँ, यदि तब तक पुलिस ने उसके विरुद्ध कोई और प्रमाण उपस्थित कर दिया तो मेरे लिये बहुत कठिन हो जायेगा।"

शम्भूनाथ ने इसको भी गनीमत समझा।

उसने पूछ लिया, "आप इस मुआमले में कितनी बड़ी जमानत मुनासिब समझते हैं ?"

"दस हजार रुपये दाम की अँगूठी कही जाती है। इससे काम की जमानत तो हो सकती ही नहीं।"

"तो हम इतनी बड़ी जमानत का वहाँ इन्तज़ाम रखेंगे।" केदारनाथ ने कह दिया।

केदारनाथ तो पचास हजार की जमानत की आशा करता था।

शेष पुलिस से मिलकर लाला के खाने-पीने तथा उसके पिटाई न होने का प्रबन्ध करना था। उसमें कुछ अधिक कठिनाई नही हुई। लगभग एक सौ रुपया नित्य का खर्चा हो रहा था और लाला जी हवालात में ससुराल में रहने के समान सुखपूर्वक रहते रहे। इस काल में चन्दोबीबी और रामनारायण उससे नित्य मिलते रहे। इस पर भी राधाकृष्ण से किसी प्रकार की अँगूठी के सम्बन्ध की बात नहीं हुई। केवल सुख-समाचार ही लिया-दिया जाता रहा।

चन्दोबीबी उस सब प्रबन्ध से परिचित थी जो उसका भाई केदारनाथ मैजिस्ट्रेट से कर आया था। इधर तहकीकात पर लगे पुलिस के अधिकारी से यह जानकर सन्तोष अनुभव किया जा रहा था कि उस नगीने का अभी तक कोई सुराग नहीं लगा था। पुलिस का विचार था कि अब्दुल्ला खानसामे ने नगीना कहीं पृथक् छिपा कर रखा हुआ है और केवल लाला की ओट लेने के लिये अँगूठी का ढाँचा उसके पास बेचने के लिये ले गया था।

पीटने पर अब्दुल्ला यही कह रहा था कि उसने अँगूठी सालम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही लाला को दी थी। इससे जाँच आगे चल नहीं रही थी।

चार दिन के उपरान्त पुलिस ने पुनः रिमाण्ड के लिये यत्न किया तो मैजिस्ट्रेट ने चोरी के प्रमाण के बिना इस प्रकार नगर के किसी धनी मानी व्यक्ति को हवालात में बन्द रखने से इन्कार कर दिया।

पुलिस के पास चोरी का माल लाला के पास होने का सन्देह ही था, परन्तु वह बरामद नहीं हुआ था। साथ ही पुलिस के वकील की मुट्ठी गरम कर दी गई थी। इस सब प्रयास पर एक हज़ार रुपये के लगभग व्यय हो चुका था। परिणामस्वरूप राधाकृष्ण उस दिन जमानत पर घर आ गया।

वह दुकान पर गया तो रामनारायण ने अपने भाई को यह कह दिया, "भैया ! अभी तुमको दुकान पर नहीं आना चाहिये।"

"किस लिये ?"

"बाजार में बहुत मशहूरी जो हो रही है।"

"परन्तु क्या कुछ मेरे विरुद्ध सिद्ध हो गया है ?"

"पर भैया ! बाजार में सब विश्वास से कहते हैं कि आपने चोरी का माल खरीदा है। आपकी अनुपस्थिति में आस-पास के सब दुकानदार यही बुरा-भला कहते सुने गये हैं कि बड़ी सच्ची दुकान के चलाने वाले बन रहे थे; सौ दिन चोर का तो एक दिन साधु का भी होता है। अब देखेंगे दुकान कैसे चलती है।"

राधाकृष्ण ने कह दिया, "मैं तो यह समझता हूँ कि यदि मैं दुकान पर न बैठूँगा तो लोगों का सन्देह विश्वास में बदल जायेगा। बैठने से तो मैं सन्देह को दूर करने में सफल हो सकूंगा।"

"तो ठीक है, आप बैठिये और मैं चलता हूँ।"

"क्यों ?"

"मैं अब आपके साथ दुकान नहीं करूंगा।"

"दुकान में भी बंटवारा होगा ?"

"भैया ! यह आपने ही उस रात मकान की छत पर हो रही बातों में कहा था। मैं भी यही ठीक समझता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधाकृष्ण भौंचक्का हो मुख देखता रह गया। एक बार तो उसको क्रोध चढ़ आया और वह कहने ही वाला था, "निकल जाओ, यहाँ से।" परन्तु मुकद्मे में किसी प्रकार की पेचीदगी हो जाने के भय से वह चुपचाप रामनारायण का मुख देखता रहा।

कुछ विचार कर वह उठा और जूता पहन दुकान से बाहर हो बोला, "मैं तो पहले ही घर जाने वाला था। जरा यहाँ बैठ बाजार वालों के दिमाग में यह बैठाना चाहता था कि मैं छूट आया हूँ। अच्छा, अभी तुम बैठो। रात घर पर केदार वगैरह के सामने बात करेंगे।

वास्तव में राधाकृष्ण उत्सुक था यह जानने के लिये कि वह हीरा जो अँगूठी से निकाल डिबिया में रखा था, कहाँ है वह चकित था कि वह पुलिस वालों को मिला क्यों नहीं। इस रहस्य को जानने के लिये वह चन्दोबीबी से मिलना चाहता था।

यह मुख्य कारण था कि वह अकेला ही घर की ओर चल पड़ा। घर पर उसके श्वसुर बनवारी लाल और उसका साला केदारनाथ पहुँचे हुए थे। वे दोनों कहचरी गये थे और राधाकृष्ण की जमानत के कागज दाखल कर सीधे चन्दोबीबी को कचहरी की बात बताने के लिये अपनी घोड़ा गाड़ी में चले आये थे। राधाकृष्ण एक भाड़े की गाड़ी में रामनारायण के साथ दुकान पर चला गया था।

बनवारी लाल और केदारनाथ अभी बैठे ही थे कि राधाकृष्ण घर पहुँच गया। बनवारी लाल ने कहा, "बेटा! तुमको दुकान पर बैठना चाहिये था।"

"मेरा भी यही विचार था, परन्तु रामनारायण इसमें दुकान की बदनामी समझता है।"

"भला यह किस तरह?"

"मैं चाहता हूँ कि इस मुकद्मे में क्या करना चाहिये इस पर विचार-विनिमय आपके घर पर हो।" राधाकृष्ण ने बात बदलते हुए कहा।

"हम समझते हैं कि यहाँ पर होना चाहिये। मैंने फकीरचन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैरिस्टर से बात की है। वह कल सायंकाल चार बजे अपनी बैठक में मिलेगा।"

"मैं मुकद्दमे की बात रामनारायण के सामने करना नहीं चाहता।"

"और हम उसके और चन्दोबीबी के सामने ही सब बात करना चाहते हैं।"

राधाकृष्ण को सन्देह हो गया कि रामनारायण ने दुकान के बंटवारे की बात चन्दोबीबी और उसके पिता से भी की होगी, जो वे उसको सम्मिलित करना चाहते हैं। इस कारण वह इस विषय में चुप कर गया।

बात केदारनाथ ने स्पष्ट कर दी, "जीजा जी! बहिन और रामनारायण जी की बातों से कुछ ऐसा समझ आया है कि आप हम से कुछ लुकाव-छिपाव कर रहे हैं। इस कारण सब बात उनके सामने ही होनी चाहिए।"

इस पर तो राधाकृष्ण बिल्कुल ही मौन हो गया।

: २ :

इस गोष्ठी में घर के वयस्क सदस्यों के अतिरिक्त राधाकृष्ण के श्वसुर बनवारी लाल तथा साला केदारनाथ भी उपस्थित थे। रामनारायण की ससुराल तो दिल्ली से बाहर थी, इस कारण उनकी ओर से कोई नहीं आया था। रामनारायण ने अपनी यह इच्छा व्यक्त की कि वह अब भाई से पृथक् काम करना चाहता है।

बनवारी लाल ने पूछा, "क्यों?"

"मैं इस प्रकार के व्यापार को उचित नहीं समझता और इस कारण इसमें भागीदार भी बनना नहीं चाहता।"

"रामनारायण! तुम्हारे बड़े भाई ने अपने बयान में तुम्हारा नाम न लाकर तुमको साफ़-साफ़ बचा लिया है और तुम उससे पृथक् होना चाहते हो?"

"मैं भाई की मुखबरी करने के लिए नहीं जा रहा हूँ। मैं तो सुलह-सफाई से घर पर ही बँटवारे की बात कर रहा हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं बँटवारे का विरोध नहीं कर रहा।" बनवारी लाल ने कहा, "मैं तो यह कह रहा हूँ कि तुम बिना प्रमाण भाई को बेईमान कह रहे हो।"

"प्रमाण तो है।"

"तो दिखाओ!"

"भाई साहब कह दें कि मैं गलत कह रहा हूँ।"

राधाकृष्ण आँखें नीची किये बैठा रहा। राधाकृष्ण के साले केदारनाथ ने कह दिया, "पिताजी! क्रोध करने की बात नहीं है। जब छोटे लालाजी कहते हैं कि वे मुखबरी करने के लिए नहीं जा रहे, तो झगड़े की तो बात ही नहीं रही। रही बात पृथक् दुकान करने की, मैं समझता हूँ कि यह भी ठीक ही है। केवल बँटवारा मुकद्दमे के बाद होना चाहिए।"

रामनारायण ने कहा, "वह इस शर्त पर कि जब तक मुकद्दमा चले, भैया दुकान पर नहीं आयेंगे।"

इस प्रस्ताव पर तो सब चुप हो गए। बात राधाकृष्ण की पत्नी चन्दोबीबी ने बना ली। उसने कहा, "रामनारायण भैया ठीक ही कहते हैं। इतनी बदनामी हो जाने के बाद उनका अभी दुकान पर जाना ठीक नहीं। वे घर पर बैठ कर चण्डी का जाप करेंगे, जिससे कि यह संकट टल जाय।"

राधाकृष्ण भी कहने लगा, "मुझे स्वीकार है।"

इस प्रकार गोष्ठी समाप्त हो गई। रात को चन्दो ने हीरे का सन्तू के पास होना बताया तो कितनी ही देर तक राधाकृष्ण अपनी पत्नी का मुख देखता रह गया। बहुत देर तक विचार कर पूछने लगा, "तुम्हें उसको रखने के लिए और कोई नहीं मिला था?"

"केदार यहाँ था नहीं। पड़ोसियों पर मुझको विश्वास नहीं था।"

"तो सन्तू पर बहुत विश्वास है? वह भिखारियों का लड़का कहीं यह जान गया कि उस डिबिया में क्या है, तो उसको हजम कर जायेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सन्तू यह जानता है कि उसमें चोरी की गई कोई मूल्यवान वस्तु है। इस पर भी वह आज यह पूछने के लिए आया था, कि वह उसे कब वापस लाये।"

"तो तुमने क्या कहा है ?"

"मुझे तो अभी भी उसे घर पर रखने में डर लगता है।"

"मैं समझता हूँ कि उसे मंगवाकर तुम केदार के पास रखवा दो।"

"वह नहीं रखेगा। वह भी एक दिन पूछ रहा था कि यह चोरी का काम जीजाजी क्यों करते हैं ? आज भी उसने आपकी ईमानदार के विषय में आपका समर्थन नहीं किया।"

"तो फिर क्या करें ?"

"आप जानें आपका काम। कहीं दोबारा तलाशी हुई और वह हीरा यहाँ मिल गया तो सब कुछ बरबाद हो जायेगा। उसको अब निकाल ही देना चाहिये।"

"यह रामनारायण भी अब बहुत तंग करने लगा है।"

"वह ठीक ही कहता है। उसकी पत्नी भी एक दिन कहती थी कि वे निर्धनता का जीवन व्यतीत कर लेंगे, परन्तु पाप का बोझा नहीं ढोयेंगे।"

राधाकृष्ण चुप रहा। कई दिन की हवालात के बाद वह आज अपने कमरे में लेटा तो दोनों स्थानों का अन्तर देख सुख की नींद सो गया। यों तो हवालात में भी रुपये के बल पर वह किसी सीमा तक सुखी था। फिर भी घर के साथ हवालात की किसी अंश में भी तुलना नहीं की जा सकती थी।

राधाकृष्ण सोचता रहा था कि हीरे को कहाँ छिपाये। परन्तु इस विषय में वह कुछ भी निर्णय नहीं कर सका। अगले दिन सन्तू दुकान पर आया तो रामनारायण ने उसे घर भेज दिया।

सन्तू को आया देख राधाकृष्ण ने पूछा, "वह डिबिया कहाँ है ?"

"मैंने एक जगह भूमि में गाड़ रखी है। कहिये तो निकाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर ले आऊँ।"

"नहीं, अभी नहीं, परन्तु उसको सावधानी से रखना।"

"लालाजी ! यमुना में बाढ़ आ रही है। और कहीं पानी आ गया तो वह भूमि जल में डूब जायेगी, फिर मैं नहीं जानता कि क्या होगा।"

यह एक नई समस्या थी। सन्तू ने बताया, "कल मैंने यमुना में जल चढ़ने का समाचार सुन वहाँ के पुराने निवासियों से पूछा था, तो वे कह रहे थे कि एक बार पहिले भी बाढ़ आई थी। उस समय यह सब भूमि जलमग्न हो गई थी। इससे मुझे आपकी डिबिया की चिन्ता लग गई है।"

"तो ऐसा करो, उसे निकाल कर अपनी जेब में रख लो। किसी दिन मैं तुमसे ले लूँगा।"

इस पर सन्तू बहुत गम्भीर विचार में पड़ गया। उसे चुप देख राधाकृष्ण ने कह दिया, "जाओ लेकर यहां चले आओ। उसे अपनी जेब में रखना, परन्तु किसी को इस बात का पता नहीं चलना चाहिए।"

सन्तू को यह योजना पसन्द नहीं थी। वह छोटी ललाइन के पास चला गया। उसने हाथ जोड़ कर राम-राम की तो लाज ने पूछ लिया, "सुनाओ सन्तू ! काम पर कब आओगे ? लल्ला तो तुमको बहुत याद करता है।"

"छोटी माँ ! मैं तो नौकरी पर आने के लिये सदा ही तैयार रहता हूँ, परन्तु बड़ी माँ कहती थीं कि मैं कुछ दिन अभी और न आऊँ। वे यह भी कहती थीं कि यह सब वे आपसे पूछ कर ही कर रही हैं।"

"मुझे यह सब पता है। अभी तुम बड़े लालाजी से मिल कर आये हो न ? वे क्या कहते हैं ?"

"वे तो कहते हैं मैं कल से नौकरी पर आ जाऊँ। उनकी डिबिया मैं अपनी जेब में रख लूँ। कहीं किसी को कुछ सन्देह हो जाय तो यहाँ से भाग जाऊँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो ठीक नहीं। इस विषय में तुम छोटे लालाजी से राय कर लो। जैसा वे कहें, वैसा करना। नौकरी तो तुम उनके घर में ही कर रहे हो न ?"

सन्तू दुकान पर जा पहुँचा। उसने घर पर हुई बातचीत का विवरण उसको सुनाया तो रामनारायण ने कह दिया, "तो बड़े लालाजी की नौकरी कर लो। उस स्थिति में न तो तुम इस दुकान पर आ सकोगे और न ही मेरे घर पर।"

सन्तू इस पर बहुत परेशान हुआ। उसने कुछ विचार कर कहा, "लालाजी ! मुझे मालूम है उस डिबिया में क्या है। यद्यपि मैं उसका मूल्य नहीं जानता तो भी इतना तो कह सकता हूँ कि वह कोई मूल्यवान वस्तु है। तभी लालाजी उसके लिए जेल भी जाने को तैयार हैं।

"फिर भी मैं उसे नहीं लूंगा। जो वस्तु मेरी नहीं, उसे लेकर मैं क्या करूँगा ? मैं वह डिबिया लाकर अभी आपके सम्मुख ही बड़ी मां को दे देता हूँ। तब तो आप मुझे नौकर रख लेंगे ?"

"हाँ।"

इस पर सन्तू भागा-भागा गया और अपने झोंपड़े के सम्मुख वाले पेड़ के नीचे की भूमि खोदने लगा। उसके मन में बड़े लाला और ललाइन के विरुद्ध क्रोध भर रहा था। क्यों वे उसे चोरी का माल छिपा कर रखने के लिए कह रहे थे ? वह मन में सोच रहा था, उसने अभी तक अपना वचन पालन किया है। उसने डिबिया की बात किसी को नहीं बताई। अपने माता-पिता को भी नहीं। अब उस डिबिया के लिये उसकी नौकरी जाती है। छोटे लाला इसको पाप समझते हैं और पापी को वे अपने घर में स्थान नहीं देंगे।

इन्हीं विचारों में वह अपने झोंपड़े में से चाकू ला भूमि को खोद रहा था। इस समय रामी माँ की दृष्टि उस पर पड़ी। वह वहाँ आकर उसको देखने लगी। सन्तू अपने काम में इतना लीन था कि उसको रामी माँ की वहाँ उपस्थिति का आभास भी नहीं हुआ। जब वह मिट्टी में से पीतल की डिबिया निकालने लगा तो रामी माँ ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूछ लिया, "क्या है सन्तू इसमें ?"

सन्तू इस प्रकार डिबिया निकालते देखे जाने पर काँप-सा उठा। रामी माँ की दृष्टि में उसकी कँपकँपी छिपी नहीं रही। उसको कुछ सन्देह हुआ तो वह उसका निवारण करने लगी।

सन्तू इस प्रकार पकड़े जाने पर विचार करने लगा कि उसको सब कुछ बता दे अथवा नहीं। रामी माँ को वह बहुत ही समझदार औरत मानता था। यहाँ तक कि अपने पिता से भी अधिक। इस कारण उसका निश्चय रामी मां को सब कुछ बता देने का हो गया।

सन्तू ने डिबिया को झाड़ कर कहा, "रामी माँ ! बताता हूँ। हमारी झोंपड़ी में आ जाओ।"

झोंपड़ी में पहुँच कर सन्तू ने खड़े-खड़े ही उस अँगूठी की पूर्ण कहानी रामी माँ को बता दी और अपना भविष्य का निश्चय भी बता दिया। रामी माँ ने सन्तू के हाथ से डिबिया लेकर खोली और उसमें रखे हीरे को देख कर चकाचौंध रह गई। वह बोली, "बहुत बढ़िया है।"

"हाँ, बड़े लाला कह रहे थे कि इससे दो-ढाई हज़ार का लाभ होने वाला है।"

रामी माँ ने कुछ देर तक उस हीरे को अपने हाथ में रख तोल का अनुमान लगाया। पुनः उसे डिबिया में रख बन्द कर दिया। इस समय उसके पूर्ण शरीर में कँपकँपी हुई। उसने सन्तू को कहा, "चलो मैं तुम्हारे साथ चलती हूँ।"

"क्यों रामी मां ! मैं दे कर अभी आता हूँ।"

"नहीं, तुम नहीं जानते सन्तू ! इसको लेने के लिए कोई भी तुम्हारी हत्या कर सकता है।"

हत्या का नाम सुन तो सन्तू का मुख पीला पड़ गया। फिर बोला, "मैं किसी को दिखाऊँगा ही नहीं।"

"ठीक है, पर डाकुओं के पास भी अन्तर्दृष्टि होती है और वे सात डिब्बियों में बन्द धन की भी जानकारी रखते हैं। मैं चलती हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामी माँ ने मोहिनी और देवी को बुला कर सावधानी से दोनों झोंपड़ियों का ध्यान रखने के लिए कहा और स्वयं सन्तू के साथ चल पड़ी। सन्तू ने डिबिया अपनी जेब में रख ली। सन्त दो पग आगे-आगे था और रामी माँ उसको देखती हुई, उसके पीछे-पीछे चल रही थी।

वे दुकान पर पहुँचे। वहाँ से छोटे लाला को साथ ले राधाकृष्ण के पास जा पहुँचे। वहाँ पहुँच सन्तू ने डिबिया जेब से निकाल कर लालाइन के सामने रख दी। राधाकृष्ण और लालाइन दोनों ही प्रश्न-भरी दृष्टि से सन्तू का मुख देखने लगे। उनका विचार था कि साथ में सन्तू की माँ खड़ी है।

सन्तू ने कह दिया, "माँ ! मैं यह आपकी चीज आपको वापस करने के लिये लाया हूँ।"

"क्यों, अभी रखो न ?"

"नहीं, मैं छोटे लाला की नौकरी करता हूँ और इसको अपने पास रखे हुए मैं उनकी नौकरी नहीं कर सकता।"

"क्यों रामनारायण। तुमने इसको सिखाया है क्या ?"

"जी नहीं, सिखाने की बात नहीं है। मैंने इसको यह डिबिया रखने से भी मना नहीं किया। मैंने तो केवल यही कहा है कि इस वस्तु को अपने पास रखे हुए वह मेरी नौकरी नहीं कर सकता।"

"तो सन्तू !" राधाकृष्ण ने कह दिया, "तुम हमारी नौकरी कर लो ?"

"जी नहीं। मैं छोटे लाला की नौकरी कर रहा हूँ। ये निकाल देंगे तो फिर विचार करूँगा।"

"देखो, ये तुमको चार रुपया महीना ही तो देते हैं ? मैं तुमको सौ रुपया महीना दूँगा।"

"जी नहीं, एक लाख रुपये पर भी इस काम के लिये मैं आपकी नौकरी नहीं करूँगा।"

इतना कह सन्तू उठ खड़ा हुआ और कमरे से बाहर निकलने लगा तो राधाकृष्ण ने कह दिया, "ठहरो जरा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्तू ठहर गया। राधाकृष्ण ने रामी माँ की ओर देख कर कहा, "तुम इसकी माँ हो क्या ?"

"नहीं।"

"तो कौन हो ?"

"बताने की जरूरत नहीं।"

"क्या नाम है ?"

"रामी। मैं अपने आस-पड़ोस में रामी माँ के नाम से विख्यात हूँ।"

"देखो, इसे समझाओ कि यह मेरी नौकरी कर ले। यदि नहीं करेगा, तो मैं इसको कोतवाली में ले जा कर चोरी करने के अपराध में पकड़वा दूंगा।"

"इसीलिये तो मैं साथ आई हूँ। यह नहीं, इसके स्थान पर मैं पकड़ी जाऊँगी।"

इस पर तो रामनारायण से भी नहीं रहा गया। उसने कहा, "और मैं सब सत्य-सत्य बता दूंगा। भैया ! ऐसा फँसोगे कि सात वर्ष से कम की जेल नहीं होगी।

"सन्तू ! चलो, देखता हूँ, कौन पकड़ता है तुम को।"

राधाकृष्ण और रामनारायण की प्रकृति में जन्मजात अन्तर ही था। एक तो लाभ के लिये निस्संकोच प्रत्येक प्रकार के कार्य करने के लिये तत्पर रहता था और दूसरा उचित अनुचित, न्याय-अन्याय, पाप-पुण्य इत्यादि की विवेचना में लगा रहता था।

राधाकृष्ण अपने प्रत्येक कार्य को लाभ-हानि की दृष्टि से ही देखता था। जब वह बालक-मात्र था तब भी वह इस लाभ-हानि वाली प्रकृति से प्रेरित होकर कार्य किया करता था।

रामनारायण राधाकृष्ण से दो वर्ष छोटा था। वह अपनी माँ के स्वभाव पर गया था। जब वह सात-आठ वर्ष का बालक ही था कि एक दिन वह अपने पिता से एक आना लेकर लाहौरी गेट के एक दुकानदार से अपने स्कूल का काम करने के लिए एक कापी लेने के लिए गया था। दुकान से कापी लेकर देखने लगा कि ठीक है अथवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं। जब वह देख ही रहा था, दुकानदार किसी अन्य ग्राहक को एक वस्तु दिखाने लगा। रामनारायण कापी लेकर चला आया और दाम देना भूल गया।

घर आकर वह स्कूल का काम करने में लग गया। रात को खाना खाते समय उसने कुरते की जेब में हाथ डाला तो उसमें एक आने का सिक्का पड़ा देख, वह विचार करने लगा कि यह कहाँ से आया होगा। उसको जब स्मरण हुआ कि उसने कापी का दाम नहीं दिया और ऐसे ही देखते-देखते चला आया है, तो उसको पाश्चात्ताप होने लगा। वह मन में विचार करता था कि दुकानदार उसको चोर तथा झूठा समझने लगा होगा। कदाचित् वह कहता होगा कि उसके माता-पिता भी वैसे ही होंगे, जैसा कि लड़का है।

अपनी इस भूल के लिए रामनारायण मन में लज्जा का अनुभव कर रहा था। एकाएक उसको विचार आया कि कापी का दाम देना ही चाहिए। वह भोजन के लिये जाता-जाता रुक गया और माँ को जो उसको बुला रही थी, कहने लगा, "माँ, मैं अभी थोड़ी देर में आता हूँ।"

"क्यों बेटा, रोटी ठंडी हो रही है।"

"पर माँ ! एक भूल हो गई है, उसको सुधारना आवश्यक है।"

वह मकान के नीचे उतरा तो सामने राधाकृष्ण दिखाई दे गया। उसने बड़ा भाई होने के नाते पूछ दिया, "कहाँ जा रहे हो राम !"

"भैया ! मैं तीसरे पहर एक दुकानदार से कापी लाया था, किन्तु दाम देना भूल गया था। अब देने के लिए जा रहा हूँ।"

राधाकृष्ण ने हँस कर कह दिया, "तुम्हें उससे कुछ लेना है अथवा उसको देना है ?"

"उसका एक आना देना है।"

"जाने की आवश्यकता नहीं, जिसको लेना होगा, वह स्वयं ही आकर ले जावेगा।"

"पर वह तो हमारा घर जानता नहीं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो ठीक है, वह नहीं ले सकेगा। उसने दाम नहीं लिया, यह उसकी भूल है। भूल का फल उसको मिलना ही चाहिए।"

रामनारायण सोचता था कि क्या उसका भाई ठीक कहता है ? वह समझता था कि भैया का कहना ठीक नहीं है।

माँ, जो रामनारायण को खाना छोड़ जाते देख उसके पीछे-पीछे सीढ़ियों तक आ गई थी, दोनों भाइयों की बातें सुन रही थी। उसने राधा की युक्ति सुनी, मन से अस्वीकार की और बोल पड़ी, "राम ! जल्दी जाओ और कापी का मूल्य चुका कर आओ। देखो, भागते-भागते जाना और वैसे ही आना।"

राम को अपने विचारों का समर्थन प्राप्त हुआ तो वह घर से भाग कर लाहौरी गेट की ओर चल पड़ा। इस समय तक उसका पिता भी दुकान बन्द करके आ गया। कपड़े उतार कर चौके में भोजन के लिए पहुँचा तो राम को वहाँ उपस्थित न देख उसने अपनी पत्नी से पूछा, "राम कहाँ है आज ?"

उसके प्रश्न का उत्तर राधाकृष्ण ने देते हुए बताया, "मूर्ख है। एक दुकानदार से एक आने की कापी लाया था, दाम देना भूल गया। दुकानदार ने मांगा नहीं। यह चला आया। अब चार घण्टे के बाद याद आया तो दाम देने चल दिया।"

फग्गूमल ने कह दिया, "स्कूल में पढ़ने का यही तो फल है। माँ का बेटा है न ? किसी दुकानदार की शिक्षा मिली होती तो जाता नहीं। हमको तो कोई ग्राहक इस तरह देने कभी आया नहीं।"

माँ ने मुस्कराते हुए कह दिया, "दाम तो देकर ही आना चाहिये और साथ में भूल के लिये क्षमा याचना भी करनी आवश्यक है।"

"तुम तो राम को चर्खा कातना सिखा दोगी। वह किसी दुकान पर काम-धन्धा नहीं कर पायेगा।"

इस समय रामनारायण हाँफता हुआ आ पहुँचा। वह हाथ-पाँव धो चौके में आया तो राधाकृष्ण उसको हाँफता देख हँस पड़ा। पिता ने पूछ लिया, "दे आये हो ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ पिताजी ! वह दुकान बन्द कर रहा था और उसको पैसे लेने का ध्यान भी नहीं था। मैंने एक आना दिया और अपनी भूल के लिए क्षमा माँगी तो वह बोला कि उसको तो स्मरण नहीं। यदि मैं कहता हूँ तो ठीक है।"

"तुम महामूर्ख हो राम ! इतनी दूर भागते हुए गये और आये। न जाते तो एक आना बच जाता। यह भाग-दौड़ भी नहीं करनी पड़ती और उसको तो पता भी न चलता।"

"परन्तु पिताजी ! जिसका था, उसको तो मिलना ही चाहिये न ?"

"किसका था ?"

"उस दुकानदार का।"

"क्यों था।"

"मैं उससे कापी जो लाया था।"

"तो उसको दाम लेना चाहिये था न ? उसने नहीं लिया तो स्मरण उसको होना चाहिये।"

"मैं देना जो भूल गया था ?"

"यह लेने वाले का काम है कि वह माँगे।"

"क्या उल्टी बात सिखा रहे हो बेटे को ? राम ! तुमने ठीक किया है, जो जिसका है, उसको मिलना ही चाहिये।" माँ ने व्यवस्था दे दी।

"यह बेटा दुकान कर चुका।" बाप ने भी अपना निर्णय सुनाया।

"यह बाबू बनेगा, बड़ा अफसर होगा और दुनिया में नाम कमायेगा।"

इस पर भी रामनारायण बाबू अथवा अफसर नहीं बन सका। वह इन्टर में पढ़ रहा था कि उसकी माँ का देहान्त हो गया। और माँ के देहान्त के तीन मास बाद पिता का भी देहान्त हो गया। इस समय तक राधाकृष्ण का विवाह हो चुका था। माता-पिता के देहान्त के बाद रामनारायण की पढ़ाई बन्द हो गई। रामनारायण ने कहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी, "भैया ! मैं पढ़ूँगा।"

"क्या लाभ होगा ?" राधाकृष्ण ने पूछा।

"पढ़ने से ज्ञान में वृद्धि होगी और फिर कोई अच्छी सी नौकरी मिल गई तो नाम होगा।"

"देखो राम ! पिताजी ने मेरा विवाह दिल्ली के एक धनी आदमी की लड़की से किया, हमारा नाम हुआ। पिताजी ने आध मील लम्बी बारात चढ़ाई, हमारा नाम हुआ। मुझे दहेज़ में सवा सौ तोला सोना मिला, हमारा नाम हुआ। यह सब कुछ हम कर रहे हैं वह इसलिए कि हमारे पास धन है। हमारा सदा बैंक में तीन-चार लाख रुपया जमा रहता है। हमारे बाईस मकान दिल्ली में हैं। उनसे पन्द्रह हजार वार्षिक की आय होती है। हमारी दुकान से भी डेढ़-दो हज़ार मासिक आय होती है। कभी व्यापार में हाथ लग जाता है तो बीस-तीस हजार ऐसे ही मिल जाता है। इस सबसे हमारी मान-प्रतिष्ठा खूब होती है। रामलीला में हमारा चन्दा सबसे अधिक रहता है। इससे हमारा मान होता है।

"भला बाबू बनकर सौ दो सौ की नौकरी करके क्या मान-सम्पत्ति कमाओगे ? नहीं राम ! अब मैं तुम्हारा संरक्षक हूँ। मेरी सम्मति में पढ़ना व्यर्थ है। इससे कुछ नहीं होगा।"

परिणामस्वरूप अगले दिन से ही रामनारायण का कॉलेज जाना बन्द हो गया। अब वह दुकान पर बैठने लगा। चार वर्ष और निकल गये। रामनारायण दुकान की सम्पन्नता का रहस्य जान गया। नित्यप्रति पाँच-छः सौ रुपये का काम होता था। इससे सौ-सवा सौ रुपया नकद बच जाता था। कभी कोई जरूरतमन्द आता तो लाभ की मात्रा और भी बढ़ जाती।

: ३ :

राधाकृष्ण का विवाह तो उसके पिता के जीवन काल में ही हो गया था। लाला बनवारी लाल ने एक लाख रुपये का दहेज लड़की को दिया था। इस कारण राधाकृष्ण बनवारी लाल और चन्दो के दब-दबे में रहता था। वे राधाकृष्ण को समझाते रहते थे और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह उनको कुछ कह नहीं सकता था।

जब रामनारायण के विवह की चर्चा आरम्भ हुई तो बड़ा भाई छोटे भाई का संरक्षक बन सगाई लाने वालों से बातचीत करता। वह प्रायः कह देता, "मेरे विवाह पर मेरे श्वसुर ने मुझको इतना कुछ दिया है और अब मैं राम के ससुराल से इससे कम की आशा नहीं करता।"

लाला बनवारी लाल की स्थिति और मनोवृत्ति का व्यक्ति मिलना कठिन हो रहा था। साथ ही राधाकृष्ण यह भूल जाता था कि उसके पिता को बिना माँगे वह सब कुछ मिला था। अब वह माँग रहा था। इससे उनके परिवार की बदनामी ही होती थी।

एक बार रामनारायण के सामने ही बात हो गई। हापुड़ से बिरादरी के एक सज्जन रामनारायण के विषय में पूछ-गीछ करने आये तो अकस्मात् बात उन्होंने रामनारायण के सामने ही आरम्भ कर दी।

बात करने के लिये लड़की का पिता और भाई आये हुए थे। दोनों ने लड़के को देखा और लड़के के बड़े भाई से पूछ लिया, "आपके घर से लड़की देखने की इच्छा है क्या?"

राधाकृष्ण ने कहा, "लड़की भी देखेंगे ही परन्तु उससे पहले आप लेन-देन की बात कर लें। लड़की देखने के उपरान्त लेन-देन पर निश्चय न हो सका तो अच्छा नहीं लगेगा।"

दोनों पिता-पुत्र इस प्रकार की स्पष्ट बात सुन अवाक् रहे गये। रामनारायण को अपने भाई की बात पसन्द नहीं आई। उसने बात के बीच में ही पूछ लिया, "आपकी लड़की कुछ पढ़ी-लिखी भी है?"

इससे उत्साहित हो लड़की के भाई दामोदरस्वरूप ने कहा, "नौवीं श्रेणी में पढ़ती थी। माँ ने जब से उसका विवाह कर देने का निश्चिय किया है तब से स्कूल जाना बन्द करा दिया गया है।"

"ठीक है, भाभी उसको देखने के लिए आवेंगी। आप अपना पता लिख दीजियेगा।"

"परन्तु बरखुरदार!" भगक्तस्वरूप ने कह दिया, "आपके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भाई ठीक कहते हैं कि लेन-देन के बाद बातचीत टूटी तो उससे दोनों परिवारों की बदनामी होगी।"

"जी मैं समझता हूँ। परन्तु बात लेन-देन पर नहीं टूट सकती। हाँ, यदि भाभी को लड़की पसन्द न आई तो बात दूसरी है।"

दामोदर स्वरूप राधाकृष्ण का मुख देखता रह गया। राधाकृष्ण रामनारायण के स्वभाव को जानता था। उसके मन में तो आया था कि रामनारायण को डाँट दे, परन्तु उसने बाहरी जनों के सम्मुख कुछ कहना ठीक नहीं समझा। इस कारण बोल उठा, "यह लड़का दो अक्षर अंग्रेजी के पढ़ गया है इस कारण यह वही बात करेगा जो मैंने की है परन्तु कुछ नीति से। इस पर भी मैं यह कहता हूँ कि साफगी आदमी नीति वाले से ठीक रहता।"

रामनारायण लड़की के पिता के उत्तर देने के पहले ही बोला, "देखिए लाला जी! विवाह होगा मेरा। इस कारण नीति कहो अथवा अनीति। मेरा विचार है कि लड़की दिखा दीजिये। भाभी ने एक दो लड़कियाँ यहाँ भी देखी हैं। अतः उन्होंने यदि आपकी लड़की को पसन्द कर लिया तो फिर लेन-देन की बात करूँगा। लड़की लक्षणयुक्त हुई तो लेन-देन की बात गौण भी हो सकती है"

दामोदर स्वरूप को यह बात पसन्द आई। उसने अपनी जेब से कागज पेंसिल निकाल हापुड़ का पता लिख दिया और पूछा, "आपकी भाभी ही आवेंगी अथवा और कोई भी।"

"माता जी का स्वर्गवास हो चुका है। अब उनकी स्थानापन्न भाभी ही हैं। वे यदि किसी अन्य को साथ ले जाना ठीक समझेंगी तो ले जावेंगी।"

"मैं तो समझता था कि यदि आप स्वयं भी आ जाते तो ठीक रहता।"

"मैं अभी इस समय अपना आना ठीक नहीं समझता। पहले भाभी जी सन्तुष्ट हो गईं तो मेरी अनुमति ही समझिये।"

लड़की वाले गये तो फिर राधाकृष्ण ने कह दिया, "यह संबंध ठीक नहीं रहेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों !"

"ये लोग लड़की को दिखाकर अपने दहेज में कमी करना चाहते हैं।"

"भैया ! यदि भाभी ने लड़की पसन्द कर ली तो मैं बिना एक पैसा भी दहेज में लिये विवाह करने वाला हूँ।"

"दिमाग ठिकाने नहीं रहा क्या ?"

"बिल्कुल ठिकाने पर है भैया ! आप देखते जाइये सब कुछ ठीक होगा।"

"तुम्हारी भाभी देखने के लिये नहीं जावेगी।"

"इस पर घर जाकर विचार कर लेंगे।"

परिणामस्वरूप सब बात चन्दोबीबी के सामने ही हो गई। चन्दोबीबी ने राधाकृष्ण की बात सुनकर पूछ लिया, "राम ! तुम क्या कहते हो ?"

"भाभी ! दहेज के लिए तो मैं विवाह करूँगा नहीं। विवाह के लिये ही विवाह होगा। दहेज देना न देने देना वालों की इच्छा पर निर्भर होगा।"

"और आप कहते हैं," चन्दोबीबी ने अपने पति से पूछ लिया, "कि मैं देखने न जाऊँ। भाल क्यों ?"

"मैं इसमें अपने परिवार का अपमान समझता हूँ कि बिना दहेज के घर में बहू आवे।"

चन्दोबीबी ने प्रश्नभरी दृष्टि से अपने देवर की ओर देखा तो उसने कह दिया, "भाभी ! मैं इसमें अपने परिवार की नेकनामी समझता हूँ।"

"समझती तो मैं भी यही हूँ।"

"तो तुम्हारे पिता ने यह सब कुछ क्यों दिया था ?"

"स्वेच्छा से दिया था। आपके पिता ने माँगा नहीं था।"

"तुम क्या जानती हो इस विषय में ?"

"मुझको यही बात पिताजी ने बताई थी। वे कहते थे कि जो व्यक्ति दहेज माँगता नहीं, उस पर ईश्वर की कृपा समझो और ऐसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को तो दिल खोलकर देना चाहिये।"

"हमारे पिताजी जानते थे कि लाला बनवारीलाल देंगे, इसलिये माँगा नहीं होगा। यदि उनको भी मालूम होता है इन हापुड़ वालों की भाँति आपके पिता भी दहेज की बात पर बगलें झाकने लगेंगे, तो वे भी माँग लेते।"

"तो ये बगलें झाकनें लगे थे।"

"हाँ, और अपनी लड़की राम को देखने के लिये कह रहे थे।"

"पर भाभी!" रामनारायण ने कह दिया, "मैंने ही लड़की देखने का प्रस्ताव रखा था।"

चन्दोबीबी ने अपना निर्णय बता दिया, "मैं न तो लड़की देखने के लिये उत्सुक हूँ, न ही जाने में अरुचि रखती हूँ। यदि राम कहे तो जरूर जाऊँगी।"

"भाभी! माँ जीवित होती तो जरूर जाती। उसके स्थान पर तुम ही तो हो। इसलिये तुमको छोड़ और किसको कह सकता हूँ।"

"तो मैं जाऊँगी।"

"और मेरे मना करने पर भी रुकोगी नहीं!" राधाकृष्ण ने गंभीर मुद्रा में पूछ लिया।

"परन्तु आप मना क्यों करेंगे? मुझको अपने बने पुत्र का काम करने से मना क्यों करेंगे?"

"यह मेरा कहा नहीं मानता।"

"बीवी के विषय में कोई भी किसी दूसरे का कहा नहीं मानता। यह संसार का नियम है।"

"परन्तु बीवी तो अभी बनी नहीं।"

"बनने की बात तो है।"

"यह खूब रही। तुम अपने पति का कहा नहीं मानोगी और अपने पुत्र समान देवर की बात मानोगी।"

"देखो जी! आप अपने भाई को समझाइये कि वह मुझे माँ न माने। तो फिर मैं उसके साथ पुत्र समान व्यवहार नहीं करूँगी।"

राधाकृष्ण जानता था कि यदि कुछ हठ किया तो बात बनवारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाल तक चली जायेगी और वहाँ से डाँट पड़ जायेगी। इसकारण वह चुप रहा।

चन्दोबीबी ने हापुड़ जाने से पहले रामनारायण को पूछ लिया, "अगर लड़की शुभ लक्षणायुक्त और सुन्दर हुई तो बात पक्की कर आऊँ ?"

"भाभी ! जो कुछ मुनासिब समझो कर लेना। केवल माँग कर स्वयं को छोटा न बना लेना। यदि लड़की ठीक हुई तो मैं तो बिना एक पैसा भी लिये विवाह कर लूंगा।"

विवाह हो गया। भगवतस्वरूप की लड़की लाजवन्ती बहुत ही मामूली आभूषण तथा वस्त्रों के साथ अपनी ससुराल आई। भगवत स्वरूप एक साधारण दुकानदार था और दामोदर स्वरूप रेल का गार्ड। वे बेचारे पूर्ण विवाह पर दो सहस्र रुपया ही खर्च कर सके थे।

लाजवन्ती दहेज पर दोनों भाइयों में विवाद की बात सुन चुकी थी। इस कारण वह डर रही थी कि उसके साथ कदाचित् दुर्व्यवहार किया जायेगा। इस पर भी वह अपनी जेठानी के विषय में सुन चुकी थी कि वह बहुत अच्छे विचार की है। इस कारण घर में प्रवेश करते ही लाज ने उसके चरण स्पर्श किये और जब उसने देवरानी को उठाकर गले से लगाया तो उसने सान्त्वना अनुभव की।

राधाकृष्ण ने तो अगले ही दिन रामनारायण को कह दिया, "राम ! तुम अपना घर पृथक् कर लो।"

"भैया ! इसकी आवश्यकता है क्या ?"

"हाँ, मैं इस कंगलों की लड़की के साथ नहीं रह सकता।"

रामनारायण इस अपशब्द का कुछ प्रत्युत्तर देना नहीं चाहता था। परन्तु चन्दोबीबी ने बात सम्हाल ली। उसने कह दिया, "बात ठीक है। बताइये आप लाजवन्ती के मकान में भी रहेंगे अथवा नहीं।"

"क्या मतलब ?"

"मैं यह विचार कर रही हूँ कि मुझे अपना सब सामान बाँध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहीं चल देना होगा क्या ?"

इस सम्भावना से बचने के लिये राधाकृष्ण ने कह दिया, "मकान के आधे भाग में राम रहेगा और आधे में हम । जीना साँझा होगा। मैं चाहता हूँ कि इसकी बीवी मकान के इस ओर न आवे।"

"बस, या कुछ और भी।" चन्दोबीबी ने राम को बात करने का अवसर न देते हुए पूछ लिया ।

"रोटी पृथक्-पृथक् बनेगी।"

"ठीक है और कुछ।"

"राम अपनी दुकान पृथक् कर ले।"

"इसकी क्या जरूरत है ? लाज दुकान पर तो जावेगी नहीं। मैं भी कभी नहीं गई।"

"राम भी तो बदल जावेगा।"

"परन्तु आप तो बदले नहीं। वह भी तो आपका भाई ही है। देखिये जी ! घर में रसोईघर एक है। जब तक एक नया रसोईघर नहीं बन जाता तब तक तो एक ही रसोई में खाना बनेगा। एक रसोई में दो चूल्हे नहीं जलेंगे।"

यह एक और कठिनाई उपस्थित हो गई। राधाकृष्ण के मन में एक भूत सवार था। वह निर्धन की लड़की को अपमानित करना चाहता था। इस पर उसने कह दिया, "जब तक नया रसोईघर नहीं बनता, तब तक मेरा खाना तुम बनाना। राम की बहू का हाथ न लगे।"

"तो इसका मतलब यह हुआ कि बहू का भोजन मैं ही बनाया करूँ। तब ही यह हो सकेगा। यह तो मैं करने वाली ही हूँ। अभी एक-आध वर्ष के लिये उससे रसोईघर का काम नहीं लेना चाहिये।"

"मेरा मतलब है कि राम और उसकी बहू इस घर में उसी प्रकार रहेंगे जैसे कुछ दिन के लिये मेहमान आते हैं।"

"अर्थात् उनका खर्चा भी मैं ही किया करूँ।"

"पहले कैसे करती हो ?"

"राम डेढ़ सौ रुपया महीना खर्च के लिये निकालता था और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप तीन सौ निकालते थे। इसी अनुपात में वह घर का खर्चा देता था। घर पर रसोई का चालीस रुपया मासिक देता था। अपने पास से मैं अस्सी रुपये इस खाते में व्यय करती थी। पिछले चार वर्ष से यही प्रबन्ध चला आ रहा है। अब बताइये आप भविष्य में क्या व्यवस्था चाहते हैं ?"

"अब वह भी अस्सी रुपया दिया करेगा।"

"वह तो होगा ही। परन्तु दुकान से अब वह भी तीन सौ रुपया निकाला करेगा। तब ही तो अधिक दे सकेगा।"

राधाकृष्ण देख रहा था कि घूम-घुमाकर बात तो वही हो रही है जो पहले थी। और यदि राम की बहू को वह रसोईघर में घुसने न दे तो इसका अर्थ यह होता है कि उसकी अपनी बहू उसके लिये भी खाना बनाने की नौकरी करे। वह समझ गया कि जब तक मकान पृथक् न लिया जाय तब तक पृथक्-पृथक् का झगड़ा व्यर्थ है। वह निरुत्तर हो गया था।

राम ने अपने भाग का खर्चा दुगुना कर दिया और लाज चन्दो-बीबी के काम में सहायता करने लगी। तब से काम इसी प्रकार चला आता था।

: ४ :

राधाकृष्ण और रामनारायण की विभिन्न प्रवृत्तियों में चन्दो-बीबी एक बड़ी बनी हुई थी। रामनारायण ने अपना स्थान उसी मकान में पृथक् रखा हुआ था। धीरे-धीरे वह उसमें समान एकत्रित कर रहा था। मकान तीन छत का था। प्रत्येक छत पर चार-चार कमरे थे। रामनारायण ने तीनों छतों पर दो-दो कमरों पर अधिकार कर लिया। उसको अपने खर्च से सजाने लगा।

राधाकृष्ण की पत्नी दोनों भाइयों का भोजन बनाती थी और रामनारायण इसके लिए अस्सी रुपया महीना दे देता था। इस खर्च के विषय में भी एक दिन पति-पत्नी में विवाद हुआ। राधाकृष्ण का कहना था, "यह अस्सी रुपये तो बहुत कम हैं। उसके तो बच्चे भी हो गये हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी नहीं, यह उचित से अधिक ही हैं। मेरे पास हिसाब लिखा हुआ है। पिछले मास घर के रसद पानी में एक सौ तीस रुपये दस आने खर्च हुए थे। उस हिसाब से उससे आठ रुपये नौ आने कम लेने चाहिए थे। परन्तु जब वह रुपये दे गया तो मैंने शेष रुपये लौटाये नहीं।"

"क्यों नहीं लौटाये तुमने ?"

"इसलिए कि भाई-भाई में आने दो आने की गिनती करना उचित नहीं। किन्तु मैंने उसको यह बता जरूर दिया था कि पैसे अधिक हैं। इस पर वह बोला, "भाभी ! रख छोड़ो, कभी अधिक भी खर्च हो सकते हैं।"

"इस पर मैंने उस से पूछा, 'क्या हिसाब देखोगे ?'

"अपना गाल आगे करते हुए वह बोला, 'भाभी मुख पर चपत लगाओ। माँ से भी कभी हिसाब पूछा जाता है ?' इतना कह आँखों में आँसू भरे वह चला गया।"

"राम तो बहुत चतुर हो गया है।" राधाकृष्ण ने मुस्कराते हुए कहा, "होटल में खाता तो दो सौ रुपये से कम खर्च न होते।"

"पर यह तो होटल नहीं है। यह तो घर है। यहां वे सब खर्चे तो नहीं लगाये जा सकते जो होटल के खाने में सम्मिलित होते हैं।"

"क्यों नहीं लगाये जा सकते ?"

"मैं तो नहीं लूंगी ये सब खर्चे।"

राधाकृष्ण के मन में असन्तोष बना ही रहा। परन्तु बहू ने अपने शील-स्वभाव से इस विषाद को कम कर दिया। वह चन्दो-बीबी को माँ और राधाकृष्ण को पिताजी कह कर पुकारती थी।

रामनारायण के तीन बच्चे हुए। पहला लड़का था, उसका नाम सुरेश रखा गया। दूसरी लड़की हुई, उसका नाम पार्वती रखा गया। तीसरा फिर लड़का हुआ, इसका नाम महेश रखा गया। विपरीत इसके राधाकृष्ण और चन्दोबीबी के कोई सन्तान नहीं हुई। कभी-कभी राधाकृष्ण कहता, "तुमको क्या हो गया है ? ऊसर की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊसर ही पड़ी हो।"

"मैं क्या जानूं, आप एक और विवाह कर लीजिये।"

"परन्तु तुम्हें नहीं चाहिए क्या कोई बच्चा ?"

"मेरे तो तीन हैं।"

"लाज के बच्चे तुम्हारे किस तरह हो गये ?"

"उनसे तनिक आप पूछिए तो सही कि माँ किधर है। वे मेरी ओर ही संकेत करेंगे।"

यह ठीक भी था। चन्दोबीबी लाज की माँ थी तो बच्चों की बड़ी माँ हो गई।

जब सन्तू उस घर में आया तो सुरेश उस समय सात वर्ष का था। पार्वती पाँच वर्ष की और महेश नौ मास का था। सुरेश और पार्वती स्कूल जाने लगे थे। महेश सन्तू की गोद में खेलता था।

चोरी की अँगूठी वाली घटना के समय भी राधाकृष्ण और रामनारायण में जन्मजात प्रवृत्तियों का ही झगड़ा हुआ था।

सन्तू जब राधाकृष्ण के सामने डिबिया रख उसके कमरे से निकला तो राधाकृष्ण और उसकी पत्नी मुख देखते रह गये। राधाकृष्ण के सम्मुख यह समस्या थी कि वह हीरे को कहाँ छिपाए और चन्दोबीबी को सन्तू के व्यवहार पर आश्चर्य हो रहा था।

जब रामनारायण, सन्तू और रामी वहाँ से चले गए तो राधाकृष्ण ने पूछा, "अब इसका क्या करूँ ?"

"इसका भी प्रबन्ध हो जायेगा। मुकद्दमे तक के लिए कोई स्थान ढूंढ ही लूंगी। परन्तु मैं तो यह विचार कर रही हूँ कि यह सन्तू कितना अच्छा है। यदि यह अपनी बिरादरी का होता तो इसे अपना लड़का बना लेती।"

"बना लेना, अभी तो इसकी चिन्ता करो।" उसने डिबिया की ओर संकेत किया।

"मेरे मन में तो आता है कि कल यमुना जी में स्नान करने के लिए जाऊँ और इस डिबिया को उसमें प्रवाहित कर आऊँ।"

राधाकृष्ण के माथे पर त्यौरी चढ़ गई। वह बोला, "इधर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाओ, मैं इसके तीन टुकड़े करा दूँगा जिससे यह पहचाना ही न जा सके।"

"और यदि टुकड़े करने वालों ने मुखबरी कर दी तो ?"

यह सुन राधाकृष्ण अपनी पत्नी का मुख देखता रह गया।

उधर रामनारायण ने सन्तू को ले जाकर कहा, "देखो सन्तू ! फिर कभी ऐसा काम नहीं करना। जहाँ चोरी करना पाप है, वहाँ चोरी का माल छिपाना भी पाप है। दोनों में बराबर कैद का दण्ड होता है।"

लाजवन्ती ने कहा, "अच्छा, अब तुम लल्ला को ले जाओ। देखो वह तुम्हारा मुँह देख रहा है।" रामी सन्तू के पीछे-पीछे वहाँ तक आई थी। जब सन्तू महेश को गोदी में ले घुमाने के लिए चला तो रामी माँ उसके साथ जाने लगी, परन्तु लाजवन्ती ने उसको बुला कर अपने पास बिठा लिया। रामनारायण दुकान पर चला गया।

लाजवन्ती ने पूछा, "सन्तू तुम्हारा क्या लगता है ?"

"बहुत कुछ और कुछ नहीं। मेरा नाम रामी है, हमारा झोंपड़ा और इसका झोंपड़ा साथ-साथ हैं। मेरा घर वाला कपड़ा मारकिट में लाला बनवारीलाल की दुकान पर कुली का काम करता है।"

"ओह ! वे तो मेरी जेठानी के पिता हैं। क्या नाम है तुम्हारे घरवाले का ?"

रामी ने आँखें नीची किये ही कह दिया, "लालचन्द। वे दस वर्ष से उनकी दुकान पर गाँठें उठाने का काम कर रहे हैं। यह सन्तू मुझे बहुत प्यारा लगता है। भगवान को स्वीकार हुआ तो ..।" वह कहती-कहती रुक गई। फिर कुछ विचार कर बोली, "अभी नहीं बताऊँगी ?"

लाज मुस्कराई और बोली, "अभी क्यों नहीं बताओगी ?"

"अभी मैं अपने भगवान को रिझा नहीं सकी। दिन-रात उससे कहती रहती हूँ। ऐसा प्रतीत होता है दो-तीन वर्ष और लग जायेंगे तब ही बता सकूँगी।"

फिर एकाएक पूछ बैठी, "जाऊँ अब ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाज ने उसको ठहरने के लिए कहा। उसको पता था कि सन्तू की एक बहिन है। वह भीतर गई और रूमाल में बहुत-सी मिठाई बाँध लाई। रामी को वह रूमाल देते हुए कहने लगी, "इसे ले जाओ। कभी इधर आओ तो मिलती रहना। मुझे तुम्हारी बातें बहुत अच्छी लगी हैं। तुम सन्तू को पसन्द करती हो। मैं भी उसे बहुत अच्छा समझती हूँ।"

"इसकी क्या आवश्यकता है?"

"देखो रामी माँ, कुछ बात है जिससे हम दोनों ने ही सन्तू को अच्छा लड़का समझा है। यह मनों की समता ही है। यह तो मैं तुमसे सम्बन्ध बनाने के लिए कर रही हूँ।"

फिर बोली, "सन्तू की एक बहिन है न, इसमें से कुछ उसको दे देना और तुम्हारे कितने बच्चे हैं?"

"सात वर्ष की एक लड़की है।"

"उसको भी खिलाना। उन दोनों को भी कभी इधर लेकर आना।"

रामी चलने के लिए उठी और लाजवन्ती को आशीर्वाद देती हुई बोली, "बिटिया! चिर सौभाग्यवती बनी रहो।"

: ५ :

यमुना में बाढ़ आ रही थी। मीलों तक पानी-ही-पानी दिखाई देता था। अनेकों गाँव जलमग्न हो गये थे। कई स्थानों पर तो लोग रात को सोये-सोये ही जल से घिर गये थे। अब उनका निकल सकना असम्भव हो रहा था। ऐसी स्थिति में लोग अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार निकलने का उपाय कर रहे थे। कोई पेड़ों से चिपटे हुए, कोई लकड़ियाँ पकड़ कर, उनको इकट्ठे बाँध कर, उन पर अपने बाल-बच्चों की जान को समेटे हुए, अनिश्चित भविष्य की ओर बहे चले जा रहे थे।

यमुना के तटवर्ती क्षेत्रों में हाहाकार मचा हुआ था। जानकार लोगों का अनुमान था कि उनके जीवनकाल में इतनी बड़ी बाढ़ कभी नहीं आई थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बाढ़ का विनाशकारी प्रभाव यमुना के पूर्ववर्ती तट पर बसी भिखारियों की बीस-तीस झोंपड़ियों पर भी हुआ। बस्ती कुछ ऊँचे स्थान पर थी। उसके चारों ओर नीची जगह थी। अतः रात होने से पूर्व ही वह भी घिर गई।

भगतू और मनकी काम पर से लौटे तो घुटने-घुटने पानी में चल कर वे अपनी झोंपड़ी तक पहुँच पाये थे। वहाँ पहुँचे तो रामी माँ अपनी नगदी और एकाध आभूषण और धोती अङ्गोछा एक पोटली में बाँधे अपने घर वाले की प्रतीक्षा में खड़ी थी। अन्य पड़ोसी भी घबराये हुए थे।

इसी बस्ती में कुछ भिखारी भी रहते थे। वे तो अपनी-अपनी गुदड़ी समेट झोंपड़ी को छोड़ कर भाग चुके थे। मनकी का घरवाला भगतू, रामी माँ और कुछ अन्य लोग ही थे, जो अपनी किंचित-सी सम्पत्ति और सामान बचाने के लोभ में अनिश्चित मन से खड़े, कभी यमुना की ओर और कभी दिल्ली नगर की ओर देख रहे थे।

रामी ने भगतू की ओर देखकर कहा, "भैया ! जल्दी करो। आवश्यक वस्तुएँ बाँध लो। रात, यहाँ रहना उचित नहीं प्रतीत होता। पिछले एक घंटे में पानी उस आक के पौधे से यहाँ तक बढ़ आया है।"

मनकी की आँखों से आँसू बह रहे थे। भगतू ने पूछा, "रामी बहिन ! देवी के पिता की भी प्रतीक्षा नहीं करोगी ?"

"अँधेरा हो रहा है। मैं तो यह गठरी और देवी को लेकर नगर की ओर के किनारे पर जा रही हूँ। वह आयेगा तो उधर से ही। नगर भर के लोग तमाशा देखने के लिए आ गए हैं। उसको अभी तक पता ही नहीं चला क्या ? मैं समझती हूँ कि उसको हमारे भय की सूझ ही नहीं आई होगी ! भैया बुद्धू तो वह है ही।"

भगतू ने अंधेरा होने की बात सोची तो अपने झोंपड़े में घुस गया। एक कोने में उसने नकदी रखने के लिए स्थान बनाया हुआ था। उसने उस स्थान में हाथ डाल कर सब कुछ निकाल लिया। छः मास की पूर्ण बचत उसमें रखी हुई थी। वह सब एक सौ रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लगभग थी।

इस धन को निकालते हुए भगतू विचार कर रहा था, "जीवन में पहली बार ही तो इतना कुछ देखने के लिए मिला था। अब यह भी बालू की भाँति मुट्ठी में से निकलता प्रतीत होता है।"

मनकी अपनी धोती, चोली इत्यादि की गठरी बाँध रही थी। इस सब समय मोहिनी और देवी समीप खड़ी अज्ञात भय से त्रसित अपने बड़ों को पीत-मुख, सामान समेटते देख रही थीं।

पाँच मिनट में जो कुछ समेटा जा सकता था, समेट लिया गया। तीन गठरियाँ बाँध ली गईं—दो बड़ी, एक छोटी। एक-एक को सिर पर रख चलने के लिए तैयार हो गये। रामी ने एक गठरी देवी के सिर पर लादी और जल में सब घुस नगर की ओर चल पड़े।

पिछले पाँच-दस मिनट में ही पानी तीन चार इँच और ऊँचा हो गया था। भगतू को अपना शेष सामान पीछे छोड़ आने का भारी दुःख था। नगर की गन्दगी में तथा शिष्टाचार-विहीन पड़ोसियों में रहते हुए और जलती धूप तथा आँधी-पानी में काम करते हुए वह मन में विचार कर रहा था कि निकट भविष्य में वह धन के बल से अपनी अवस्था और वातावरण को सुधार सकेगा; परन्तु अब सब कुछ उसकी आँखों के देखते-देखते यमुना में बहता प्रतीत होता था।

गाँव में वह एक छोटे-से जमींदार शेरसिंह के खेत पर काम करता था। उसके घर के आँगन में ही बनी एक झोंपड़ी में वह रहता था। वहाँ तो नग्न दारिद्रय का जीवन था।

यहाँ आकर दिन-रात मनकी को पथ-च्युत करने वालों से वास्ता पड़ता रहता था। इन भिखारियों की बस्ती में आकर तो उसको और उसकी लड़की मोहिनी को तंग करने वालों से नित्य उसे झगड़ना पड़ता था। उसके सौभाग्य से रामी माँ उसको एक अच्छी पड़ोसिन मिल गई थी। अन्यथा स्थिति विचित्र ही होती और मोहिनी का क्या से क्या हो गया होता—इस बात को सोच भगतू और मनकी गाँव के जीवन का मूल्याँकन करने लगे थे।

रामी माँ अति साहसी महिला थी। वह अपने आस-पास रहने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वालों की गतिविधियों को भली-भाँति समझती थी। धर्म, कर्म और शिष्टता में विश्वास होने से वह इनकी रक्षा करने के लिए तैयार हो गई थी और पिछले छः मास सरलता से निकल गये थे।

मनकी और भगतू सिर पर गठरियाँ लादे जल पार करते हुए नगर के किनारे की ओर जा रहे थे, तो वे अपने जीव के पूर्ण हेर-फेर को स्मरण कर रो-से रहे थे। मनकी तो स्वयं को रामी माँ जैसी की सहायता पाने पर भाग्यशालिनी मान रही थी। भगतू झोंपड़े में रह गये सामान को स्मरण कर जीवन की कटुता अनुभव कर रहा था।

रामी अपने सिर पर समान लादे हुए देवी और मोहिनी को साथ लिए प्रसन्न चली आ रही थी। वह मन में, जीवन बचा कर बाहर निकल आ सकने पर भगवान् का धन्यवाद कर रही थी।

यमुना के दिल्ली के ओर के तट पर सहस्रों लोग बाढ़ का तमाशा देखने के लिये खड़े थे। वे इन निर्धनों को भी अपने सामान के मोह में अपने झोंपड़ों के समीप अनिश्चित मन से खड़े देख हँसते थे। कुछ भले लोग इनको निकल आने के लिए पुकार भी रहे थे। कुछ लोग किश्ती में इनको इस ओर ले आने का विचार करते थे। किश्तियाँ तो अन्य स्थानों पर धनिकों का सामान निकालने में लगी हुई थीं, इनकी ओर किसी का ध्यान ही नहीं गया।

जब ये चारों किनारों पर पहुँचे, तो पीछे झोंपड़ियों में भारी हल्ला मचा। सायंकाल के धुँधले प्रकाश में रामी माँ की तीव्र दृष्टि ने देखा और समझ लिया कि वहाँ पर कैसा शोर मच रहा है। इनके बस्ती छोड़ इस किनारे पर पहुँचते ही इनके झोंपड़ों में अवशिष्ट सामान पर लूट मच गई थी। वे सब, जो पीछे रह गये थे, इनके सामान को लूटते हुए परस्पर लड़ने-झगड़ने लगे थे।

इधर इसके उधर हो रही लूट-खसूट को देखते समय देवी वहाँ खड़ी भीड़ में इनसे भटक गई। इस समय रामी माँ का घर वाला लालचन्द भी भागता हुआ आया और अपनी पत्नी से "कैसे आई, क्या-क्या लाई ?" आदि प्रश्न पूछने लगा। सन्तू भी आ पहुँचा था और वह अपने माता–पिता को अपने लाला के घर में चलने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहने लगा, तो ये रामी माँ से राम-राम करने लगे। इस समय उनको देवी का ध्यान आया। उसका कहीं पता नहीं था। इस पर मोहिनी को एक पेड़ के नीचे खड़ा कर और सब सामान उसके समीप रख सभी देवी को उस भीड़ में ढूँढने लगे ? किन्तु वह नहीं मिली।

आधी रात तक उसकी खोज होती रही। जब वह नहीं मिली, तो सब लाला रामनारायण के मकान पर जा पहुँचे। नीचे की मंजिल पर एक कमरा उनके लिए खोल दिया गया था। दिन निकलने पर रामनारायण की राय से देवी के गुम हो जाने की रिपोर्ट कोतवाली में लिखवा दी गई। भगतू और मनकी तो काम पर चले गये। लालचन्द और रामी दिन भर देवी की खोज करते रहे।

: ६ :

रामी अपने मन में विचार करती थी कि वह देवी का सन्तू के साथ विवाह कर देगी। उसके बाल-बच्चों से वह अपने स्नेह की तृषा शान्त करने की कल्पना कर बैठी थी। ये सब कल्पना के दुर्ग रेत की भाँति ढह गये। इससे उसके मन को भारी चोट लगी थी। परन्तु उसके लिए भाग्य के विधान के सम्मुख नत-मस्तक हो चलने के अतिरिक्त अन्य कोई साधन ही नहीं रहा था।

एक सप्ताह की भाग-दौड़ और रोने-धोने के बाद लालचन्द अपने काम पर जाने लगा। रामी पुनः किसी झोंपड़े में चल रहने का विचार करने लगी।

उसी लाला ने, जिसने यमुना-तट पर झोंपड़े बनवाये थे, पुनः वहीं पर, जल उतर जाने के बाद झोंपड़े बनवाने आरम्भ कर दिये थे; परन्तु इस बार रामी को वहाँ जाकर बसने की रुचि नहीं हुई। इस समय पर भगतू ने एक अन्य बस्ती का उल्लेख कर दिया। यह तिमारपुर के पास एक ऊँचे टीले पर थी। भगतू के साथ काम करने वाले अधिकाँश मजदूर वहाँ अपनी-अपनी कुल्लियाँ बना कर रहते थे।

एक कुल्ली बनाने में तीस से पचास तक रुपये खर्च होते थे। भगतू उस स्थान को पसन्द कर आया था। रामी और लालचन्द ने भी उसी स्थान पर अपनी कुल्ली बना लेना उचित समझा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमी सरकारी थी। अभी निकट भविष्य में उस स्थान के समीप कोई इमारत बनने की सम्भवना नहीं थी। इस कारण वहाँ पर बनाई गई कुल्ली अधिक स्थायी प्रतीत होती थी। अतः दो कुल्लियाँ एक साथ बनने लगीं। जब तक वहाँ स्थान नहीं बन गया, ये लाला रामनारायण के मकान पर ही रहते रहे।

रविवार को भगतू और मनकी की छुट्टी होती थी। वे अपने तथा रामी माँ के लिये एक स्थान ढूँढ वहाँ पर कुल्ली बनाने के लिए चले गये। वहाँ रहने वाले प्रायः भगतू के साथ काम करने वाले मजदूर ही थे। उनमें से बहुत से भगतू के साथ गये और सायंकाल तक दोनों कुल्लियों की दीवारें और छतें बनकर तैयार हो गईं। अगले रविवार को दरवाजे लग गये तो ये लोग वहाँ जाकर रहने लगे। अब पुनः यहाँ पर सुख-आराम के लिए सामान जुटाया जाने लगा।

इससे एक बात यह हो गयी थी कि लालचन्द को अपने स्थान से पर्याप्त दूरी पर काम के लिए आना-जाना पड़ता था। सन्तू को भी विवार के दिन उस बस्ती तक जाने में कठिनाई होने लगी थी।

इस बस्ती में एक और विशेषता थी। यहाँ हिन्दू और मुसलमान दोनों समुदायों के लोग रहते थे। बस्ती तो हिन्दू मजदूरों ने ही बनाई थी, परन्तु बाद में एक मुसलमान ने भी अपनी झुग्गी वहाँ खड़ी कर दी। आरम्भ में आने वाले मुसलमान का नाम शहीदू था। जब वह कुल्ली बनाने लगा तो पहले रहने वालों को ठीक प्रतीत नहीं हुआ। इस पर भी वे मना नहीं कर सके। भूमि सरकारी थी। कुल्ली बनाने का सामान वह अपने पास से लाया था। और अपनी कुल्ली बनवाने के लिये वह भाड़े के मजदूर लाया था। वह वहाँ के रहनेवालों की सहायता नहीं ले रहा था। साथ ही जब कोई उससे पूछने आता था तो वह बहुत मीठा-बोलता था और अपने को उनके आश्रय रहने की बात करता था।

बस्ती का चौधरी एक सहतू नाम का राजगीर था। वह अपनी पत्नी और तीन लड़कों के साथ एक ही कुल्ली में रहता था। घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में चार प्राणी कमाते थे और सहतू की पत्नी खाना बनाती तथा घर का सब काम करती थी। यह परिवार धनी होता जा रहा था और अन्य बस्ती वालों को ऋण इत्यादि देकर सहायता भी करता रहता था। सहतू चौधरी था और सम्पन्न था।

जब शहीदू अपनी कुल्ली बनवा रहा था तो बस्ती वालों के कहने पर वह उससे पूछने जा पहुँचा। उसने देखा कि एक प्रौढ़ावस्था का हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति मजदूरों से काम ले रहा है। सहतू ने पूछ लिया, "भैया ! कहाँ काम करते हो ?"

"राजपुर वाले ठेकेदार शादीराम का जहाँ काम होता है, वहाँ जाता हूँ। आज कल तिमारपुर में सरकारी क्वार्टर बन रहे हैं। वहाँ मेट हूँ।"

"क्या नाम है ?"

"शहीदू।"

"कोई बाल बच्चे भी हैं ?"

"हाँ, खुदा का फज़ल है। बीवी है, दो लड़कियाँ और एक लड़का है।"

"तुम अकेले मुसलमान हो, इसलिये तुम्हें तकलीफ होगी।"

"हाँ, कुछ दिनों के लिये। खुदा की मेहर रही तो दोनों लड़कियों की शादी हो जायगी। फिर उनके लिये अलहदा कुल्लियाँ बनवानी होंगी। हम तीन हो जावेंगे। लड़का भी बहू लावेगा और चार हो जावेंगे। भैया ! बहुत देरी नहीं लगेगी, मैं अकेला नहीं रह जाऊँगा।"

इसमें सहतू को कुछ आपत्तिजनक नहीं लगा। उसने कह दिया, "ईश्वर भला करेगा। फलो-फूलो और उसके गुण गाओ।"

शहीदू ने कह दिया, "भैया ! जब खुदा के बन्दे एक-दूसरे के दुःख-दर्द में मदद देते हैं तो वह अपने बन्दों की मदद करता है।"

शहीदू की बात ठीक सिद्ध हुई। महीने में ही बस्ती में एक परिवार के स्थान चार मुसलमान परिवार और चार कुल्लियाँ हो गईं। शहीदू की लड़कियाँ और लड़के ने विवाह कर लिये थे और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलहदा-अलहदा कुल्लियाँ बनवा रहने लगे थे।

सबसे पहले शहीदू के लड़के रहमान ने विवाह किया। वह किसी दूसरी बस्ती की मुसलमान लड़की से निकाह पढ़ा लाया और पृथक् कुल्ली बना रहने लगा। रहमान की बीवी का नाम शबनम था।

शहीदू की कुल्ली सहतू की कुल्ली बगल में ही थी। और पहले ही दिन जब शहीदू अपने परिवार के साथ अपनी कुल्ली में रहने के लिये आया तो उसकी बड़ी लड़की वहीदन की दृष्टि सहतू के बड़े लड़के रामचन्द्र पर पड़ी। वहीदन उस समय पन्द्रह वर्ष की युवा लड़की थी और रामचन्द्र बीस वर्ष का युवा लड़का था। रामचन्द्र को तो वहीदन में कुछ विशेषता प्रतीत नहीं हुई। परन्तु वहीदन रामचन्द्र की गतिविधियों का ध्यान रखने लगी।

जिस दिन रहमान बीवी लेकर अपनी नई बनी कुल्ली में आया, उस दिन वहीदन को रामचन्द्र से बातें करने का अवसर मिल गया। रहमान की शादी के उपलक्ष्य में जशन रात देरी तक होता रहा और बस्ती के कई हिन्दुओं ने भी उस जशन में भाग लिया। सहतू की ओर से उनको दावत दी गई थी। प्रबन्ध सहतू ने करवाया था। जहाँ मुसलमान मेहमानों के लिये पुलाव की देग चढ़ी थी, वहाँ बस्ती के आमन्त्रित हिन्दुओं के लिये पूरी बनाने के लिये कढ़ाई चढ़ी थी।

खाना-पीना हो चुका था। सब अपनी-अपनी कुल्लियों में आराम करने चले गये थे। रामचन्द्र सोने से पहले दूर कूएँ के पास पेड़ के नीचे पेशाब करने के लिये गया तो वहाँ वहीदन खड़ी मिल गई। अंधेरे में रामचन्द्र ने पहचाना नहीं। उसने सतर्क हो पूछ लिया, "कौन है ?"

"एक खुदा की बन्दी।"

रामचन्द्र समझ गया कि खुदा का नाम लेने वाली तो कोई शहीदू के घर से ही हो सकती है। उसकी पत्नी अथवा लड़कियों में से कोई होगी। वह पेशाब करने के लिये दूसरी ओर चल पड़ा। इस पर वहीदन ने कहा, "जरा बात तो सुनिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बोलो।"

"जरा नजदीक आइये।"

"लेकिन तुम हो कौन ?"

"वहीदन।"

"मेट साहब की लड़की।"

"हाँ।"

"क्या चाहती हो ?"

"जो एक लड़की किसी लड़के से चाहती है। जब से हम यहाँ आये हैं, मैं तुमसे बात करने के लिये छटपटा रही थी। आज खुदा ने यह मौका दिया है। मैं तुमसे मोहब्बत करती हूँ।"

"बात तो ठीक है। मैंने भी तुम्हारी सूरत देखी है।"

"तो ठीक है।"

"पर यहाँ तो अंधेरा है।"

"तो अंधेरे में आपको दिखाई नहीं देता ?"

"मैं चमगादड़ हूँ क्या ?"

"जरा नजदीक आ जाइये, सब कूछ दीख जावेगा।"

इस प्रकार बना सम्बन्ध कुछ दिन तक तो चोरी रहा, किन्तु एक दिन रहस्य खुल ही गया।

: ७ :

बात इस प्रकार हुई कि एक रात सहतू एक बजे पेशाब करने के लिए उठा और उसने बीड़ी पीने के लिए माचिस जलाई, तो तीन लड़कों में से एक का सोने का स्थान खाली देखा। पहले तो सहतू ने सोचा कि कहीं पेशाब करने के लिए गया होगा। परन्तु जब देर तक प्रतीक्षा करने के बाद भी वह नहीं आया तो उसने दीपक जला दिया और अपनी पत्नी तथा अन्य लड़कों को उठाकर रामचन्द्र के लापता होने की बात बता दी।

उसने पूछा, "किसनू ! रामचन्द्र किधर गया है ?"

"बापू ! सो जाओ, वह अभी आ जाएगा।"

"कहाँ गया है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसनू बताना नहीं चाहता था; परन्तु पिता के बार-बार पूछने पर वह बक गया। उसने बताया, "यह साथ की झोंपड़ी में शहीदू की लड़की वहीदन है न, उसके साथ उसकी अशनाई हो गई है।

"एक महीने से ऊपर हो गया है। कभी-कभी वह रात के बारह बजे अपनी कुल्ली से निकल आती है और हमारी कुल्ली के बाहर आकर खटाक करती है। इस पर रामचन्द्र उठ कर बाहर चला जाता है। वह एक घंटे में लौटा करता है, आज देर हो गई होगी।"

"तुमने पहले क्यों नहीं बताया ?"

"मेरा भी चित्त किसी में लगा हुआ है।"

"किसमें लगा हुआ है रे ?"

"वह शीतलू मेट है न, उसकी लड़की में।"

"तो तुम भी रात को उठ कर उससे मिलने के लिये जाया करते हो ?"

"नहीं बापू ! वैसे नहीं। मैं तो उसके साथ शादी करूँगा।"

यह सब सुन सहतू तो भौंचक्का-सा रह गया। उसे चुप देख पत्नी ने पूछ लिया, "अब क्या करोगे ?"

"यह रामचन्द्र वाली बात तो भयंकर प्रतीत होती है। न जाने कितना झगड़ा बढ़ जाय !"

लछमी ने कहा, "झगड़ा क्यों होगा ? रामचन्द्र का किसी हिन्दू लड़की से विवाह कर दो और उसके लिए एक अलग कुल्ली बनवा दो। यह हो जाय तो फिर किसनू का भी विवाह हो जायेगा।"

"तुम इसको सरल बात समझती हो। मेरे लिए यह बहुत कठिन प्रतीत हो रही है। जिसको इस प्रकार चोरी-चोरी माल खाने की लटक लग जाती है, उसको फिर सब संसार फीका लगने लगता है। यदि उसको मना किया तो झगड़ा होगा। शहीदू को पता चल गया, तो कत्ल हो जाने में भी शक नहीं।"

"तो फिर क्या करोगे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ समझ में नहीं आ रहा है।"

इस समय रामचन्द्र कुल्ली में आ गया। उसके आते ही बाप ने पूछा, "कहाँ गये थे राम ?"

रामचन्द्र आज कुलिया में बत्ती जली देख और सब को जागा हुआ पा विस्मय में मुख देखता रह गया। उसने कहा, "बाबा ! अब सो जाओ। सुबह बताऊँगा।"

"अभी क्यों नहीं ?"

"व्यर्थ में हो-हल्ला होगा।"

"नहीं राम ! मुझको नींद नहीं आयेगी। वास्तव में किसनू ने तो बताया है। क्या वह सब ठीक है ?"

रामचन्द्र ने किसनू का मुख देखा। वह आँखें नीची किये बैठा था। इस पर रामचन्द्र ने किसनू से पूछ लिया, "क्या बताया किसनू ?"

"सब कुछ बता दिया है और अपने मन की बात भी बता दी है।"

इस पर सहतू ने कह दिया, "राम ! यह तो अधर्म हो गया।"

"हाँ बापू ! पर क्या करूँ ? बस नहीं चलता। जब से यह वहीदन यहाँ आई है, यह सदा मेरी ओर देख कर मुस्कराया करती थी। एक दिन वह मुझे कुएँ पर अकेले में मिली तो कहने लगी कि उसे मुझसे मुहब्बत हो गई है। मैंने कहा, "लगती तो मुझको भी अच्छी हो।" इस पर वह कभी-कभी रात में आकर हमारी कुल्ली के बाहर हल्की आवाज करती है और मैं उसे सुन कर चला जाता हूँ।

"पहली ही रात वह मुझे उस पीपल के पेड़ के नीचे ले गई। वहाँ उसने मुझसे प्यार किया और मैं अपने को रोक नहीं सका। शहीदू हफ्ते में दो दिन शराब पीता है और अपनी पत्नी के साथ सोता है। तब वहीदन उठ कर यहाँ चली आती है। तब हम उसी पीपल के नीचे घण्टा भर बैठ कर चले आते हैं।

"बापू ! अब तो मुझसे भी उसके बिना रहा नहीं जाता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहादन ने सारी बात अपनी माँ को बता दी है और वह हमको विवाह कर लेने के लिए कह रही है। उसका विचार है कि मैं उनकी कुलिया के समीप एक कुल्ली बनवा लूं, तब हम दोनों का विवाह हो जायेगा।"

"परन्तु रामचन्द्र ! वह तो मुसलमानिन है, उसके साथ विवाह किस प्रकार करोगे ?"

"बाबा ! यह तो उसके विचार करने की बात है। लड़की उसकी है और उसे हमारे घर में आना है।"

"परन्तु तुम तो मुसलमान हो जाओगे ?"

इस कथन से विस्मय में रामचन्द्र अपने बाप का मुख देखता रह गया। फिर कुछ विचार कर वह कहने लगा, "मैं कैसे मुसलमान हो जाऊँगा ?"

"तुम मुसलमान की लड़की के साथ रहोगे। फिर तुम्हारे बाल बच्चे होंगे, वे सभी तो मुसलमान हो जायेंगे।"

"नहीं होंगे बाबा ! वे मुसलमान नहीं होंगे।"

यह बात सहतू की समझ में नहीं आई। इस पर भी वह चुप-चाप बैठा नहीं रह सका। उसने कह दिया, "राम ! तुम इस लड़की को छोड़ दो। मैं तुम्हारा विवाह शीघ्र किसी हिन्दू लड़की से कर दूँगा।"

"नहीं बापू ! विवाह तो इसी से होगा। मैं इसको छोड़ नहीं सकता।"

"अगर मैं न मानूं तो ?"

"मुझे तुम्हारा घर तो छोड़ना ही है। चाहे विवाह इससे हो अथवा किसी अन्य से।"

सहतू के मस्तिष्क में घर छोड़ने की बात नहीं थी। वह तो धर्म छोड़ने की बात पर विचार कर रहा था। इस पर उसकी पत्नी लछमी ने कह दिया, "मुसलमान तो तुम पहले ही हो गये हो। मुसल-मान लड़की से मिले हो। उसको प्यार किया है। मुसलमान तो हो ही गये हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहतू चाहता था कि यह बात अभी न कही जाय। उसको अपने पुत्र से बिछुड़ते हुए दुःख हो रहा था। उसने कह दिया, "यह कैसे हुआ ? लोग रंडियों के पास जाते हैं तो क्या वे मुसलमान हो जाते हैं ?"

इसका उत्तर लछमी के पास नहीं था। वह मौन रही। इस पर रामचन्द्र ने आश्वासन देते हुए कहा, "बापू ! मैं मुसलमान नहीं बनूंगा।"

एक दिन चुपचाप रामचन्द्र का वहीदन से निकाह पढ़ दिया गया। दोनों का विवाह शहीदू की कुल्ली में हुआ। लिखा-पढ़ी हुई और दोनों मियाँ-बीवी नई कुल्ली में जाकर रहने लगे।

सहतू ने बात छिपा कर रखी थी। उसने बस्ती में किसी को कानों-कान पता भी नहीं चलने दिया। लिखा-पढ़ी तो मुल्ला ने की थी और उसने क्या लिखा, क्या नहीं, किसी को विदित नहीं हुआ। चुपचाप रामचन्द्र का नाम रहीम लिख दिया गया।

अगले दिन बस्ती वालों को पता चल गया कि सहतू के लड़के का निकाह शहीदू की लड़की वहीदन से पढ़ा गया है; इसके साथ ही यह बात विख्यात हो गई कि रामचन्द्र मुसलमान हो गया है। सब यही कहते थे। सहतू इसका उत्तर देना नहीं चाहता था। साथ ही रामचन्द्र और उसकी बीवी दोनों उसकी कुल्ली में आते रहते थे। इससे बस्ती वालों की समझ में यह आया कि वह भी मुसलमान हो गया है और उसके साथ ही उसका सारा परिवार भी।

इसका सबसे पहला परिणाम यह हुआ कि सहतू जब किसनू के विवाह के लिए सीतलू मेट से कहने गया, तो उसने स्पष्ट शब्दों में कह दिया—"मुसलमान के लड़के से अपनी लड़की का विवाह नहीं कर सकता।"

घर आ सहतू ने अपने लड़के किसनू को बताया कि उसका विवाह यहाँ बस्ती में तो नहीं हो सकता। इस पर किसनू को बहुत दुःख हुआ। उसने बताया, "बापू ! मैं तो सीतलू की लौंडिया से ही विवाह करना चाहता था। परन्तु अब इस अवस्था में तो मेरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह किसी हिन्दू लड़की से हो ही नहीं सकता। इधर शहीदू मुझ से कह रहा है कि मैं उसकी छोटी लड़की से विवाह कर लूँ। मैंने उससे कहा भी था कि वह तो अभी बहुत ही छोटी है। इस पर उसने बताया कि वह पूरे तेरह वर्ष की हो गयी है।"

अब सहतू इस विवाह का उतना भी विरोध नहीं कर सका, जितना रामचन्द्र के विवाह के समय किया था। परिणाम यह हुआ कि शहीदू की दूसरी लड़की का भी विवाह हिन्दू लड़के से हो गया। किसनू का नाम करीम रख दिया गया। इस प्रकार इस बस्ती में तीन नयी मुसलमानों की कूलियाँ बन गयीं।

: ८ :

जब भगतू और लालचन्द ने वहाँ अपनी कुल्लियाँ बनवाईं और वे आकर रहने लगे, तो उस समय तक वहाँ पाँच मुसलमानों के परिवार रहने लग गये थे। ये थे—शहीदू, रहमान, रहीम, करीम और पाँचवाँ सहतू, जो बिना मुसलमानी नाम के ही मुसलमान समझ लिया गया था।

भगतू और लालचन्द ने अपनी कुल्लियाँ उस ओर बनाने का निश्चय किया, जिस ओर सहतू की कुल्लियाँ थीं। जब कुल्लियाँ बनने लगीं तो भगतू के साथ काम वाले एक मजदूर ने उसको बताया, "तुम इस ओर अपनी कुल्ली न बना कर मेरी कुल्ली के पास बनाओ।"

"परन्तु तुम्हारा स्थान तो नीचा है। सब कुल्लियों का पानी बह कर उस ओर जाता है।"

"किन्तु जिस ओर तुम बनवाने लगे हो वहाँ मियाँ लोग रहते हैं।"

"तो वे क्या कहते हैं?"

इस पर भगतू के साथी ने सहतू और उसके लड़कों की कहानियाँ सुना दीं। भगतू को इससे चिन्ता अवश्य लगी थी। परन्तु अब तक कुल्लियों पर चालीस के लगभग रुपये व्यय हो चुके थे। उस दिन भगतू कुल्लियों के स्थान पर पहुँचा तो रामी माँ और मनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुल्लियों पर पड़ने वाली छतों को देख रही थीं। मोहिनी उनके पास खड़ी किसी गम्भीर विचार में निमग्न थी।

भगतू ने रामी माँ को अपने साथी की कही घटना सुना दी। रामी माँ, जब से देवी लापता हुई थी, जीवन में रस खो बैठी थी। वह सहतू की पत्नी से मिली थी। वह बेचारी धर्म-कर्म में लीन भगवान् में चित्त लगाने वाली स्त्री थी। न तो रामी ने उससे उसकी जीवन कथा के विषय में पूछा था, और न ही लछमी ने अपने लड़कों और उनकी पत्नियों के विषय में कुछ बताया था।

अब भगतू की बात सुनी तो वह चिन्तित मन खड़ी रह गई। इस समय तक कुल्लियों में काम करने वालों ने अपना काम समाप्त कर दिया था। उन्होंने बताया, "अब मिट्टी इत्यादि भूमि पर डाल, पोताई करनी रह गई है। कहो तो कल आ जायें ?"

"नहीं, तुम अपनी मज़दूरी लो और शेष काम हम स्वयं कर लेंगे।"

इस प्रकार मज़दूरों को उनकी मज़दूरी देकर विदा कर दिया गया। रामी ने कुल्लियों के द्वार बन्द कर उन पर ताला लगा दिया। अभी उनका सामान यहाँ नहीं आया था। तीनों किनारी बाजार की ओर, जहाँ वे आजकल रह रहे थे, चल पड़े। यह विचार था कि अगले दिन रामी माँ और मनकी अपना-अपना सामान गठरियों में बाँध यहाँ ले आयेंगी और भगतू अकेला काम पर जायेगा। लालचन्द तो दुकान पर नौकर था। उसे छुट्टी नहीं मिल सकती थी।

मार्ग में रामी भगतू के कथन पर विचार करती रही। मनकी तो कोई लम्बा-चौड़ा विचार कर नहीं सकती थी। वह चुपचाप अपने पति और रामी माँ की बातें सुन रही थी। रामी माँ ने दूसरी बार सहतू और उसके लड़कों की कथा सुन, अपना विचार बता दिया। उसने कहा, "भगत भैया ! मुझे तो कोई खराबी नहीं प्रतीत हुई। सहतू के लड़कों की बात तो मुझे विदित नहीं। उनकी बीवियाँ आई थीं। हमारा नाम और तुम लोगों का काम पूछ कर चली गईं। उनको देख कर तो मैं जान नहीं सकी कि वे हिन्दू हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा मुसलमान। हाँ सहतू की पत्नी बहुत कुछ बताती रही है। वह तो बात-बात पर भगवान् की इच्छा, अपने भाग्य और धर्म-कर्म की बात बताती है। वह तो मुझे सोलहों आने हिन्दू प्रतीत हुई है।

"मैं समझती हूँ कि हमको अपना घर सम्भाल कर रखना चाहिए। चोर तो संसार-भर में घूमते रहते हैं। देखो न, दो मिनट की भूल से मैं कहाँ की कहाँ पहुँच गई हूँ। कहाँ मैं देवी के विवाह, उसके बाल-बच्चों से अपने परिवार की वृद्धि के स्वप्न देख रही थी और अब कहाँ वृद्धावस्था तक ऐसे ही एकाकी जीवन व्यतीत करने की सम्भावना पर विचार कर रही हूँ। अब तो तुम्हारे सन्तू को देख-देख कर ही मन में कुछ धैर्य होता है। परन्तु मनकी ! बच्चों का जब विवाह हो जाय, बहू घर में आ जाय, तब ही अपने भविष्य के विषय में अनुमान लगा सकती हूँ। उससे पूर्व तो सब कुछ स्वप्नमात्र ही है।"

भगतू अपनी लड़की मोहिनी के भविष्य की बात पर विचार कर रहा था। मोहिनी अब बारह वर्ष की होने जा रही थी। एकाध वर्ष में वह विवाहने योग्य हो जायेगी। तब से पूर्व ही वह उसका हाथ किसी को पकड़ा देना चाहता था। इससे रामी के कहने में उसको कुछ भी अरुचिकर प्रतीत नहीं हुआ था।

अगले दिन अपने निश्चित कार्य-क्रम के अनुसार मनकी, रामी माँ, मोहिनी और सन्तू सामान उठा कर अपनी नई कुल्लियों में आ गये। सोमवार का दिन था, भगतू काम पर गया हुआ था। सन्तू अपनी ललाइन से आधे दिन की छुट्टी ले आया था। लालचन्द सदा की भाँति दुकान पर चला गया था।

शहीदू छुट्टी पर था और उसका लड़का भी। अतः वे अपनी-अपनी कुल्लियों के बाहर खड़े हो इन नवागन्तुकों को देखने लगे।

सहतू और उसकी पत्नी लछमी भी, बाहर निकल कर आ गये। लछमी रामी के पास आकर पूछने लगी, "तो तुम लोग आ गये हो ?"

"हाँ, मर्द लोग तो काम पर गये हैं, उनके आने तक हम यहाँ पर ठीक-ठाक कर लेंगी। कुल्लियों में अभी कुछ काम बाकी है। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाम तक पूर्ण हो जायेगा।"

"मैं तुम्हारी सहायता कर दूँगी। तुम सामान रखो और अभी थोड़ी देर में भूमि कूट कर पोताई हो जाती है।"

"तुम्हें कष्ट करने की आवश्यकता नहीं बहिन! देखते-देखते हम सब ठीक कर लेंगे।"

इस पर भी लछमी उनकी सहायता करती रही। सहतू के लड़के भी काम पर गये हुए थे। उनकी बीवियाँ अपनी-अपनी कुल्लियों के बाहर खड़ी हो तमाशा देख रही थीं।

अगले दिन जब सबके घर वाले अपने-अपने काम पर चले गये तो शहीदू की बीवी और उसकी दोनों लड़किया तथा बहू रामी के पास आ कर बैठ गईं। रामी अपने स्वाभावानुसार अपनी कुल्ली के बाहर भूमि साफ कर, उस पर बैठी मोहिनी को रोटी बनाने के लिए कह रही थी कि पहले सहतू की पत्नी आई। फिर अन्य स्त्रियाँ वहाँ आकर बैठ गईं।

रामी ने लछमी से पूछ लिया, "खाना खा लिया है बहिन?"

"नहीं, अभी नहीं। बना तो मैं घर वालों के काम पर जाने से पहले ही लेती हूँ। वह कुछ खा जाता है और कुछ साथ में ले जाता है। मैं पीछे नहा-धोकर पूजा करती हूँ। अब पूजा से छुट्टी पाई है तो पूछने के लिए आई हूँ कि रामी माँ ने खाया है अथवा नहीं?"

रामी ने कहा, "मेरा ढंग दूसरा है। वे तो दोपहर का खाना वहीं लालाजी के यहाँ खाते हैं। प्रातः का कलेवा रात ही बना कर रख देती हूँ। सवेरे वह कर लिया है। अब स्नान और जप आदि करके निवृत्त हुई हूँ। मोहिनी खाना बनाने लगी है। बन जाएगा तो खा लेंगे।"

इस हर शहीदू की पत्नी सईदन ने पूछ लिया, "यह मोहिनी तुम्हारी बेटी है या इन दूसरी कुल्ली वालों की?"

"नहीं, यह मेरी नहीं, हमारे पड़ोसी भगतू भैया और मनकी बहिन की बेटी है। हम इससे पहले भी साथ-साथ ही रहते थे। इसलिए दोनों में प्रेम हो गया है। मुझे यह अपनी लड़की की भाँति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही प्यारी लगती है।"

इस समय रहीम और करीम की बीवियाँ भी वहाँ आ गईं। वे दोनों खाना खाकर आई थीं। उनका तरीका था कि रात को ही हँडिया चढ़ जाती थी। रात-भर खाना पकता रहता था, प्रायः उठ नित्यकर्म से निवृत्त हो वे खाने बैठ जाते थे। उनके घर वाले खाना खा कर अपने-अपने काम पर चले जाते थे और औरतें खाकर बर्तनों को एक ओर धकेल देती थीं। फिर बैठी बातें बनाया करती थीं। वहीदन और रहमान की बीवी शबनम तो जब भी बैठ जाती थी, अपने घर वालों की अच्छी-बुरी बातें बताया करती थी। करीम की बीवी नसीम को उनकी बातें नहीं भाती थीं। कभी उसकी बहिन वहीदन उससे पूछने का इसरार भी करती, तो वह आँखें नीची कर चुप रह जाती। इससे दोनों बड़ी लड़कियाँ भाँति-भाँति की आशंकाएँ किया करती थीं। नसीम इन से कतराती रहती थी।

आज एक नई पड़ोसिन की बातें सुनने वहीदन और शबनम आईं तो नसीम भी आ बैठी। सईदन कह रही थी, "मोहिनी तो अब विवाहने लायक हो गई है।"

"अभी तो यह बच्ची ही है, अभी कपड़े आने भी शुरू नहीं हुए।"

"छाती तो उभर रही है।"

"हाँ, कई लड़कियों के यह पहले निकल आती है। यह तो अभी ग्यारह ही वर्ष की है।"

"हमारी इस नसीम की उमर साढ़े ग्यारह वर्ष की थी, जब इसकी शादी हो गई थी। इसके भी कपड़े अब आने लगे हैं।"

"तो तुमने इसकी इतनी जल्दी शादी क्यों कर दी?"

"बात यह है कि वहीदन का देवर करीम जवान हो गया था। उस के विवाह की चर्चा चली तो कोई हिन्दू उसको अपनी लड़की देना नहीं चाहता था। वे समझने लगे थे कि यह मुसलमान हो चुका है। नसीम के बाप ने समझा कि लड़का कहीं खराब न हो जाय, इसलिए अपनी लड़की देनी कबूल कर ली।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय वहीदन ने अपनी शंका का वर्णन कर दिया। उसने कहा, "माँ, मुझको तो ऐसा लगता है कि यह अभी तक अपने खाविन्द से मिली भी नहीं है।"

"कैसे मालूम होता है ?" माँ ने पूछा।

नसीम की आँखें झुक गईं। उसके गालों पर लाली छा गई। वहीदन ने बताया, "हमने इससे कई बार पूछा है कि करीम भैया रात को क्या करते हैं, क्या कहते हैं और इसको कैसा महसूस होता है ? इस बारे में यह एक लफ्ज़ भी तो नहीं कहती। चुप कर जाती है और हम बहुत कहते हैं तो यह रो देती है।"

रामी नसीम के मुख पर देख रही थी। वह उसकी आँखों में हया और गालों की लाली में पति के सुख की झलक समझ रही थी। उसने इस विषय की बात को बदल दिया।

रामी ने कहा, "वहीदन बिटिया की बात गलत मालूम देती है। देखो बहिन सईदन! मोहिनी का विवाह अभी दो वर्ष के बाद करेंगे। यों तो विवाह के समय मेरी आयु सात वर्ष की थी। मेरे माता-पिता मेरे विवाह से पहले ही फौत हो चुके थे। इस वजह से विवाह होते ही मैं ससुराल चली गई। मेरी सास मुझे अपने साथ सुलाती थी और मेरा घर वाला भँवरे की भाँति मेरे चारों ओर मँडराता रहता था। वह उस वक्त चौदह वर्ष का हो चुका था।

"मेरी सास मेरे विवाह के तीन वर्ष बाद परलोक सिधार गई। तब मैं अपने घरवाले के पल्ले पड़ी। हमारी पहली मुलाकात बहुत ही कष्टकारक हुई थी। अब भी मैं उस दिन की बात स्मरण कर रो पड़ती हूँ। फिर आहिस्ता-आहिस्ता जिन्दगी में मिठास आती गयी। अब हमारे विवाह को बीस वर्ष हो गये हैं। अपने घरवाले के खिलाफ मुझे कुछ भी शिकायत नहीं है।"

: ६ :

रामी माँ भगतू के इस कथन पर कि सहतू के लड़के तो मुसलमान हो गये हैं, साथ ही बस्ती के सब लोग सहतू और उसकी पत्नी को भी मुसलमान समझते हैं, विचार करती रहती थी। उसको कई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन लछमी, सहतू और उनके अविवाहित पुत्र मंगल के रहन-सहन और उनके विचारों को जानने लगे। उनका यह दृढ़ मत था कि ये तो मुसलमान नहीं हो सकते। इसके पश्चात् वह सहतू के लड़कों और उनकी पत्नियों की बातों को समझने लगी। उसको वहीदन तो एक कामातुर युवती ही प्रतीत हुई थी। नसीम उससे भिन्न स्वभाव की थी।

जब से रामी ने उसके सामने अपने विवाहित जीवन के आरम्भ की बात बताई थी, नसीम रामी माँ को अपनी माँ और बहिनों से अधिक अपने समीप समझने लगी थी। अब वह उसके पास आकर बैठ जाती और उसके साथ इधर-उधर की बातें कर जी बहलाया करती थी। एक दिन, जब रामी और वे अकेली बैठी थीं, तो नसीम ने अपनी बड़ी बहन की बात बता दी। उसने बताया, 'वहीदन मुझसे बड़ी हैं, रहमान उससे भी बड़ा है। मेरे और वहीदन के बीच हमारा एक और भाई था। वह फौत हो चुका है।

"पिछले वर्ष बहिन सोलह साल की हो गई थी और उसका विवाह नहीं हो रहा था। हमने इस जगह कुल्ली बनाई तो उसकी नजर जीजा पर पड़ी। दोनों में विवाह से पहले ही मेल-जोल हो गया था। वहीदन रात को मेरे साथ सोया करती थी। जब मैं सो जाया करती तो वह मेरे पास से उठ कुल्ली से बाहर निकल जाया करती थी।

"एक दिन वह लौट कर आई तो मेरी नींद खुल गई। उसको बिस्तर में घुसते देख मैंने पूछा, 'कहाँ गई थी ?'

"वह बोली, 'कहीं नहीं, सो जाओ।'

'गई तो थी। मैं एक घंटे से तुम्हें टोह रही थी।'

"इस पर उसने कस कर मुझे छाती से लगाते हुए मेरा मुख चूम लिया। फिर उसने बताया, 'मैं अपने लिए खाविन्द ढूँढने गयी थी।'

'कहाँ ?'

'यह लछमी के लड़के को। बहुत अच्छा है वह !'

'अब्बा को पता चला तो वे पीटेंगे।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'उनको पता है, बहुत जल्दी मेरी शादी हो जाएगी।'

'पर शादी से पहले तुम उससे मिलती क्यों हो ?'

'वह हिन्दू है न ! अब्बाजान कहते थे पहले उससे मोहब्बत करो, फिर वह भी मुसलमान हो जायेगा।' "

इस पर रामी ने पूछा, "तो वह मुसलमान हो गया है क्या ?"

"अब्बाजान और मुल्ला ने तो उसका नाम रहीम रख दिया है।"

"नाम बदल जाने से ही क्या वह मुसलमान हो गया है ?"

"अब्बाजान कहते हैं और यहाँ बस्ती के बाकी सब लोग भी यही कहते हैं। लछमी यही समझती है और अब तो उसके हाथ का उसके माँ-बाप भी नहीं खाते।"

"क्या कहते हैं वे ?"

"वे कहते हैं कि वह पतित हो गया है। पहिले आबदस्त लेने के बाद मिट्टी से हाथ धोता था, अब नहीं धोता।"

"तो अब हाथ साफ नहीं करता वह ?"

"करता है, मगर मिट्टी से नहीं पानी से सिरफ।"

"तुम्हारा घरवाला कैसे साफ करता है ?"

"वह तो साबुन ले आया है। वह आबदस्त के बाद साबुन से हाथ सफा कर लेता है। वह रोज कुएँ पर जा कर नहाता है, मुझे पानी भर कर दे जाता है और नहाने तथा साबुन लगाने के लिए इसरार करता है।"

"और तुम यह सब करती हो ?"

"हाँ, रामी माँ ! जब वे कहते हैं तो मैं करती हूँ। इस तरह साफ़-सुथरे रहने में लुत्फ भी आता है।"

"तुम नमाज पढ़ती हो क्या ?"

"नहीं हम तीनों भाई-बहिनों को अब्बाजान ने सिखाई थी। मगर एक दिन एक मुल्ला ने पढ़ते सुना तो उसने कह दिया, "यह बिल्कुल गलत है।" तब से हमने नमाज पढ़नी छोड़ दी है। मुझे तो अब नमाज पढ़ने की जरूरत भी महसूस नहीं होती।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामी माँ उसकी कुल्ली में गई और उसको वहीदन की कुल्ली से अधिक साफ-सुथरी पा बोली, "नसीम ! तुम बहुत अच्छी हो।"

इससे नसीम की आँखों की चमक बढ़ गई। उसके मुख पर मुस्कराहट दौड़ गई। नसीम की कुलिया में दो पृथक्-पृथक् बिस्तर रखे थे। वे इस समय लपेटे हुए थे और इन पर चादर पड़ी हुई थी।

"तो तुम पृथक्-पृथक् सोते हो ?"

नसीम चुप रही। रामी को कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि नसीम अपनी बहिन से कुछ अधिक समझदार है और चरित्र की बात समझती है। वह यही विचार कर रही थी कि एक ही माँ-बाप की दो बेटियाँ हैं। एक सर्वथा पशु है और दूसरी बहुत सीमा तक इन्सान। रामी ने उसके मनकी बात स्पष्ट जानने के लिए मुस्कराते हुए पूछ लिया, "तो वहीदन ठीक कहती है कि···"

"रामी माँ ! यह बात नहीं। वहीदन की तो बहशियाना तबीयत है। वह दिन-रात अपने खाविन्द के साथ लेटी रहती है। हमको यह पसन्द नहीं। मेरे अब्बाजान भी कुछ वैसी ही तबीयत के हैं। वे शराब पीते हैं और शराब पीकर तो अपने लड़के और लड़कियों से भी शर्म हया नहीं करते। पहले तो मैं समझती नहीं थी कि वे क्या कहते और करते हैं। कुछ-कुछ बात तो वहीदन के बताने पर समझ में आने लगी थी, बाकी अब आने लगी है।

"मेरा घर वाला कहता था कि उसने अपनी माँ और बाप को कभी इकट्ठे सोये नहीं देखा। इस पर भी वे मिलते तो होंगे। मैं समझती हूँ कि उनमें अपनी तबीयत पर कमाल का काबू है। हमने भी अपने में वैसी बात पैदा करने का फैसला किया है।"

इस पर रामी माँ बोली, "मुझे तो तुम बहुत ही अच्छी और हिन्दू लड़की जैसी ही लगी हो।"

"मेरे घर वाले भी यही कहते हैं, परन्तु यहाँ के सब लोग तो हमें मुसलमान ही समझते हैं।"

"वे सब मूर्ख हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो क्या तुम मेरे हाथ का बना खा सकती हो ?"

"हाँ, पर मैं मोटा मांस नहीं खाती। न ही खाने वाले के साथ बैठकर खा सकती हूँ।"

"अब्बाजान कहते थे कि अब तो बड़े-बड़े हिन्दू भी यह खाने लगे हैं।"

"हाँ, सुना तो मैंने भी है। देखो, हिन्दुओं में जैन नामक एक सम्प्रदाय है। पहले मांस खाना तो पृथक्, वे इसे दूर से देख भी नहीं सकते थे। सुना है, अब जैनी नवयुवक माँस, मछली अण्डा, मुर्गी खाने लगे हैं। इस प्रकार विलायत हो आये हिन्दू तो गो-मास भी खा जाते हैं। परन्तु मैं तो माँस ही नहीं खाती।

"फिर मैं तो अपने मन के भाव बता रही हूँ। न तो मैं माँस-मछली इत्यादि अथवा गो-मांस खाने वाले को अहिन्दू समझती हूँ, न ही किसी के कहने से किसी को हिन्दू-अहिन्दू मानती हूँ।

"मेरे विचार में तो हिन्दू होने के लिए शुचि-धर्म तथा इन्द्रियों का दमन आवश्यक हैं।"

"ये क्या होते हैं ?" नसीम ने पूछा।

"जो तुम कर रही हो ? शौच याने पाक-साफ़ रहना, बोलना और सोचना एक बात है। अपनी ख्वाहिशात पर काबू पाना, अपने बोल और कामों पर काबू रखना दूसरी बात है। ऐसा करने वाले को हिन्दू कहते हैं।"

"कोई मुसलमान भी तो ऐसा हो सकता है ?"

"मैं उसे हिन्दू ही समझती हूँ।"

"परन्तु अन्य तो कोई उनको ऐसा नहीं मानता।"

"ऐसे ही जैसे मूर्ख लोग तुमको हिन्दू नहीं मानते और तुम्हारे श्वसुर को जो सब तरह से हिन्दू हैं, लोग मुसलमान मानते हैं।"

"तो नाम रखने से कोई हिन्दू और मुसलमान नहीं हो जाता ?"

"नहीं, यह बात भी गलत है।"

"अब्बाजान एक दिन रहमान से कह रहे थे कि जो पाँच बार नमाज पढ़ता है, वह मुसलमान है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब तो तुम्हारे अब्बाजान भी मुसलमान नहीं हुए। और न रहमान, न तुम ही मुसलमान हो। पर मैं इस बात को भी मुसलमान और हिन्दू में फरक वाली नहीं मानती।"

"तो तुम अब्बाजान को क्या मानती हो ?"

"मैं उसको हिन्दू नहीं मानती। मैं रहमान और रहीम को भी हिन्दू नहीं मानती, परन्तु तुमको हिन्दू मानती हूँ।

"एक दिन जीजाजी ने जीजी से कहा कि वह हिन्दू हो जाय। यहाँ एक आर्य समाज बना है, जो मुसलमानों को हिन्दू बनाता है। जीजी ने अब्बाजान से पूछ लिया। इस पर अब्बाजान आर्य समाजियों को गालियाँ देने लगे। जीजी ने जीजा से कह दिया कि वह आर्य समाज में नहीं जायेगी।"

रामी माँ मुस्कराई और बोली, "हाँ, एक आर्यसमाजी से मेरी बात भी हुई थी। मैं सोचती हूँ कि हिन्दू तो अपनी करनी से बनता है। वहाँ तो सिर्फ मान्यता दी जाती है। देखो, मेरे घरवाले लाला बनवारी लाल की नौकरी करते हैं। वे लाला स्कूल कालेज में कहीं भी नहीं पढ़े। मगर पढ़े-लिखों के कान कतर लेते हैं। उनका लड़का कानून की परीक्षा पास है और बाप बहुत-सी बातें लड़के से ज्यादा जानता है। दरअसल बात यह है कि उसने हकीकत में पढ़ा है।

"इसी तरह तुम हिन्दू हो। हाँ, स्कूल कालेज में इम्तिहान पास न करने की तरह तुमको हिन्दू होने का सर्टिफिकेट नहीं मिला।

"कई स्कूल-कालेज ऐसे भी हो सकते हैं, जहाँ रियायती सर्टिफिकेट मिल जाते हैं। यही बात आर्यसमाज की हो सकती है। यदि तुम्हारी जीजी और जीजा आर्यसमाज में जाकर हिन्दू हो जाते तो आर्यसमाज उस स्कूल-कालेजों की भाँति होता जो रियायती सर्टिफिकेट देती है।

"पहले कर्म से हिन्दू होने पर बाद में सर्टिफिकेट मिलना ठीक हो सकता है।"

"लाला बनवारी लाल की भाँति बिदा पढ़े-लिखे कानून की बात जानने वाले लोगों के समान ही तुम हिन्दू हो। बनवारीलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत समझदार और पढ़ा-लिखा तो है, परन्तु वह कहीं नौकरी नहीं पा सकेगा। उसके पास सर्टिफिकेट नहीं है। इस प्रकार तुम हिन्दू तो हो, परन्तु तुम दूसरों के द्वारा हिन्दू नहीं मानी जाओगी। जब तक किसी से तुमको हिन्दू होने का सर्टिफिकेट न मिल जाय।

"परन्तु रहीम और रहमान को हिन्दू बनाना तो रियायती सर्टिफिकेट देने के समान हो जाता। यदि आर्यसमाज उनको हिन्दू होने का सर्टिफिकेट दे देता तो वह रियायती पास करने वाले स्कूल-कालेज की तरह खुद बदनाम हो जाता।"

: ६ :

नसीम को रामी की सब बातें विचित्र प्रतीत हुईं। अभी भी उसके मन में बात स्पष्ट नहीं हुई थी। दोनों कुल्ली के बाहर आ गईं। लक्ष्मी रामी की कुल्ली के बाहर बैठी थी। वह इन दोनों को कुल्ली से बाहर निकलते देख विस्मय करने लगी। जब वे दोनों उसके समीप आ गईं तो लक्ष्मी ने पूछ लिया, "क्यों, क्या हो रहा था वहाँ ?"

इसका उत्तर नसीम ने दिया, "रामी माँ कह रही हैं कि मैं तो हिन्दू हूँ।"

लक्ष्मी यह हिन्दू-मुसलमान के झमेले को समझ नहीं सकती थी। बस्ती के सब लोग तो उसको भी मुसलमान कहते थे। और यह रामी नसीम को भी हिन्दू कहने लगी थी। वह प्रश्न भरी दृष्टि से रामी का मुख देखने लगी। रामी ने कुछ कहने की अपेक्षा लक्ष्मी से पूछा, "लक्ष्मी ! तुम हिन्दू हो अथवा नहीं ?"

"मैं तो हिन्दू हूँ। मैं अपने भगवान को साक्षी रख कर कह सकती हूँ कि मैं अपने 'जप-सत' पर कायम हूँ। परन्तु रामी ! ये सब लोग जब मुझको मुसलमान कहते हैं तो मेरे अपने मन में सन्देह उत्पन्न होने लगता है कि ये ठीक हैं या मैं ठीक हूँ।"

"दूसरे तुमको मूर्ख समझें तो तुम भी स्वयं को मूर्ख समझने लगोगी क्या ? देखो लक्ष्मी ! यह धर्म-कर्म की बातें तो अपने मन और आत्मा से सम्बन्ध रखती हैं। तुम बहुत अच्छी हो। परमात्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का नित्य नाम लेती हो। मन-वचन-कर्म से सत्य विचारती हो, कहती और करती हो। तुम शरीर, मन और आत्मा में सफाई रखती हो, तुम हिन्दू हो। कोई माने न माने, इस पर भी तुम हिन्दू हो।

"ऐसे ही मैं नसीम को भी हिन्दू समझती हूँ।"

"तो तुम इसके हाथ का खा लोगी ?"

"हाँ।"

लक्ष्मी भी अपने मन में कुछ ऐसा ही मानती थी। परन्तु लोक-निन्दा से डरती थी। उसने अपने मन की बात कह दी—"मुझे तो लोगों के कहने का डर लगा रहता है।"

"क्यों डर लगता है तुम्हें ?"

"अभी मेरा एक और लड़का है। उसका भी विवाह होना है। कहीं ऐसा न हो कि उसके लिए भी किसी मुसलमान की ही लड़की का सहारा लेना पड़ जाय ?"

रामी हँस पड़ी। उसने कह दिया, "तो तुम अपने एक पुत्र के लिए दूसरे पुत्र को मुसलमान बना रही हो ?"

लक्ष्मी को यह बात, जो अत्यन्त कटु थी, सत्य प्रतीत हुई। इस पर उसने कह दिया, "पर नसीम अपने को हिन्दू कह देगी क्या ?"

"हाँ, यदि यह समझ गई कि यह हिन्दू है और हिन्दू होना बहुत अच्छी बात है तो कह देगी।"

"कैसे कह देगी ? इसे फिर अपना हिन्दुआना नाम रख लेना चाहिए।"

"मैं तो नाम को कुछ बड़ी बात नहीं मानती। हाँ यदि तुमको नाम रखने से यह हिन्दू लगती है तो इसको हिन्दुआना नाम रखने के लिए कह दो।"

नसीम ने इस पर पूछ लिया, "मैं कैसे रख लूँ ?"

"जैसे रामचन्द्र का तेरे अब्बाजान ने मुसलमानी नाम रख लिया है।"

"वह तो मुल्ला ने रखा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुल्ला परामात्मा का उतना ही बड़ा दूत है, जितनी मैं हूँ। अथवा जितनी तुम हो। देखो नसीम ! मैं तुम्हारा नाम नानकी रखती हूँ।" इस पर तो नसीम खिलखिला कर हँस पड़ी।

हँसती-हँसती वह एकदम चुप हो गई। उसने लक्ष्मी से पूछ लिया, "तो माँ ! नानकी ठीक है अथवा नसीम ?"

"तुम हँसी क्यों हो ?" लक्ष्मी ने चिन्ता की मुद्रा में पूछा।

"मैं हँसी इसलिए थी कि केवल नाम के बदल देने से मुसलमान से हिन्दू होना विचित्र-सा लग रहा है। मगर मुझको अपने नसीम नाम की बात भी अजीब समझ में आई है। इससे हँसी बन्द हो गई। मेरे बाप ने नाम नसीम रखा। वह नगीना भी रख सकता था। इस प्रकार सोचने पर मैं यह समझी हूँ कि नाम एक बहुत मामूली-सी बात है। पैदा होने पर नाम रखा ही जाता है। जो नाम बाप को पसन्द आया, वह उस वक्त रख दिया गया। अब मैं आपकी बहू हूँ, जो आपकी पसन्द हो आप रख दीजिए।"

लक्ष्मी अभी भी अनिश्चित मन थी। रामी ने कह दिया, "लक्ष्मी बहिन ! नानकी बहुत अच्छा नाम है। गुरु नानक महाराज की प्यारी हो जायेगी।"

लक्ष्मी ने कह दिया, "रामी ! तुम्हारी बातें विचित्र हैं। इस पर भी भली लगती हैं।"

"तो नसीम ! आज से तुम्हारा नाम नानकी हो गया, ठीक है ?"

"न नसीम मुझसे पूछ कर रखा गया था, न नानकी रखने के लिए मुझसे पूछने की जरूरत है। मुझे दूसरों के अच्छा-बुरा कहने की भी चिन्ता नहीं। मेरा घरवाला, उसकी माँ और रामी माँ मुझ को जिस प्रकार भी अच्छा समझें, मैं तो उसी से खुश हूँ।"

इस समय वहीदन और शबनम वहाँ आ गईं। बात बदल गई। वहीदन ने कहा, "रामी माँ ! तुम मोहिनी को रेशम में लपेट कर रखती हो। उसको भी यहाँ बुला लिया करो।"

"वह सिलाई का काम सीख रही है। मैंने उसको कपड़ा काट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दिया है और वह आज सुबह से उसे सी रही है।"

"मशीन से सी रही है।"

"नहीं, मैंने उसको हाथ से सीने का ढंग सिखाया है और लड़की समझदार प्रतीत होती है। तुरन्त समझ जाती है और जैसा कहो, कर लेती है।"

"तो मुझको भी कुछ सिखा दो न ?"

"तुम को अपने घर वाले से कुछ फुरसत मिले, तब न ? रात तुम उसकी सेवा करती हो, तो दिन में दोपहर तक सोया करती हो।"

वहीदन की हँसी निकल गई। उसने कहा, "जवानी चार दिन की है। जितनी लूटी जाय, क्यों न लूट लें ?"

"ठीक है, कुरता सीना जवानी लूटने में नहीं आता न ? वहीदन ! यह जिन्दगी जवानी लूटने से कुछ ज्यादा भी है ?"

"इस पर तो बाद में भी विचार किया जा सकता है।"

"तब कुरता सीना आ जायेगा।"

इस पर सब हँसने लगीं।

रात को नसीम ने अपने घर वाले को बताया, "रामी माँ ने मेरा नाम बदल दिया है।"

"क्या रखा है ?"

"नानकी।"

"नानकी ? यह तो हिन्दुआना नाम है ?"

"हाँ, वह आज हमारी कुल्ली देखने के लिए आई थी। यहाँ की सफाई वगैरा देख बोली कि मैं तो हिन्दू हूँ। मैंने कहा, 'कोई मानता नहीं।' इस पर वह बोली कि कोई हिन्दू अथवा मुसलमान किसी दूसरे के कहने से नहीं होता। यह तो अपने अमालों से होता है। उसका कहना था कि मेरे अमाल तो हिन्दुओं के से हैं। इस पर आप की अम्मी ने पूछ लिया कि मैं कैसे हिन्दू हो सकती हूँ, तो उसने कह दिया, मेरा नाम हिन्दुआना रखने से। बस फिर क्या था। मेरा नाम नानकी रख दिया।"

"पर कौन मानेगा ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अभी तो रामी माँ और आपकी माँ न माना है। अब आप मान जाइये। आप मान जायेंगे तो फिर किसी अन्य की मुझे परवाह नहीं।"

"अपने बाप की भी नहीं ?"

"बाप ने तो मुझे आप के हवाले कर दिया है।"

"अच्छा ज़रा रामी माँ को बुलाओ तो सही। मैं भी पूछ करके देखूं ?"

"उसके घर वाला आ गया है ; मुझे वहाँ जाते शर्म आती है।"

"तो मैं ही खुद चला जाता हूँ।"

किसनू रामी माँ की कुल्ली के पास जा आवाज देने लगा तो वह बाहर आ गई। किसनू ने पूछ, "रामी माँ ! यह नसीम क्या कह रही है ?"

रामी माँ हँस पड़ी। उसने कहा, "अपनी माँ से पूछ लो। वह तुम को अपना बेटा मानना छोड़ बैठी थी। मैंने समझाया है तो वह मान गई है। अब तुम वही लक्ष्मी के बेटे किसनू हो जो पहले थे।"

"पर रामी माँ ! यह कैसे हुआ है ?"

"बाबा ! उससे पूछो। मेरे लिए तो तुम वैसे ही हो जैसे थे। हाँ, तुम्हारी पत्नी कुछ और ही निकली है। मैं उसे ऐसा नहीं समझती थी।"

इस समय नसीम भी उनके पास आकर खड़ी हो गई थी। उस दिन चाँदनी रात थी। पूर्णिमा का चाँद निकल आकाश में ऊपर आ चुका था और चारों ओर स्वच्छ प्रकाश फैला हुआ था। रामी को एक बात सूझी। वह सहतू की कुल्ली के बाहर जाकर खड़ी हो गई और धीरे से आवाज़ देकर भीतर चली गई। सहतू और उसका छोटा लड़का मंगल बैठे हुए भोजन कर रहे थे। लक्ष्मी भोजन करा रही थी। रामी ने खड़े-खड़े कह दिया, "नानकी को बुला लूं ?"

लक्ष्मी ने अपने घर वाले की ओर देखा। सहतू के हाथ में ग्रास पकड़ा ही रह गया। वह अवाक् रामी का मुख देख रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामी ने कहा, "देखो सहतू भैया ! तुमने उसमें ऐसी कौन-सी बात देखी है, जो तुम उस बच्ची से डरते हो ?"

"रामी बहिन !" सहतू ने ग्रास मुख में डालने के स्थान थाली में रखते हुए कहा, "तुम से पहले लक्ष्मी यही बात कर रही थी। मैं उससे नहीं डरता। मैं तो बस्ती के अन्य लोगों से डरता हूँ। एक बात और है, नसीम का बाप बहुत हल्ला करेगा।"

"वह क्यों हल्ला करेगा ?"

"वह नसीम को हमारे खिलाफ कर देगा।"

"नसीम खिलाफ हो जायेगी तो हो जाय। तुम तो उसके खिलाफ नहीं होगे। रहे बस्ती के लोग, वे तो पहले ही खिलाफ हैं।"

लक्ष्मी ने आवाज दे दी, "किसनू ! भीतर आ जाओ बेटा।"

किसनू भीतर आया तो लक्ष्मी ने कहा, "बहू को भी ले आओ।"

नसीम और किसनू एक ओर कोने में बैठ गये। सहतू ने कुछ विचार कर खाना आरम्भ कर दिया। मंगल खा रहा था। बात रामी ने कही, "लक्ष्मी बहिन ! 'मन के हारे हार है और मन के जीते जीत'। तुम अपने मन को दृढ़ करो।"

लक्ष्मी ने बहू को कहा, "खाना खाओगी बहू ?"

"हम खा कर आये हैं, माँजी !"

लक्ष्मी बोली, "कल से हमारा खाना साथ ही बनेगा। पर मेरा मन अभी राम को घर में लाने के लिये नहीं करता।"

नसीम समझती थी, लक्ष्मी उसके खान-पान और अमलों को देख कर ही कह रही है। रामी ने कह दिया, "समय पर इस बात पर भी विचार कर लिया जावेगा। नानकी के विषय में तो किसी तरह का शक नहीं है न ?"

: १० :

बात इतनी सुगम नहीं थी जितनी रामी ने समझ रखी थी। उसने तो मन में युक्ति की थी और समझ लिया था कि धर्म का सम्बन्ध कर्म के साथ है। कर्म का सम्बन्ध है विचारों के साथ। नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और लोगों के कहने से धर्म में अन्तर नहीं पड़ सकता ।

रात नसीम का अपने घर वाले करीम साथ सहतू की कुटिया में जाकर बैठे रहने की बात शहीदू और उसकी बीवी सईदन तक पहुँच गई । नसीम ने ही माँ से कहा, "अम्मी ! यह रामी कहती है कि मैं तो हिन्दू ही हूँ ।"

"कैसे हिन्दू हो गई ?"

"हो नहीं गई । अम्मी ! यह तो कहती है कि मैं हिन्दू ही हूँ ।"

"एक मुसलमान माँ-बाप की बेटी भला किस प्रकार हिन्दू हो सकती है । वह झूठ बोलती है ।"

"पर अम्मी ! अगर मुसलमान माँ के पेट से मुसलमान ही पैदा हो सकता है तो हिन्दू माँ के पेट से मुसलमान कैसे पैदा हो गया ? उनको तुम मुसलमान कैसे कहती हो ?"

"हिन्दू की बात दूसरी है । वह कच्चा सूत है । आसानी से टूट सकता है ।"

इस विषय में नसीम कुछ नहीं जानती थी । वह चुप कर गई । उसे चुप देख सईदन ने पूछ लिया, "तो रामी तुम्हारे हाथ का खा लेगी ?"

"वह कहती है कि आज रात उसके चौके में हम दोनों खाना खावेंगे । आज दोपहर का खाना तो मैं अपनी सास की कुल्ली में बैठ कर खा चुकी हूँ ।"

"वे सब मुसलमान हो जावेंगे ।'

"पर अम्मी ! रामी माँ ने मेरा नाम तो नानकी रख दिया है ।"

"उसके करने से कुछ नहीं होगा । तुम अपने ईमान पर पक्की रहो । सब ठीक ही होगा ।"

इस ईमान की बात सुन नसीम को हँसी आ गई । उसने माँ से पूछ लिया, "ईमान क्या होता है । किस बात पर पक्की रहूँ ।"

"बस ईमान···ईमान···मेरा मतलब है हज़रत मोहम्मद साहब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर ईमान कायम रखो।"

"मैं उसके मुतल्लिक कुछ नहीं जानती।"

"रात को तुम्हारे अब्बाजान आवेंगे तो तुमको उसके विषय में बतावेंगे।"

"अब्बाजान जानते हैं क्या ?"

सईदन जानती थी कि वह कुछ नहीं जानता। इस पर भी उसने कह दिया, "हाँ।"

"देखो माँ ! शादी के पहले मैं नहीं जानती थी कि अब्बाजान शराब पीकर कितनी बदतमीजी करते थे। अब मैं जान गई हूँ और मुझे उनके सामने होने में शर्म महसूस होती है। तुम उनसे पूछ लेना और फिर मुझे बता देना।

"मैं तो यह हिन्दू मुसलमान के झगड़े को नहीं समझती। मेरा ख्याल है कि तुम भी नहीं जानतीं। मैं एक बात समझ सकी हूँ कि इनसान को अपने ख्यालात और अमाल में सफाई से रहना चाहिए। मैं ऐसा रहने की कोशिश करती हूँ। मेरी इस कोशिश को देख कर ही रामी माँ कहती है कि मैं हिन्दू हूँ।

"एक बात और है। मेरा घर वाला बताता है कि उसने एक बार भी अपने माँ बाप को इकट्ठे सोते नहीं देखा। माँ बाप और बेटे एक ही कुल्ली में सोते थे और इधर अब्बाजान हैं कि हमारे देखते-देखते ही वे तुमसे मोहब्बत करने लगते हैं। रामी कहती है कि वे हिन्दू नहीं हो सकते। यह बात ख्यालात की नापाकीज़गी को जाहिर करती है।"

"यह रामी बहुत बदकार औरत है।"

"नहीं अम्मी ! तुम उससे मिलो तो वह तुमको समझा देगी।"

सईदन रामी से नहीं मिली। बल्कि रात उसने अपने खाविन्द से नसीम की सारी बात बताई। आज शहीदू के शराब पीने का दिन था। वह हफ्ते में दो बार आधी-आधी बोतल पिया करता था। उस दिन सईदन मुर्ग बनाया करती थी। आज भी मुर्ग बना था। शहीदू आया और उसने जेब से अद्धा निकाला तो सईदन ने कह दिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मियाँ ! अब बूढ़े हो रहे हो, अब तो इसको छोड़ो।"

"किस लिये छोड़ूँ ?"

इस पर सईदन ने नसीम की बात बता दी। बात सुन कर शहीदू ने कह दिया, "यह तो मैं जानता नहीं कि मोमिन को अपनी बीवी से कितना परहेज करना चाहिये। हाँ, इतना मैं जानता हूँ कि अपनी कमाई से यह बोतल खरीद कर लाता हूँ और मुझे इसको पीने के लिये कोई मना नहीं कर सकता।"

"मना तो कोई नहीं करता ; मगर इसके पी लेने के बाद तुम पर जो शैतान सवार हो जाता है, मैं उसकी बात कर रही हूँ। साथ ही अपने बुढ़ापे के लिये आमदनी में से कुछ तो बचाना ही चाहिये। तभी तो तुम्हारी लड़कियाँ अपने को हिन्दू कहने लग गई हैं।"

"उनके अपने कहने से क्या होता है। जो दुनिया कहेगी वही होगा।"

"दुनिया तो तुमको काफिर कहेगी। शराब के नशे में तुम कुफ्र तोलते रहते हो। भला बताओ, तुम अपनी लड़कियों और पतोहू की बाबत कितने गन्दे खयाल बनाते रहते हो।"

"खयाल ही तो बनाता हूँ, अमली सूरत तो नहीं देता।"

"मौका मिले तो वह भी कर दोगे।"

एकाएक शहीदू कहने लगा, "इस रामी की बच्ची ने सब काम बिगाड़ दिया है। उसने मेरी बीवी को भी मेरे खिलाफ करना शुरु कर दिया है। मुझको जरा खा-पी लेने दो, तब इसकी चोटी मरोड़ता हूँ।"

"मियाँ ! खबरदार। वे बहुत हैं और तुम अकेले हो।"

"मेरे साथ रहमान होगा।"

"वह तो तुमको पिटता देख मजा लेगा।"

"क्यों ?"

"उसकी बीवी ने उसे तुम्हारे खिलाफ कर रखा है। तुमने किसी का भी तो लिहाज नहीं किया। सबको अपना गुलाम समझा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहीदू ने अभी पी नहीं थी। इस कारण उसको अकेले होने का डर लग गया और वह चुप रहा। परन्तु उसके एक घंटे बाद उसने चुपचाप एक छड़ी ली और अपनी कुल्ली से निकल गया। इस समय उसने शराब पी हुई थी और खाना खा चुका था। सईदन ने उसे इस प्रकार निकलते देखा तो डर गई। वह समझ गई कि फौजदारी होने वाली है। इस कारण वह भी उठी और उसके पीछे-पीछे रामी की कुल्ली के बाहर जा पहुँची।

रामी की कुल्ली में आज सहतू, नसीम, लक्ष्मी और नसीम का घर वाला किसनू तथा उसका अपने घर वाला लालचन्द उपस्थित थे। रामी ने नसीम के मन पर यह अंकित करने के लिये कि वह उसको हिन्दू समझती है अपने रसोई घर में बैठा कर खाना खिलाया था और उसके साथ बैठ कर सबने खाया था। ये खाने के बाद अभी बातें ही कर रहे थे कि बाहर से शहीदू की आवाज आई—"रामी ! ओ रामी ! निकलो तो बाहर। पहले मैं तुम्हारा हिन्दुपन निकालता हूँ।"

नसीम ने अपने घर वाले को कहा, "यह तो अब्बाजान हैं। शराब पी मालूम होती है।"

"फौजदारी करने आया मालूम होता है।" रामी ने कहा और उठ खड़ी हुई। वह उससे झगड़े की आशंका को सुलह सफाई से मिटाने के लिये कुल्ली से बाहर जाने लगी तो नसीम ने उसकी बाँह पकड़ ली और किसनू, सहतू और लालचन्द बाहर निकल आये।

शहीदू के ऊँचे-ऊँचे बोलने का स्वर सुन कर तो भगतू, रहमान और रामचन्द्र भी बाहर आ गये। दूसरे लोग, जो इन सबको मुसलमान समझते थे, यह समझ कि इन मियाँ लोगों की आपस में सिर फुटौवल होने वाली है, अपनी-अपनी कुल्ली से निकल पड़े और वहीं खड़े-खड़े तमाशा देखने लगे।

रहमान सबसे पहले निकाला था और वह अपने बाप को बाँह से पकड़ कर उसकी कुल्ली की तरफ ले जाने का यत्न करने लगा था। इस समय किसनू और रामचन्द्र भी आ गये। वे रामी को गाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दी जाती सुन समझ रहे थे कि शहीदू क्यों नाराज हो रहा है। शहीदू ने लालचन्द को देखा तो झटके से अपने को रहमान से छुड़ाया और लालचन्द की तरफ छड़ी उठा लपका। परन्तु रामचन्द्र ने उसको कमर से अपनी बाहों में पकड़ लिया। इस पर रहमान को समझ आया कि अब्बाजान ने शराब पी हुई है और जब तक यह सिर पर सवार रहेगी वह समझने से समझागा नहीं। इस कारण उसने बाप को, उसके आगे अपनी टाँग रख उसे भूमि पर गिरा दिया और लालचन्द को कहा, "जरा एक रस्सी का टुकड़ा देना।"

लालचन्द अपनी कुल्ली से एक रस्सी ले आया तो रहमान और रामचन्द्र ने शहीदू के हाथ पाँव बाँध दिये और उसको उठा कर उसकी कुल्ली में छोड़ आये। सईदन ने समझा जान बची लाखों पाये।

फौजदारी हो जाती तो किस की हत्या हो जाती, यह कहना कठिन था।

अगले दिन शहीदू अपनी कुल्ली से काम पर जाने के लिये निकला तो रहमान अपनी कुल्ली के बाहर खड़ा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। रहमान भी उसी काम पर जाता था जिस पर शहीदू जाता था। दोनों चले तो रहमान ने कह दिया, "अब्बाजान ! यह रात क्या फतूर सवार हो गया था आपके सिर पर ?"

"क्या हो गया था ?"

"एक छड़ी लेकर रामी को पीटने के लिये चल पड़े थे।"

शहीदू ने कुछ विचार कर कहा, "मुझे याद नहीं।"

"अगर हम तुम्हारे हाथ-पाँव बाँध नहीं देते तो भगतू वगैरह तुम्हारी मरम्मत कर देते।"

"कैसे कर देते ? तुम मेरी मदद न करते क्या ?"

"मदद तो की है अब्बाजान ! वैसे जी तो यह करता था कि तुमको कुछ पिट लेने देता तो अच्छा था।"

"वाह ! बरखुरदार बेटे ! बाप से अपनी मोहब्बत जाहिर कर रहे हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपने बाप बनने का फर्ज अदा किया है ?"

"देखो रहमान ! जब मैं पिये हुए होता हूँ, मुझे कुछ दिखाई नहीं देता। ऐसा समझ में आता है कि मैं ही अकेला मर्द रह गया हूँ और बाकी सब औरत और हिजड़े हैं।"

"मगर है ऐसा नहीं। इसकों छोड़ क्यों नहीं देते जो ऐसी गलत बात दिमाग में पैदा कर देती है।"

शहीदू चुप रहा। रहमान भी उसके साथ चल पड़ा। उसने कहा, "अब्बाजान ! रामी का तो यह कहना है कि उनकी जात के लोग सहतू के परिवार को मुसलमान समझते हैं मगर सहतू लाठी ले उनसे लड़ने नहीं जाता, और अपने को हिन्दू कहता है।

"इसी तरह सहतू वगैरह नसीम को हिन्दू कहते हैं तो हमारे लिये सहतू से झगड़ा करने की जरूरत नहीं। हम नसीम को मुसलमान कह सकते हैं। नसीम का कहना है कि किसी के कहने से न तो कोई हिन्दू होता है न मुसलमान। जो चाहे किसी को पुकार ले। पुकारे जाने वाले की मरजी है कि वह उस नाम से न बोले जिस नाम को वह पसन्द नहीं करता।

"रामी नसीम को नानकी कहती है, यह तो नसीम को चाहिए कि वह इस नाम से न बोला करे। मगर वह नानकी नाम पसन्द करती है।

"नसीम का कहना है कि हम उसको नसीम नाम से पुकार सकते हैं। उसे इसमें एतराज नहीं होगा।"

"पर बेटा, इससे तो सब हिन्दू हो जावेंगे ?"

"मैं समझता हूँ कि इससे तो सब मुसलमान हो जावेंगे। देखो अब्बाजान ! सहतू, उसकी बीवी लक्ष्मी, रामी और उसके घर वाले का मुसलमान नाम रखकर हम उनको वैसे ही पुकारने लगें। वे अगर उन नामों से बोलने लगें तो फिर उनकी जात बिरादरी के लोग भी उनको मुसलमान समझने लगेंगे। फिर वहीदन और नसीम के बच्चों को हम मुसलमानी नामों से पुकारने लगेंगे। तो वे भी वक्त पा कर मुसलमान हो जावेंगे।"

शहीदू को बात पसन्द आ गई। उसने कहा, "तो आज घर आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर तुम्हारी माँ के सामने नाम का फैसला कर लेंगे।"

उसी सायंकाल शहीदू आया तो उसने देखा कि रामी की कुल्ली के बाहर औरतों की मजलिस जमी है और रहमान की माँ उनमें बैठी है। इससे शहीदू जल भुन गया। वह अपनी कुल्ली के बाहर खड़ा हो उस मजलिस की ओर घूर-घूर कर देखने लगा। सईदन अपने घर वाले का मतलब समझ गई कि वह उसको बुला रहा है। इस कारण वह उठी और अपनी कुल्ली की ओर चली गई। रहमान की बीवी शबनम तो बैठी बातें सुनती रही।

रामी कह रही थी, "जब बच्चा पैदा होता है उस समय न तो उसके चोटी होती है न ही सुन्नत। मतलब यह कि वह हिन्दू मुसलमान नहीं होता। वह हिन्दू अथवा मुसलमान बनता है अपने कर्मों से। अच्छे काम करो तो हिन्दू हो जाओगे। बुरे काम करने से क्या होगे मैं नहीं जानती।"

सुल्ताना ने पूछा, "अच्छे अमाल करने से मुसलमान क्यों नहीं हो सकता ?"

रामी का सतर्क उत्तर था, "मैं इस्लाम के विषय में जानती नहीं। इसलिए यह नहीं कहती कि बुरे अमालों से मुसलमान हो जाओगी। मुझको जो पता है वह तो यही है कि साफ-सुथरा बनकर रहना, झूठ न बोलना, चोरी न करना इन कामों से आदमी हिन्दू कहाता है। इस पर भी कई हिन्दू कहाने वाले चोर और झूठे भी हैं। उनको तो मैं ऐसे ही हिन्दू समझती हूँ जैसे कोई अनपढ़ यह कहता फिरे कि मैं तो बी० ए० पास किये हूँ।"

"पर हमारे यहाँ तो यह माना जाता है कि मिट्टी से भी आबदस्त लिया जा सकता है।" शबनम ने कहा।

"इसी लिए तो मुझको यह समझ आ रहा है कि हिन्दू और मुसलमान एक नहीं हैं। पाकीजगी तो बुनियादी बात है। इसमें फरक है तो बाकी बातों में फरक अपने आप ही हो जाता है।"

: ११ :

शबनम मन में विचार कर ही रही थी कि वह भी नहा-धो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर साफ रहा करेगी और मुसलमानों पर यह इलज़ाम कि वे गन्दे रहते हैं, नहीं रहने देगी। तब रामी को यह कहने का अवसर नहीं होगा कि हिन्दू मुसलमानों से किसी भी बात में अच्छे हैं।

रामी, अपनी बात की पाकीजगी से दूसरी अच्छी बातें कैसे अपने आप आ जाती हैं, अभी समझाने वाली ही थी कि सईदन अपनी कुल्ली से उस मजलिस की ओर आती दिखाई दी।

रामी के पास बैठी थी लक्ष्मी, वहीदन, नसीम, शबनम, मनकी और मोहिनी। सईदन ने कहा, "रहमान के अब्बाजान कहते हैं कि रामी मुसलमान हो गई है। वजह यह कि उसने एक मुसलमान की बेटी को अपने चौके में बैठाकर खाना खिलाया है। नसीम के साथ बैठकर खाने वाले हैं लालचन्द और सहतू भी। इसलिए ये भी मुसलमान हो गए हैं। इसलिए हमने इनके नाम मुसलमानी जबान में रख दिये हैं; आज से रामी का नाम होगा रहमत। लालचन्द का नाम होगा लालखाँ। और सहतू का नाम हमने रख दिया है सरवर।"

रामी मुस्कुराती रही। अपने श्वसुर की इस बात को सुनकर शबनम को हँसी आ गई। सईदन ने पूछा, "बहू! हँस क्यों रही है?"

"अम्मी! तुम क्या कहती हो।"

"मेरी तो समझ में नहीं आ रहा है कि यह झगड़ा क्या है। मैं तो एक बात जानती हूँ कि मैं मुसलमान माँ बाप की बेटी हूँ इसलिए मुसलमान हूँ।"

"मगर इस बात को पहले हम ही ने तो चलाया था कि एक हिन्दू माँ बाप के बेटे का नाम मुसलमानी रख दिया था।"

"मगर रामचन्द्र ने रहीम बनना मंजूर जो किया था। अब रामी के कहने से वह फिर रामचन्द्र बन गया है।"

सईदन बैठ गई। बैठते हुए उसने कहा, "यह तो ठीक है। अगर रामी अपना नाम रहमत मंजूर नहीं करेगी तो हमारे कहने से वह रहमत कैसे हो जायेगी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अम्मी ! इस बूढ़े शराबी के कहने से कोई हिन्दू मुसलमान नहीं होता। न ही नसीम हिन्दू से मुसलमान होगी। मैं तो कुछ और ही कह रही हूँ कि हम मुसलमान भी पाक साफ बन जायें तो फिर रामी को रहमत बनकर रहने में क्या एतराज हो सकता है ?"

"तब हिन्दू मुसलमान में फर्क नहीं रहेगा।" रामी ने कह दिया, "देखो शबनम ! तुम हर रोज आबदस्त लेकर साबुन से हाथ धोया करो। रोज नहाया करो और साफ-सुथरे कपड़े पहनो।

"नानकी की तरह घरवाले से अलहदा सोया करो। सच बोलो, चोरी न करो। तो तुम मुसलमानी नाम रखो। कोई फर्क नहीं पड़ सकता। तुम मुसलमान रहती हुई भी हिन्दू कहलाओगी और जब मुसलमान के ये लक्षण समझे जायेंगे तब हिन्दू मुसलमान कहे जाने में ऐतराज नहीं करेंगे।

"पहले रहमान के अब्बाजान को कहो कि रोज नहाया करे। तब मुसलमान के नाम की इज्जत बढ़ायेगा और फिर रामी को रहमत कहाने में भी ऐतराज नहीं हो सकेगा।"

"तो रामी माँ ! नहाने धोने से इन्सान नेक भी हो जाता है।" शबनम ने पूछ लिया।

"हाँ, नेक बनने की यह प्रथम सीढ़ी है। सच बोलना, चोरी न करना, अपने पर काबू रखना वगैरह ये दूसरी और तीसरी सीढ़ियाँ हैं।"

"अपने पर काबू रखने का क्या मतलब है ?"

"देखो शबनम ! नसीम ने मुझको बताया है कि तुम्हारे श्वसुर कामातुर हो तो अपने लड़के और लड़की की उपस्थिति का विचार छोड़ कर भी वासनालिप्त हो जाते थे। यह है अपने पर काबू न रख सकने की बात। वासना सबको कष्ट देती है परन्तु समय, परिस्थिति और अवसर का वासना में लिप्त होने पर प्रतिबन्ध है। समय का मतलब है दिन, रात, स्थान वगैरा। परिस्थिति के मायने हैं आयु, स्वास्थ्य और तन्हाई। अवसर का मतलब है मौका साथी वगैरा।

"इन सब बातों का खयाल तुम्हारे श्वसुर नहीं रखते। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण वे हिन्दू तो हैं नहीं और कुछ चाहे ही हों।"

"तो जो लोग ऐसा कर सकते हैं, मेरा मतलब है कि इन सब बातों का खयाल रख सकते हैं वे क्या और सब बातों में अच्छे हो जावेंगे।"

"हाँ, जिनका मन एक बात पर काबू पा सकता है और वह अपनी एक ख्वाहिश को रोकने में कामयाब हो जाता है वह दूसरी ख्वाहशात में भी अपने को रोक सकता है। हमारे धर्म में उस आदमी को संयमी कहते हैं।

"सबसे बुरी बात है क्रोध। ऐसा आदमी अपने क्रोध पर भी काबू पा जाता है।"

"अब वहीदन की बात सुन लो। वह जब भड़क उठी तो शादी के पहले ही अपने खाविन्द से सम्बन्ध बना बैठी। ये एक अच्छे आदमी के लक्षण नहीं हैं। इसीलिए अभी उसको हिन्दू नहीं कह सकती।"

शहीदू के परिवार में रामी की बातों ने हलचल मचा दी। रात को रहमान की कुल्ली में परिवार एकत्रित हो गया। पहले शहीदू ने सबको अपनी कुल्ली में बुलाया था परन्तु शबनम और वहीदन ने वहाँ जाने से इन्कार कर दिया था। रहमान अपनी बीवी के वहाँ न जाने में आपत्ति को तो समझता था परन्तु वहीदन को भी वहाँ जाने से इन्कार करते देख वह विस्मय में उसका मुख देखने लगा।

"नहीं रहमान ! मैं वहाँ नहीं जाऊँगी।"

अब रहमान ने सबको अपनी कुल्ली में बुला लिया। शहीदू और सईदन भी वहाँ आ गये। दोनों दामादों को नहीं बुलाया गया था। रहमान ने बात शुरू कर दी। उसने कहा, "यह रामी बहुत गहरी चाल चल रही है। हमको इससे बचकर रहना चाहिये।"

"क्या गहरी चाल चली है ?" नसीम ने पूछा।

"जहाँ तुम दोनों के घर वाले मुसलमान हो गये महसूस करते थे, वहाँ अब तुम अपने को हिन्दू हो गया महसूस करने लगी हो।"

"तो इससे क्या हो गया ? किसी को कोई नुकसान हो रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है ?"

"मुसलमानों की तादाद कम हो जायेगी ।"

इस पर शबनम ने पूछ लिया, "आपके अब्बाजान क्या हैं, हिन्दू या मुसलमान ?"

"मैं मुसलमान हूँ ।" शहीदू ने उत्तर दिया ।

"तो अब्बाजान, मैं मूसलमान हो सकती ही नहीं । तुम्हारी जैसी वहशत तो मुझ पर सवार हो सकती नहीं ।"

"मुसलमान तो तुम हो । हाँ, मुझसे एक अच्छी मोमिन हो ।"

"तो मोमिन खराब लोग भी हो सकते हैं ?"

"जैसा मैं हूँ ।"

इस पर वहोदन ने पूछ लिया, "अब्बाजान ! आपका कौन-सा दीन-ईमान है जो अपनी लड़की से भी छेड़-छाड़ करते रहते हैं ?"

"पर इसका हिन्दू-मुसलमान से क्या वास्ता है ?"

"तो ठीक है । रामी एक अच्छी हिन्दू है । उसको देख कर मेरा घर वाला भी अच्छा बनने की कोशिश करने लगा है । हमने अपनी कुल्ली की सफाई की है । उसकी अन्दर से पोताई की है ।"

"गोबर से ?"

"पहले सिर्फ़ मिट्टी से की थी । वह ठीक नहीं लगी । फिर गोबर से की है । अब सूख जाने पर तो वह भली लगने लगी है ।"

"बदबू नहीं आती वहाँ से ?"

"हाँ, गोबर की कुछ हलकी-हलकी बदबू थी । मगर जो कई किस्म की बदबू पहले थी वह सब गोबर में दब गई । बाद में रामी ने वहाँ लोबान का धुआँ किया है तो अब गोबर की बदबू भी नहीं रही ।"

शहीदू ने कह दिया, "तुम तो सच ही काफिर हो गई हो । गाय के गोबर से कुल्ली की पोताई करती हो ।"

"अब्बाजान ! आपसे कम काफिर हूँ । हमने कुछ और भी फैसला किया है ।"

"क्या ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपके दामाद अलग बिस्तरा लगा कर सोने का ख़याल रखते हैं।"

"तो तुम दोनों में जल्दी ही तलाक होगा।"

"मैं समझती हूँ, हममें मुहब्बत बढ़ेगी।"

"तुम बच्चों की सी बातें करती हो।"

नसीम ने कह दिया, "अब्बाजान, मैं इसकी मिसाल हूँ।"

"इसीलिये तुम हिन्दू हो रही हो।"

"मैं तो कुछ नहीं हो रही। हाँ, रामी माँ ने हमको साफ और पाकीजा देखा तो कह दिया हम हिन्दू हैं। वह जो मर्जी हो कहे, लेकिन मैं जो हूँ वह मैं हूँ।"

"और तुम क्या हो?" शहीदू ने पूछ लिया।

"मैंने बहुत सोचा है। मुझको कुछ यही समझ आया है कि अब्बाजान की कुल्ली में एक बकरी के मेमने की भाँति ही थी और अब आहिस्ता-आहिस्ता इनसान बनती जा रही हूँ।"

"और यह तुमको रामी की बच्ची बना रही है।"

"नहीं अब्बाजान! इसकी शुरुआत तो उसने की थी, जिसके साथ तुमने शादी की थी। पहले ही दिन उसने मुझको कई बातें बताईं थी खाना खाने के बाद हाथ धोने चाहियें, कुल्ला कर मुख साफ करना चाहिये। टट्टी करने के बाद आबदस्त कैसे लेना चाहिये। हाथ कैसे और क्यों धोने चाहियें। बिस्तर साफ क्यों रखना चाहिये। जूठे बर्तन किस लिये फौरन साफ कर देने चाहियें और बीसियों इस किस्म की बातें बताई थीं। फिर उनके करने के लिये उसने मेरी मदद करनी शुरू कर दी।

"रामी माँ ने यह देखा तो कह दिया कि मैं तो हिन्दू हूँ। उसने भी कुछ बताया जरूर है मगर वह उसके मुकाबले में बहुत कम है जो घरवालों ने बताया है।"

"यह सब बकवास है।" शहीदू ने कह दिया—"मैं इन सबको रात सोये हुए आग लगा कर फूंक दूंगा।"

इस पर वहीदन ने पूछ लिया—"और हमको बेवा बना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोगे ?"

"तुम्हारी दूसरी शादी कर दूँगा।"

इस पर रहमान ने बात को और अधिक बढ़ने से रोकते हुए कहा, "अब्बाजान ! अगर तुमने कुल्लियों को आग लगाई तो हमारी तुम्हारी कुल्ली और सारी बस्ती ही जल जावेगी। शायद हम और वहीदन तथा नसीम वगैरह उस आग में जल कर राख हो जावेंगे। यह मैं नहीं होने दूँगा। मेरा अभी मरने को चित्त नहीं करता।"

इस पर शबनम ने कह दिया, "मैं अभी रामी से कह कर पुलिस में तुम्हारे इस शैतानी इरादे की रिपोर्ट करती हूँ। मैं पुलिस में इस बात की गवाही कर दूँगी।"

"तो तुम मेरे खिलाफ गवाही करोगी ?"

इस पर रहमान ने कह दिया, "और मैं भी करूँगा। अब्बा-जान ! यह तुम्हारे इस शैतानी काम की मुखालफत होगी, तुम्हारी नहीं।"

"तो फिर क्या किया जाय ?"

"मेरी राय मानो। जो जैसे रहना चाहता है रहने दो। जो नाम कोई पसन्द करता है, वह नाम रखले और उस नाम से बोला करे। इस पर भी अब्बाजान, अगर तुम चाहते हो कि हम लोग मुसलमान बने रहें तो यह जरूरी है कि तुम खुद एक नमूना बन कर दिखाओ। नसीम की कुल्ली और तुम्हारी कुल्ली में जमीन आसमान का फरक है। तुम्हारी कुल्ली के बाहर से ही सड़े अनाज की बदबू आने लगती है।"

बात समाप्त हो गई। अपनी कुल्ली को लौटते हुए शहीदू ने अपनी बीवी को कह दिया, "तुम्हारे सारे बच्चे ही मेरे खिलाफ हो रहे हैं तो मैं क्या करूँ ?"

"अब मेरे ही खिलाफ हो गये हो ? मेरी बात मानिये, शराब पीनी छोड़ दीजिये। यही सब खराबियों की जड़ है।"

"छूटती नहीं है।"

"और फिर एक दिन फौजदारी होगी और सब कुछ खत्म हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायेगा।"

उस दिन शहीदू चुपचाप लेट रहा। अब उसने बस्ती के दूसरे हिन्दुओं को भड़काना शुरू कर दिया।

: १२ :

राधाकृष्ण मुकद्मे में बरी हो गया। नौ मास का समय तो लगा ही, साथ ही पाँच हजार रुपया भी व्यय हो गया। इस मुकद्मे के कारण रामनारायण और राधाकृष्ण में बँटवारा हो गया। दोनों भाइयों में द्वेषाग्नि भड़क उठी। दुकानें दो हो गईं और उनमें प्रतिस्पर्द्धा चलने लगी।

इस पर भी चन्दोबीबी और लाजवन्ती के सम्बन्ध बने ही रहे। रामनारायण के मन में भी अपनी भाभी के लिए आदर और स्नेह बना रहे। इससे तो राधाकृष्ण क्रोध से लाल-पीला होने लग गया।

दोनों भाई एक ही घर में रहते थे, सीढ़ियाँ दोनों की एक ही थीं। सीढ़ियों की सफाई सन्तू करता था, शेष अपने-अपने कमरों की सफाई दोनों गृहणियाँ करती थीं।

राधाकृष्ण ने घर पर कोई नौकर नहीं रखा था। दुकान का नौकर ही दोपहर का खाना ले जाता था। उसको घर पर नौकर की आवश्यकता भी अनुभव नहीं होती थी। घर में कोई बच्चा नहीं था। राधाकृष्ण ने कई बार यत्न किया कि सन्तू उनकी नौकरी कर ले, परन्तु वह नहीं माना। वह कह देता, "बड़ी माँ जो काम बतायेंगी, मैं कर दूँगा, मैं तो दोनों का ही नौकर हूँ।"

"पर तुम वेतन तो राम से लेते हो ?"

"मेरे लिए आप में और उनमें कोई अन्तर नहीं है। इस विषय में आप छोटे लालाजी से स्वयं ही बात कर लीजिये।"

सन्तू को अपने पास रखने में नौकर की आवश्यकता कारण नहीं थी, वह तो केवल रामनारायण को तंग करना मात्र ही था। चन्दो को जब पता चला कि उसका घर वाला सन्तू को फुसला कर राम की नौकरी छोड़ने के लिए कह रहा है तो उसने पूछ लिया, "आपको क्या करना है, नौकर रख कर ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं सन्तू को दुकान का काम सिखा कर उसे अपना सहायक बनाना चाहता हूँ।"

'परन्तु वह तो आपके काम से घृणा करता है। दुकान पर चलने वाली ठगी-चोरी को तो वह कभी भी पसन्द नहीं करेगा।"

"अभी तो वह बालक ही है। उसको हानि-लाभ का ज्ञान नहीं। ज्यों ही उसको इस बात का ज्ञान हुआ और उसको मैंने दुकान में आना दो आना रुपये का भागीदार बनाने का लोभ दिया, तो वह मान जायेगा।"

"वह मानेगा अथवा नहीं, इस समय कहना कठिन है। परन्तु इससे आप दोहरे पाप के भागी बन जायेंगे। चोरी-ठगी आप तो करते ही हैं, साथ ही एक निष्कपट मन वाले बालक को भी चोर बना देंगे।"

राधाकृष्ण की अपनी पत्नी के कटु वाक्य पसन्द तो नहीं आते थे, परन्तु एक तो वह बड़े बाप की बेटी थी, दूसरे चन्दो के पिता ने मुकद्दमे में उसकी बड़ी सहायता की थी, इस कारण वह अपने को चोर-ठग कहा जाना चुप-चाप सुन लेता था।

उसने केवल यह कह दिया, "मैं सन्तू को आदमी बना देना चाहता हूँ, तुम उसकी उन्नति में बाधक बन रही हो।"

"मैं उसको आप की नौकरी करने के से रोक तो नहीं रही। मैं तो आपको रोक रही हूँ कि पहले स्वयं ऐसे बन जाइये, जिससे बाहर के लोग आपको भला आदमी समझने लगें। तत्पश्चात् बीसियों सन्तू आपके कार्य में सहायक बनने लगेंगे।"

"मैंने तो बहुत सोच-विचार किया है। आज संसार में इसी प्रकार से कार्य चल रहा है। बिना बेईमानी के धन एकत्रित ही नहीं होता।"

चन्दो बीबी अपने पति को समझा नहीं सकी। वास्तव में वह जब भी उससे धर्म, पुण्य और कर्म इत्यादि की बातें करती, वह उसको उसके पिता बनवारीलाल की कहानियाँ सुनाने लगता। "लालाजी ने अमुक ठेके में इतना घटिया माल लगाया और उसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनायास ही उनको बीस हजार का लाभ हो गया। केवल दो हज़ार रिश्वत के अफसरों को देने पड़े थे।"

एक और घटना का वर्णन करते हुए राधाकृष्ण ने कहा, "रामकृष्ण बनवारीलाल एक फ़र्म का कपड़े का एक वैगन आया था। उसमें मारकीन का एक हज़ार थान था।

"आज कल मारकीन का दाम पाँच रुपये थान के हिसाब से बढ़ा हुआ है। तुम्हारे पिता इन्डैमनिटी बाँड भर कर माल छुड़ा लाये और देखते-देखते पाँच हज़ार रुपये का लाभ लिया। इसमें से पाँच सौ रुपया रेल के बाबुओं को देना पड़ा।

"पीछे जब झगड़ा हुआ तो तुम्हारे पिता ने कह दिया, यह सब भूल से हुआ है। मैं माल का दाम और उस पर मिलने वाला कमीशन देने के लिए तैयार हूँ। जज से सिफारिफ लग गई। उसको आधी दर्जन ह्विस्की की बोललें देनी पड़ीं। फैसला इनके पक्ष में हो गया। इस प्रकार चार हज़ार के लगभभ इनका अतिरिक्त लाभ हो गया।"

इस प्रकार की बातें सुन चन्दो बीबी चुप हो जाती और राधाकृष्ण अपने काम को चालू रखता।

एक वर्ष में ही राधाकृष्ण की दुकान चोरों का अड्डा बन गयी। अब राधाकृष्ण ने पुलिस से भी साँठ-गाँठ कर ली। उनका कमीशन नियत हो गया। जब भी कोई चोरी का माल इसके हाथ में आता, यह थानेदार से मिल कुछ ले-दे कर बात को ठप्प करा देता। इस प्रकार दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति हो रही थी।

रामनारायण का कार्य साधारण था। इस पर भी दिन भर में चालीस-पचास रुपये की आय हो जाती थी उससे खर्च मज़े में चल जाता था और खर्च करने के बाद बचत भी हो जाती थी। सबसे बड़ी बात यह थी कि रामनारायण एण्ड सन्स की दुकान ईमादारी और सचाई के लिए विख्यात हो रही थी। रामनारायण ने अब नये भूषण बनाने और बेचने का काम भी आरम्भ कर दिया था। इससे व्यवसाय में उत्तरोत्तर उन्नति हो रही थी। इस पर भी राधाकृष्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की आय तक वह नहीं पहुँच पाता था। राधाकृष्ण को तो मास में एकाध सौदे पर ही पाँच-दस हज़ार का लाभ हो जाता था।

रामनारायण जीवन से सन्तुष्ट था। सन्तू का वेतन दस रुपये मासिक हो गया था। न तो सन्तू इस पर असन्तोष कर रहा था और न ही रामनारायण सन्तू जैसे समझदार और सत्यपरायण लड़के के लिये इतना पर्याप्त समझता था। वह अब रात के समय सन्तू को हिन्दी और अंग्रेजी पढ़ाने लगा था।

सन्तू अपने माता-पिता से मिलने के लिए जाया करता था और वहाँ पर होने वाले संघर्ष से पूर्णतया परिचित था। रामी माँ के नसीम के विषय में विचार सुन तो सन्तू को भी आश्चर्य हुआ था।

: १२ :

रविवार के दिन सन्तू अपने माता-पिता से मिल कर आया तो छोटी लल्लाइन को वहाँ की बात बताने लगा। उसने सहतू के लड़के रामचन्द्र के शहीदू की लड़की वहीदन से विवाह और बस्ती के हिन्दुओं द्वारा उस के बहिष्कार, उस बहिष्कार से विवश हो किसनू का शहीदू की दूसरी लड़की नसीम से विवाह की बात बताई। फिर बस्ती के सब लोगों द्वारा सहतू और उसके परिवार के मुसलमान हो जाने की व्यवस्था बताई। तदनन्तर रामी माँ का नसीम को नानकी बना सहतू के परिवार में सम्मिलित कर लेने की बात बता दी।

लाजवन्ती और रामनारायण इस कथा को सुन अवाक् बैठे रह गये। रामनारायण ने कह दिया, "नसीम तो हिन्दू नहीं हो सकती। हाँ, सहतू अब पक्का मुसलमान हो गया है। क्यों सन्तू! नसीम का बाप क्या कहता है?"

"वह भी यही कहता है, जो आप कह रहे हैं। उसने रामी माँ को कह दिया है कि इससे तो सहतू पक्का मुसलमान हो गया है। साथ ही रामी माँ और लालचन्द भी मुसलमान हो गये हैं। वह उनको नाम बदलने के लिए कह रहा है।"

"और रामी माँ क्या कहती है?"

"वह कहती थी, 'डोमों के कहने से गौएँ नहीं मरा करतीं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह नाम नहीं बदलेगी। इस पर भी शहीदू ने उसका नाम तो रहमत रख दिया और उसके घर वाले का लाल खाँ और सहतू का सरवर रख दिया। अब शहीदू और उसका लड़का रहमान तो इनको इन नामों से ही पुकारते हैं और नसीम, सहतू और रामी परस्पर अपने पुराने और नये नामों से बुलाते हैं। रामी माँ का कहना है—नाम बदलने से भी भला हिन्दू अथवा मुसलमान बनाया जा सकता है ? इस पर भी बस्ती वालों ने इनके साथ बोलचाल बन्द कर दी है।"

रामनारायण ने चिन्ता में सिर हिलाते हुए कहा, "बेचारी राभी भी गई।"

"कहाँ गई ?" लाजवन्ती ने विस्मय प्रकट करते हुए पूछा।

"मुसलमान हो गई और कहाँ जायेगी !"

"एक बात तो वह ठीक कहती है कि नाम से धर्म कैसे बदल गया। धर्म का तो कर्मों से सम्बन्ध है।"

"धीरे-धीरे कर्म सब गौण हो जावेंगे, नाम ही मुख्य रह जावेगा।"

"अच्छा सन्तू ! तुम कल फिर जाना और रामी माँ को कहना कि मैं मिलना चाहती हूँ।"

रामनारायण ने पूछा, "तुम क्यों इस झगड़े में पड़ना चाहती हो ?"

"मैं उसको वहाँ रहने की अपेक्षा किसी अन्य स्थान पर रहने के लिए कहना चाहती हूँ। वह भली औरत है, और भले लोगों की सहायता तो करनी ही चाहिये।"

अगले दिन सन्तू गया और रामी को बुला लाया। रामी मोहिनी को साथ लेकर आ गई। देवी के लापता हो जाने के बाद वह मोहिनी से और भी अधिक स्नेह करने लगी थी। रामी लाजवन्ती से तब ही मिली थी जब वे बाढ़ के कारण उनके घर नीचे वाले कमरे में आकर रहे थे। उस घटना को आज एक वर्ष से अधिक हो चुका था। मोहिनी अब सज्ञान होने लगी थी।

लाजवन्ती ने रामी को बिठाया और उससे देवी के विषय में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूछ-ताछ की।

रामी बोली, "मैं तो समझती हूँ कि किसी ने उसके हाथ में गठरी देख यह समझ लिया होगा कि कोई कीमती वस्तु है। वह उसको भीड़ से बाहर ले गया होगा और गठरी को अपने कब्जे में कर उसे यमुना में ढकेल दिया होगा।"

"मेरा विचार इसके विपरीत यह है कि वह गठरी की अपेक्षा लड़की को अपने साथ ले गया होगा और गठरी को बहा गया होगा। वह उसको पाल-पोस कर उससे पेशा करायेगा।"

इस सम्भावना से तो रामी काँप उठी। परन्तु वह इससे अपनी लड़की को बचाने के साधनों से विहीन थी, इस कारण चुप रही। अब लाजवन्ती ने नसीम की बात आरम्भ कर दी। रामी ने तो उस घटना का और भी विस्तार से वर्णन कर दिया और अन्त में कहा, "ललाइन, मेरा तो केवल इतना ही कहना है कि हिन्दू कर्मों के कारण श्रेष्ठ है न कि नामों के कारण। एक मुल्ला ने किसी का नाम करीम और किसी का नाम रहीम रख दिया और इतने मात्र से ही वे मुसलमान हो गये, यह बात मेरी इस छोटी-सी बुद्धि में नहीं समाती।"

"तो तुम जन्म से हिन्दू होना नहीं मानतीं?"

"मानती हूँ, परन्तु कौन जाने किसका जन्म किससे है। मैंने तो सुना है कि बीज पेट में पड़ते समय देवता आशीर्वाद दे जाते हैं और बालक वैसा ही हो जाता है।

"नानकी के विषय में तो ऐसा ही लगता है। उसका बाप शराबी, व्यसनी और निर्लज्ज है, परन्तु लड़की इससे भिन्न प्रकृति और व्यवहार वाली है। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि वह किसी देवता के बीज से उत्पन्न हुई है।"

लाज हँस पड़ी। उसने कहा, "परन्तु वहाँ के दूसरे हिन्दू ही तुम्हारा विरोध कर रहे हैं?"

"उनके विरोध करने से क्या होगा? किसनू को लड़की देने से उन्होंने इन्कार कर दिया तो उसको नसीम मिल गई। अब वे लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंगल के विषय में कह रहे हैं कि यह मुसलमान है। उसका विवाह मैं मोहिनी से करने का विचार कर रही हूँ।"

"भगतू मान जावेगा क्या ?"

"पहले तो वह नहीं मानता था, किन्तु उसको बहुत कुछ बताना पड़ा है। साथ ही मैं मोहिनी को समझा-बुझा कर तैयार कर रही हूँ। उसको मूर्ख लोगों की बातों की अवहेलना करने का स्वभाव डाल रही हूँ।"

"मैं तो तुमसे यह कहना चाहती थी कि तुम और सन्तू के माता-पिता वहाँ से किसी अन्य स्थान पर चले जाओ। वहाँ झगड़ा होने की संभावना प्रतीत होती है।"

"है तो, परन्तु ललाइन ! मैं तो अब सहतू के परिवार के साथ बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध बना बैठी हूँ। इस अपनी बिटिया को उनके मंगल से विवाहने का वचन दे चुकी हूँ। इससे उनके परिवार के उद्धार का यत्न कर रही हूँ।

"क्या उद्धार कर रही हो ? किसनू और उसकी बहू नानकी को भी साथ लेती आओ।"

"और राम को वहीं छोड़ दूँ ?"

"तुम ही तो कहती हो न कि उसका व्यवहार म्लेच्छों का-सा है ?"

"हाँ, परन्तु वह अपनी बीवी के मोह में फँसा हुआ ऐसा कर रहा है।"

"तो उसको अपनी बीवी से पृथक् कर दोगी ?"

"यह सम्भव नहीं प्रतीत होता। वहीदन जबरदस्त है। उसने ही उसको अपने जाल में फँसा कर पथ-भ्रष्ट किया था और अब भी वही उसको उँगलियों पर नचा रही है। मैं तो उससे भी हिन्दू धर्म-कर्म तथा आचार-व्यवहार का पालन कराने का विचार करती हूँ। साथ ही बस्ती के दूसरे हिन्दुओं को भी अपने पक्ष में करने का यत्न कर रही हूँ।"

"रामी माँ ! बड़ा भारी झगड़ा मोल ले रही हो। मुझे तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस सब में किसी प्रकार की भी अच्छाई दृष्टिगोचर नहीं हो रही।"

रामी चुप रही। लाजवन्ती ने उसका तथा मोहिनी का खूब आदर सत्कार किया और रामी के जाने से पूर्व उसको पुनः कहा, "मेरा कहा मानो। तुम, भगतू और तुम्हारी इच्छा हो तो नानकी इत्यादि को लेकर वहाँ से चली आओ। यदि किसी बात में सहायता चाहो तो हम कर देंगे।"

रामी अपनी कठिनाई तो समझती थी। इस पर भी वह वहाँ से भाग आने का विचार नहीं रखती थी। उसका यह स्वभाव बन गया था कि वह अपनी बात पर अड़ जाया करती थी। वहाँ से भाग आने में उसने अपनी पराजय समझी। अतः मन में न आने का निश्चय करके भी उसने कह दिया, "ललाइन ! हम निर्धन लोग तो आप जैसे धनवानों के ही आश्रय से पलते हैं। इस कारण समय-समय पर आप से मिलकर जिस वस्तु की आवश्यकता होगी कह दिया करूँगी।"

रामी मन में विचार करती हुई जा रही थी कि क्या करे ? रह-रह कर उसके मन में यह विचार आता था कि अपने मन में आई बात को कर ही देना चाहिए। वह समझती थी कि वह कोई अपराध तो कर नहीं रही है। यदि निरपराध मारी जाती है तो उसको इसलिए चिन्ता क्यों करनी चाहिए ? उसकी बेटी बिचारी न जाने कहाँ-कहाँ कष्ट भोग रही होगी।

इस प्रकार वह विचार करती हुई लम्बे-लम्बे डग भरती हुई अपनी बस्ती की ओर जा रही थी कि पीछे से शहीदू आता हुआ मिल गया। उसने उसको कहा, "रहीमन माँ ! किधर से आ रही हो ?"

"मोहिनी के भाई की मालकिन के पास गई थी। मैं कभी-कभी उनसे मिलने के लिए जाया करती हूँ।"

"देखो रहीमन ! इस मोहिनी नाम से मेरे मन में वहम पैदा हो जाता है कि तुम किसकी बात कर रही हो। हम तो उसको मुमताज कहकर बुलाते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक है, इसके दो नाम हैं, मोहिनी भी मुमताज भी।"

"पर मोहिनी नाम छोड़ क्यों नहीं देती ?"

"इसके माता-पिता को मोहिनी पसन्द है। मैं इसमें क्या कर सकती हूँ ? मुझे भी मोहिनी कहने में कोई दिक्कत नहीं होती।"

"तुम्हारे और इस लड़की के बाप के मन में अभी भी उम्मीद लगी है कि वे हिन्दू मान लिए जायेंगे। मैं तुमको बाज़ा कर रहा हूँ यह हिन्दू इतनी मगरूर कौम है कि तुमको वे कभी हिन्दू मानने के लिए तैयार नहीं होंगे।"

"मैं उनके मानने, न मानने की परवाह नहीं करती। तुम मुझको नसीम के साथ खाना खा लेने से मुसलमान हो गया मानते हो तो मान लो। मैं तुम्हारे मानने से स्वयं को मुसलमान नहीं मानती।"

"बहुत अजीब औरत हो तुम !"

"हूँ भैया ! ऐसी ही है।"

"इसी लिए मुल्ला कहता था कि मुसलमान बना कर गाय का गोश्त खिला देना चाहिए।"

"तुमने राम को तो उससे भी बुरी बात करनी सिखा दी है।"

"वह क्या ?"

"गन्दा रहना। अब तो वह महीनों ही नहाता भी नहीं। आबदस्त लेकर हाथ साफ नहीं करता। कपड़े बदलता नहीं और उसके जिस्म से बदबू आने लगती है।"

"तो क्या यह गाय का गोश्त खाने से भी बुरी बात है ?"

"मैं तो ऐसा ही समझती हूँ। वह नजदीक आता है तो कै करने को जी करता है।"

"हाँ, एक बात याद आ गई। वहीदन अब रोज नहाने लग गई है।"

"बहुत तकलीफ हो रही है उसको ?"

"यह तो वही बतायेगी, मगर इससे उसकी खूबसूरती निखर रही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामी चुप रही। वास्तव में यह बात उसके कहने से ही होने लगी थी।

: १४ :

जीवात्मा के गुणों में द्वेष भी एक गुण लिखा है। द्वेष का अर्थ है विरोध। विपरीत परिस्थितियों का विरोध। जिस प्राणी में जितना जीवन तत्व अभिप्राय यह प्राण अधिक होगा उतना ही वह विपरीत परिस्थितियों का अधिक बल से विरोध करेगा। विरोध में सफलता तो बुद्धि और विवेक के अधीन है।

रामी में ये दोनों बातें उपस्थित प्रतीत होती थीं। आत्मा बलवान था और बुद्धि भी तीव्र थी। अतः जब शहीदू के भड़काने से बस्ती के हिन्दू विरोध पर उतारू हो गये तो रामी की प्रतिक्रिया भी उतनी ही दृढ़ हो गई।

रामी शहीदू के साथ चली आ रही थी कि हिन्दू बस्ती का चौधरी निरंजन अपनी कुल्ली के बाहर खड़ा मिल गया। उसने शहीदू और रामी को बातें करते आते देखा तो बोल उठा, "शहीदू भैया! बहुत मजे में मालूम होते हो!"

"हाँ निरंजन! सब आप लोगों की मेहरबानी का नतीजा है।"

शहीदू कहता-कहता रुक गया। रामी और मोहिनो चलती गईं। इस पर निरंजन ने आवाज़ दे दी, "रहीमन बहिन! भागी कहाँ जा रही हो?" कहता हुआ निरजन हँस पड़ा।

रामी ने एक क्षण ठहर कर निरंजन की आँखों में देखा तो निरंजन की हँसी लुप्त हो गई। वह चुप रहा तो रामी अपने मार्ग पर चल दी।

वह गई तो शहीदू खिलखिला कर हँस पड़ा। निरंजन ने पुनः हँसने का यत्न किया, परन्तु हँस नहीं सका। हँसी के स्थान पर विचित्र प्रकार की आवाज निकली और वह पुनः रुक गया।

शहीदू ने पूछा, "निरंजन भैया! क्या हो गया है तुमको?"

"मुझे यह औरत डायन लग रही है। जब उसने मेरी तरफ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखा था, मुझे कुछ ऐसा लगा था कि मेरा दिल चलता-चलता रुकने लगा है।"

"आखिर तुम हिन्दू ही हो। बुज़दिल, जाहिल और बेवकूफ। देखो निरंजन, थोड़ी शराब पिया करो दिल मजबूत हो जायेगा।"

निरंजन की कुल्ली के समीप ही सीतलू की कुल्ली थी। वह रामी की बात कुल्ली के भीतर बैठा सुन रहा था। वह बाहर आ गया और शराब की बात सुन पूछने लगा, "क्या बात है निरंजन भैया!"

उत्तर शहीदू ने दिया, "वह रहीमन है न! जो मुसलमान होने पर भी अपने को हिन्दू मानती है और तुम लोगों का धर्म भ्रष्ट करने की कोशिश कर रही हैं। वह थी। कितनी ही दूर से मीठी-मीठी बातें करती आ रही थी कि निरंजन भैया दिखाई दे गये और मुझको छोड़ चल दी। निरंजन ने उसे रोकना चाहा तो उसने घूर कर निरंजन की तरफ देखा और इस तुम्हारे बुज़दिल चौधरी का दिल बैठने लग गया। इसी से इससे कह रहा हूँ कि एक घूंट शराब का पी लिया करे।"

सीतलू को शहीदू के खिलाफ गिला था। न वह यहाँ इस बस्ती में अपनी कुल्ली बनाता, न सहतू का पुत्र राम इसकी लड़की के इश्क में फँसता और उसकी लड़की सत्तो का विवाह राम के छोटे भाई किसनू से हो जाता। अब उस लड़की का विवाह उसी बस्ती के एक बसन्त से हो गया था। लड़की सुखी नहीं थी। बसन्ता दुर्बल था। पूरी मेहनत नहीं कर सकता था। काम से छुट्टियाँ अधिक करता था और घर पर भाँग भुनती थी। सीतलू को अपनी कमाई में से लड़की और उसके घरवाले की सहायता करनी पड़ती थी।

वह शहीदू से चिढ़ रहा था। इस कारण शहीदू की बात सुन बोला, "मियाँ! अब इस औरत पर डोरे डाल रहे हो।"

"यह तो एक मर्द का हक है। हमारे तो शराअ में भी लिखा है कि चार तक बीवियाँ की जाती हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो इसी लिये रामी से मीठी-मीठी बातें कर रहे थे !"

"तो उस तरफ तुम्हारी भी नजर है।"

"हाँ है तो, मगर यह तो जगत की माया है। वह है रामी माँ। मेरी भी माँ है।"

"तो हम तुम्हारे बाप बनने की कोशिश कर रहे हैं।"

इस पर निरंजन हँसा। मगर शीतलू ने कह दिया, "यह मुख और मसूर की दाल। मियाँ ! जरा शीशे में अपना मुख देख लो।"

निरंजन को डर लग गया कि शीतलू और शहीदू में झगड़ा हो गया तो हिन्दू-मुसलमान का झगड़ा खड़ा हो जायेगा। इस कारण उसने सीतलू को कहा, "सीतलू भैया, छोटा मुँह बड़ी बात मत कहो।"

"इस शराबी को तुम भगवान समझ रहे हो। यह साला मेरा बाप बनने की बात कर रहा है। साले को चूतड़ धोने की होश नहीं और बाप बनने आया है।"

शहीदू को यह समझ आया कि उसने बात सीमा से अधिक कह दी है। इससे तो इन हिन्दुओं में सहतू के लिये सहानुभूति पैदा हो जावेगी और जिस नीति पर वह रामी वगैरह को भगाना चाहता था, वह असफल हो जावेगी। इस कारण वह नरम पड़ गया। उसने कहा, "सीतलू भैया ! मैं तो कुछ और समझा था। इस पर कह बैठा। अच्छा भैया, मुआफ कर दो।"

इतना कह उसने सलामअलेकुम की और अपनी कुल्ली की ओर चल दिया।

जब वह दूर चला गया तो निरंजन ने सीतलू से कहा, "कुछ पागल हो रहे हो सीतलू !"

"क्यों, क्या पागलपन किया है मैंने ?"

"इस शराबी से लड़ रहे हो। रात को शराब पीकर यह सारी बस्ती को फूंक सकता है।"

"तो खुद भी जल मरेगा उसमें। मगर निरंजन चौधरी ! तुम कहाँ के बामन पण्डित हो जो सबको मुसलमान होने का फतवा देते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाते हो।"

"किसकी बात कर रहे हो ?"

"रामी की बात कर रहा हूँ। वह तुमको मुसलमान दिखाई देती है।"

"तो और क्या ?"

"वह अपने को हिन्दू और शिव की उपासिका कहती है।"

"उसके कहने से क्या होता है ?"

"और तुम्हारे कहने से होता है जो राम का नाम लेना भी नहीं जानते। देखो निरंजन ! तुमने सहतू को मुसलमान कहा और मुझको कह दिया कि मैंने अपनी लड़की की शादी उसके लड़के से की तो मैं भी मुसलमान हो जाऊँगा। मजबूर होकर मुझे सत्तो का विवाह बसन्ते से करना पड़ा। लड़की का जीवन तबाह हो गया है।"

"तो उसका विवाह किसी दूसरे के साथ कर दो।"

"और तब मैं हिन्दू बना रहूँगा ? महामूर्ख हो निरंजन !"

निरंजन को सत्तो की बुरी हालत का ज्ञान था परन्तु वह इसमें सत्तो का ही दोष समझता था। वह सोचता था कि सत्तो भी टोकरी लेकर मजदूरी करती तो पति-पत्नी का गुजर चल जाता।

निरंजन ने सीतलू को कुछ उत्तर नहीं दिया, परन्तु वह उसको उसे मूर्ख कहने का मजा चखाने की योजना बनाने लगा।

सीतलू की एक ही सन्तान वह सत्तो थी। वह उससे बहुत स्नेह रखता था। इस कारण उसकी सहायता करता रहता था। परन्तु वह इस बात को बहुत बुरा समझता था कि लड़की का घर वाला अपने लिये भी पैदा न कर सकता हो।

सीतलू देख रहा था कि सहतू का किसनू साफ-सुथरा बना रहता है। वह अपनी बीवी नसीम को लेकर रविवार के दिन सैर को भी जाता है। नसीम सर्वथा सन्तुष्ट प्रतीत होती थी। वह समझता था, नसीम की जगह उसकी लड़की सत्तो को प्रसन्न और सुखी होना चाहिये था। परन्तु अब बिखर गये घी को बटोरने का ढंग वह नहीं जानता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बस्ती के हिन्दुओं में रामी के व्यवहार पर हलचल थी। यह नहीं कि सबके सब सहतू वगैरह को बुरा मानते थे। बात यह थी कि इनकी संख्या कम थी और वे डरते थे निरंजन से। निरंजन कुछ गुण्डा प्रकृति का भी था।

एक दिन निरंजन ने सीतलू के दामाद को अपनी कुल्ली में बुलाकर पूछा, "बसन्ते, तुम बीवी को खाने-पीने को नहीं देते ?"

"वह अपने को बड़े बाप की बेटी मानती है और मजदूरी करना नहीं चाहती। मैं भी अपनी मजदूरी में से उसको कुछ नहीं देता।"

"मगर बस्ती में और भी तो औरतें हैं जो घर से बाहर का काम नहीं करतीं।"

"ठीक है। मगर मैं दूसरों की तरह विचार नहीं करता। मैं तो बीवी को आधे-आधे का भागीदार मानता हूँ। सुख में, दुःख में, काम और मजा लूटने में। वह काम नहीं करती इसलिये मैं अपनी कमाई में से उसको कुछ नहीं देता।"

निरंजन ने समझ लिया कि सीतलू को तंग करने के लिये बसन्तो एक अच्छा साधन हो सकता है। इस कारण उसने कह दिया, "बड़ी रईसजादी बनी घूमती है। साली को निकाल दो घर से।"

"यह भी करूँगा ! अभी तो वह अपने बाप के घर से खाने-पीने को ले आती है। उसमें से मैं अपना हिस्सा बांटता रहता हूँ।"

"ठीक है, औरत को अपने अधीन रखना मर्द का काम है।"

निरंजन ने आगामी रविवार को बस्ती की पंचायत भी बुला ली। जब सब इकट्ठे हुए तो निरंजन ने कह दिया, "सीतलू कहता है कि रामी हिन्दू है। मैं इसमें पंचायत का फैसला चाहता हूँ।"

पंचायत में सीतलू भी उपस्थित था। उसने पूछ लिया, "चौधरी क्या समझता है ?"

"मैं तो उसको मुसलमान हो गई मानता हूँ।"

"कैसे मुसलमान हो गई है ?"

"उसने शहीदू की लड़की नसीम को अपने चौके में बैठा कर खिला दिया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मगर आज तो सब धनी-मानी हिन्दू मुसलमानों के हाथ का खा लेते हैं। वे तो मुसलमान नहीं हो जाते ?"

"समरथ को नहिं दोष गोसाईं। वे धनी और इज्जतदार आदमी हैं। उनको किसी बात का दोष नहीं।"

इस पर एक अन्य ने पूछ लिया, "पर मैं तो यह पूछता हूँ कि चौधरी ने नसीम को रामी के चौके में बैठे देखा है ?"

"सब कह रहे हैं ?"

"कौन कह रहा है ? गौ माता पर हाथ रख कर कोई कहे कि उसने देखा है।"

"शहीदू खुद कहता है।"

इस पर फिर सीतलू बोल उठा, "वह तो महा झूठा है। उस दिन कह रहा था कि रामी उससे मीठी-मीठी बातें कर रही थी। ऐसे आदमी का क्या भरोसा है ?"

इस पर फिर दूसरे ने कहा, "चौधरी ! शहीदू तो बेईमान, शराबी और खुद मुसलमान है। उसकी बात का विश्वास नहीं किया जा सकता।"

"तो रामी को बुला कर उसको सौगन्ध खिला कर पूछ लिया जाये।"

"परन्तु वह तो तुमको चौधरी मानती ही नहीं। तुम्हारे यहाँ क्या आयेगी ? देखो चौधरी ! मुझको रामी एक दिन मिली थी। उसने कहा था, हिन्दू धर्म-कर्म से होता है। उसके, सहतू और उसकी बीवी बच्चों के कर्म तुम्हारे निरंजन से अच्छे हैं। इस लिये उसको कोई हक नहीं कि वह किसी दूसरे के धर्म-कर्म पर निर्णय दे।"

सब सीतलू का मुख देखने लगे। एक ने कह दिया, "तुम चौधरी का कहा नहीं मानते।"

"क्या कहना नहीं माना ? जब उसने हमारी राय माँगी है तो राय देनी ही चाहिये थी।"

इस पर सब लोग आपस में बातें करने लगे। सीतलू का साथी कह रहा था, "हमने सहतू और रामी से खाना-पीना छोड़ा हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे अधिक हम क्या कर सकते हैं ?''

इस पर निरंजन ने फिर कह दिया, ''मैं चाहता हूँ कि ऐसी धर्म से पतित लोगों को बस्ती से निकल जाने पर मजबूर कर दें।''

''वे शहीदू से भी बुरे हैं क्या ?'' सीतलू ने फिर पूछ लिया।

इस बात पर निरंजन चुप कर गया। एक अन्य ने उठ कर पूछ लिया, ''चौधरी भूमि सरकारी है। कुल्ली उन्होंने अपने खर्च से बनाई है। इसलिये हम किस तरह उनको मजबूर कर सकते हैं ? करेंगे तो पुलिस आ जाएगी और क्या जाने सबको ही हुक्म हो जाय कि अपनी कुल्ली उठा लो।''

इससे पंचायत समाप्त हो गई और कुछ नहीं हो सका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

उक्त घटना को बीते एक वर्ष हो चुका था। रामी अपनी बात सबको बताती और समझाती थी। उसके समझाने का लोगों पर प्रभाव भी होने लगा था। बस्ती में सीतलू मेट सबसे पूर्व उसके विचार का हुआ था। उसकी लड़की सत्तो के विवाह की चर्चा सहतू के पुत्र किसनू के साथ थी, परन्तु उसने सहतू को मुसलमान मान इस विवाह को अस्वीकार कर पड़ोस में रहने वाले एक राजगीर से कर दिया था। जब सत्तो के घर एक लड़की उत्पन्न हुई तो उसके घर वाले बसन्ता ने मार-मार कर उसको घर से बाहर निकाल दिया था।

सीतलू की समझ में नहीं आ रहा था कि किस लिये उसके दामाद ने उसकी लड़की को निकाला है। सत्तो तीन मास की लड़की लिए अपने बाप के घर आई तो सीतलू ने बिरादरी बुला ली। पहले उनका चौधरी सहतू था, परन्तु अब उसको कोई नहीं मानता था। निरंजन मेट अब चौधरी बन गया था।

निरंजन ने बसन्ते को बुलाया और सबके सामने उससे पूछ लिया, "क्यों बे बसन्त ! बिटिया को घर से क्यों निकाल दिया है ?"

"तुम पूछने वाले कौन होते हो !"

"भाई ! मैं यहाँ का चौधरी हूँ। सबके कहने से ही पूछ रहा हूँ।"

"मैं तुमको चौधरी नहीं मानता। मेरी बीवी दुराचारिणी है। मैं उसको खिला-पिला नहीं सकता।"

"यह तुम किस प्रकार कहते हो कि वह दुराचारिणी है। इस बात का तुम्हारे पास क्या प्रमाण है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे ज्योतिषी ने मेरा पत्रा पढ़ कर बताया था कि मेरे घर लड़का होगा। हो गई है लड़की। इससे यह बात स्पष्ट है कि यह लड़की किसी और की है।"

इस पर सब हँसने लगे। चौधरी को साहस नहीं हुआ कि वह कहे कि ज्योतिषी ने झूठ कहा है। सत्तो के बाप ने कहा, "यह झूठ बोलता है। किसी ज्योतिषी ने नहीं बताया। बच्चे को पालने से बचने के लिए यह झूठ बोल रहा है।"

जो लोग वहाँ उपस्थित थे वे अपनी-अपनी सम्मति देने लगे। कोई तो कहता था कि ज्योतिषी जी महाराज का कहना झूठा नहीं हो सकता। और अन्य यह कहते थे कि बसन्ते का पत्रा किसी अन्य ज्योतिषी को दिखाया जाय। निरंजन ने जब मतभेद देखा तो बसन्ते को कह दिया, "तुम अपनी पत्नी से राय कर उससे सुलह कर लो।"

बसन्ते ने कहा, "मुझे यह फैसला मंजूर है। मैं सत्तो से पूछता हूँ कि वह कौन है, जिससे वह यह लड़की लेकर आई है।"

इस पर सब वाह-वाह करने लगे। निरंजन के चौधरीपन की प्रशंसा होने लगी। सीतलू बेचारा निराश पंचायत से निकल कर अपनी कुल्ली के बाहर जा खड़ा हुआ। उस समय रामी अपने घर के लिए रसद लेकर आ रही थी। उसने सीतलू की रोनी सूरत देखी तो पूछने लगी, "सीतलू भैया! उदास क्यों हो?"

'डूबते को तिनके का सहारा' भी बहुत होता है। वह रामी की सहानुभूतिपूर्ण बात सुन आँखों में आँसू भर कर कहने लगा, "बसन्ते ने बिटिया को घर से निकाल दिया है।"

"क्यों?"

"कहता है वह दुराचारिणी है।"

"झूठ बोलता है, पाजी कहीं का।"

"किन्तु बिरादरी ने उसकी बात मान ली है।"

"तुम इन मूर्खों की बिरादरी को छोड़ दो।"

"पर बिटिया का क्या बनेगा?"

"देखो भैया! आगे मैं तुम्हें बताऊँ। साहस छोड़ देने से तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ बनता नहीं। सारी बात पर विचार करने से तो कुछ मार्ग मिल ही जायेगा।"

सीतलू रामी के साथ-साथ चल पड़ा। रामी ने कहा, "तुम्हारी जात बिरादरी में तो लड़कियाँ दूसरा घर कर लेती हैं। इससे चिन्ता क्यों करते हो? इस पर भी अभी कुछ दिन ठहरो। लड़की को प्रसव के बाद कुछ होश तो संभालने दो।

"वहाँ के लोग सब मूर्ख हैं। ये बात को समझ सकते नहीं। भेड़ चाल चलते हैं। देखो न, सहतू के साथ कैसा व्यवहार किया है उन्होंने। उसको तो इन्होंने मुसलमान मान ही लिया था। यदि वह घबरा जाता तो अपना सर्वनाश कर लेता। अब भी वह हिन्दू का हिन्दू बना है। किसनू की बीवी तो हिन्दू हो गई है।"

सीतलू यह बात पहिले भी सुन चुका था। उसने पूछ लिया, "तो सहतू मूसलमान नहीं है?"

"कौन कहता है?"

"यही बिरादरी के लोग कहते थे। तभी तो मैंने अपनी लड़की का विवाह उसके लड़के के साथ नहीं किया था।"

"यही बिरादरी वाले अब सत्तो को दुराचारिणी कहते हैं। अब भी उनकी बात को नहीं मान लेते?"

सीतलू भौंचक्का हो उसका मुख देखता रह गया। उसके मन में बिरादरी के निर्णय का कुछ भी मूल्य नहीं रहा था। एक बात अभी उसके मन में थी। उसने वही कह दी, "मुसलमान की बेटी से विवाह तथा खान-पान करने से हिन्दू मुसलमान नहीं हो जाता क्या?"

"नहीं भैया! हिन्दू से विवाह और खान-पान करने से मुसलमान हिन्दू हो गया है।"

"रामी माँ! यह क्या कह रही हो! ऐसा कभी हुआ है?"

"हाँ, हुआ है किसनू से नसीम का विवाह हुआ। किसनू ने नसीम को शुद्ध पवित्र रहने का तरीका सिखा दिया है। वह सच बोलती है, संयम से रहती है। मैं समझती हूँ कि किसनू ने नसीम को हिन्दू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बना लिया है। और अब मैंने नसीम का नाम नानकी रख दिया है। उसका घर देखो तो पता चलेगा कि किसी हिन्दू का घर है।"

"बहुत विचित्र बात करती हो रामी माँ !"

"हाँ भैया ! मैं तो यह कहती हूँ कि किसनू तुम्हारे बसन्ते से अच्छा लड़का है। अब मैं अपनी लड़की मोहिनी का विवाह किसनू के भाई से कर रही हूँ।"

"किसनू तो अच्छा है पर क्या नसीम भी अच्छी है ?"

"नसीम नहीं, नानकी कहो। वह बहुत अच्छी है।"

"परन्तु है तो मुसलमान की ही बेटी।"

"कभी कमल देखा है ?"

"हाँ, क्यों नहीं ? हमारे गाँव के तालाब में बहुत होते हैं।"

"कैसा है उस तालाब का पानी ?"

"वह तो बहुत गन्दा है, उसे कोई नहीं पीता।"

"इस पर भी उसमें से कमल सदृश सुन्दर पुष्प उत्पन्न हो सकता है। कमल का त्याग तो कोई भी नहीं करता। भले ही वह कीचड़ में उत्पन्न हुआ हो।"

सीतलू में रामी की युक्तियों का उत्तर देने की क्षमता नहीं थी। वह मन में विचार करता हुआ उसके साथ-साथ चल रहा था। उसे किसनू से अपनी लड़की का विवाह अस्वीकार करने अब और भी अधिक पश्चात्ताप होने लगा।

इस समय वे रामी की कुलिया के बाहर जा पहुँचे। रामी ने बाहर चटाई बिछा उसको वहाँ पर बिठा दिया। फिर सहतू को बुला उसके पास बिठा कर कहा, "सहतू भैया ! बताना तुमको नानकी कैसी लग रही है !"

इससे पूर्व सीतलू ने ही कह दिया, "रामी माँ ! मेरी मति तो इन बिरादरी वालों ने भ्रष्ट की थी। अब मैं देख रहा हूँ कि वे तो सब मूर्ख हैं। एक सती-साध्वी लड़की को दुराचारिणी कह रहें हैं।"

भगतू ने बाहर दो चार व्यक्तियों की आवाज सुनी तो वह भी बाहर आ गया। सीतलू को वहाँ बैठा देख वह विस्मय में खड़ा रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। सीतलू ने उसका अभिवादन करते हुए कहा, "भगतू भैया ! जै रामजी की !"

"सुनाओ भाई ! कैसे आना हुआ है ?"

सहतू ने उसकी लड़की के विषय में पूछ लिया।

सीतलू ने अपनी लड़की से अपने दामाद के व्यवहार का वृत्तान्त बता दिया। उसने कहा, "तीन दिन हुए यह आई थी। उसके शरीर पर लातों, मुक्कों के स्थान-स्थान पर चिन्ह बने थे। उसके मुख से रक्त बह रहा था और गाल सूज रहे थे।

"आज बिरादरी बुलाई तो बसन्ते ने बता दिया कि लड़की दुराचारिणी है। प्रमाण माँगा गया तो कहने लगा, एक ज्योतिषी ने उसके घर लड़का होना बताया था और हो गई है लड़की। इसलिए यह अवश्य किसी और की होगी। मैंने कहा भी कि उस ज्योतिषी को उपस्थित करो। परन्तु बिरादरी ने उसकी बात को ही ठीक मान लिया।

"उसी बिरादरी के कहने पर मैंने तुमको मुसलमान मान लिया था।"

भगतू जो उसके समीप ही चटाई पर बैठा था बोला, "भैया ! इन मूर्खों की बिरादरी को छोड़ क्यों नहीं देते ? सहतू भैया ने छोड़ दिया है तो वह सुखी ही है।"

"इस पर भी चार भाई साथ हों तो सुख होता है।"

"हाँ, वह तो है ही। तुम अपनी कुलिया उधर से उठा इधर आ जाओ। तुर भी हमारी बिरादरी में सम्मिलित हो जाओगे।"

"तो तुमने अपनी बिरादरी बना ली है क्या ?"

"बिरादरी स्वर्ग से बन कर तो आती नहीं। जहाँ चार आदमी बैठ गये, वहीं बिरादरी बन गई।"

"बात तो तुम ठीक कहते हो, परन्तु मेरी सत्तो का क्या होगा ?"

रामी ने कह दिया, "भैया उसको कुछ दिन आराम करने दो। जब बच्चा एक वर्ष का हो जायेगा तो उसके विषय में विचार कर लेंगे। कोई-न-कोई मार्ग तो निकल ही आवेगा। कुछ नहीं तो एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजदूर की बेटी है। टोकरी पकड़ लेगी तब भी अपने गुजारे के लिए कमा लेगी।"

: २ :

सीतलू ने अपनी पत्नी राधा से रामी और भगतू की बात बताई तो वह अवाक रह गई। सीतलू ने उसको इस प्रकार देखा तो पूछ लिया, "क्यों क्या विचार कर रही हो?"

"मैं यह विचार कर रही हूँ कि हम भी मुसलमान माने जावेंगे।"

"कौन मानेगा?"

"ये सब बिरादरी वाले।"

"मैंने इनकी बिरादरी छोड़ दी है।"

"तो अब बिना बिरादरी के रहेंगे!"

"नहीं, सहतू चौधरी की बिरादरी में शामिल हो जावेंगे।"

"यहाँ के सब औरत मर्द तो उनको मुसलमान ही मानते हैं।"

"और यहाँ के सब औरत मर्द तुम्हारी लड़की को वेश्या मानते हैं।"

"और सहतू की बिरादरी वाले क्या मानते हैं?"

"वे तो कहते हैं कि यह सब निरंजन की बदमाशी है। सहतू कहता था कि सब फसाद की जड़ निरंजन ही है। अगर वह कोई मूर्खता की बात न करे तो कोई उसको चौधरी ही न माने।"

"निरंजन तुम्हारे पीछे आया था। उसने बाहर खड़ा हो तुमको आवाज दी थी। सत्तो कुल्ली से बाहर निकल आई और पूछने लगी कि वह किस काम से आया है। निरंजन उससे ही पूछने लगा कि उसकी लड़की किसकी है, यह वह सच-सच बता दे।

"सत्तो को क्रोध चढ़ आया और उसने उसको जी भर कर गालियाँ दीं। इससे आस-पास के सब लोग बाहर निकल आये और वे लोग निरंजन को बाँह से पकड़कर ले गए। उन्होंने उसको समझाया कि औरतों से बात करना ठीक नहीं, मरद आ जाय तो बात कर लेना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीतलू ने कह दिया, "सत्तो की माँ ! अब तो इन लोगों के साथ रहना पाप हो गया है। मैं तो कल से ही अपनी कुल्ली भगतू की कुल्ली के साथ बनाऊँगा।"

चाहती तो राधा भी यही थी पर वह दो बातों से डरती थी। एक तो वे भी मुसलमान हो गये माने जावेंगे और दूसरे लड़की पर मुसलमान डोरे डालने लगेंगे।

सीतलू ने कह दिया, "रामी माँ वहाँ है। मैं समझता हूँ कि उसके रहते हमको डरना नहीं चाहिये। वह कहती थी कि धर्म तो करनी के साथ सम्बन्ध रखता है और अपनी सब प्रकार की रक्षा के लिए दिल मजबूत होना चाहिये। फिर कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।"

परिणाम यह हुआ कि अगले दिन सीतलू ने अपने और अपनी लड़की के लिए एक बड़ी कुल्ली बनानी आरम्भ कर दी। कुल्ली में दो विभाग थे। यह सब रामी की सलाह से बनने लगा था।

जिस दिन कुल्ली बनने लगी थी, उसी दिन निरंजन को पता लग गया था और वह अपने सबसे बड़े सहायक कबीर को साथ लेकर सीतलू को मिला। पूछ लिया, "सीतलू ! उन मुसलमानों की बिरादरी में शामिल हो रहे हो ?"

"कौन मुसलमान ?"

"यही शहीदू के परिवार के लोग।"

"पर शहीदू तो तुम्हारा नाना लगता है न ?"

निरंजन ने क्रोध में कहा, "तो तुम झगड़ा करोगे ?"

"झगड़ा तो तुम करते हो। चौधरी के बच्चे। तुझे लज्जा नहीं आई लड़की से पूछते हुए कि वह लड़की किससे लाई है ?"

कबीर ने देखा कि यहाँ तो फौजदारी हो जावेगी, उसने निरंजन को कह दिया, "चौधरी ! ये मियाँ लोग अपने मान के नहीं हैं। जाने दो इसको भी। गंदा अंग शरीर के साथ लगा रहे तो सारे शरीर को कष्ट होता है।"

निरंजन ने भी वहाँ से टल जाना उचित समझा। शहीदू का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शराब पीने का दिन था और उसको ठेके से आते-आते देरी हो गई थी। वह बस्ती में पहुँचा तो कबीर, निरंजन और बसन्ता एक कोने में खड़े परस्पर विचार कर रहे थे। शहीदू ने निरंजन को सलाम-आलेकुम कर दी तो उसने भी शहीदू को मुबारकबाद दे दी।

"किस बात की मुबारकबाद दे रहे हो चौधरी !"

"तुम्हारी बिरादरी में एक और शामिल होने जा रहा है।"

"कौन ?"

इस पर निरंजन ने बसन्ते की बीवी सत्तो को पति से त्यागने की बात बताई और उसके बाप का उसे लेकर अपनी नई कुल्ली मुसलमानों के कक्ष में बनाने की बात बता दी।

शहीदू मुस्कराता हुआ यह कथा सुनता रहा। आखिर उसने कह दिया, "चौधरी निरंजन ! जिस किसी के लिए किसी फिरके में जगह नहीं, उसके लिए इस्लाम में जगह है। चावड़ी बाजार में बैठी रंडियाँ भी इस्लाम में जगह रखती हैं, सीतलू तो अपना ही है।"

इतना कह वह अपनी कुल्ली की ओर चला गया और वे तीनों पुनः अपनी गुप्त गोष्ठी में लग गये। कबीर कह रहा था, "सीतलू अपनी कूल्ली खाली करेगा तो मैं उसको कुछ ले-देकर यह कुल्ली अपने लड़के के लिए ले लूँगा। उम्मीद है कि सस्ते दाम पर मिल जावेगी।"

"पर मैं तो यह विचार कर रहा था कि खराब है या अच्छी है सत्तो अपनी। सुन्दर और छोटी उम्र की लड़की है। वह इधर ही रह जाती तो अपने कुछ युवकों के दिल बहलाव का साधन बनी रहती।" निरंजन चौधरी ने कहा।

कबीर को कुल्ली सस्ते दामों में मिलने की लालसा लग रही थी। उसने कह दिया, "यह काम तो उसके उधर चले जाने पर भी चल जावेगा। आखिर उसकी कुल्ली कितनी दूर होगी।"

बसन्ता चुपचाप इन दोनों की बातें सुन सोच रहा था कि ये बातें उसे किस लिये सुनाई जा रही हैं। जब वे दोनों बिरादरी के मुख्य व्यक्ति बात करते गए और सीतलू के बस्ती के उस कक्ष को छोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने के हानि लाभों पर विचार करते ही गये तो बसन्ते ने पूछ लिया, "पर चौधरी ! मुझे किस लिये बुलाया है ?"

"तुमसे एक काम करवाना है। पहले यह फैसला हो जाय कि सीतलू को इस कुल्ली में रहना चाहिये अथवा अपनी नई कुल्ली में चला जाना चाहिये।"

"परन्तु चौधरी ! वह तो उधर कुल्ली बनवा रहा है। उसने तो उसके लिये सामान भी खरीद लिया है।"

"वह सामान हम खरीद लेंगे।"

"तो मैं चलता हूँ। जब तुम फैसला कर लोगे कि क्या करना है तो फिर मुझको बुला लेना।"

"और इस समय तुम क्या कर रहे हो ?"

"काम तो कुछ नहीं। रोटी तो बना कर खा चुका हूँ। पर यहाँ खड़ा-खड़ा भी तो कुछ नहीं कर रहा।"

"तो अच्छा सुनो।" कबीर ने कह दिया, "तुम अपने श्वसुर से मिल लो और उससे कह दो कि अगर वह पुरानी कुल्ली बेचना चाहे तो उसका सौदा हो सकता है।"

चौधरी ने कह दिया, "हाँ बसन्ते ! यह पूछ लो। साथ ही इस बात का भी पता करना कि किसी कारण से अगर वह वहीं रहने वाला हो तो मैं नई कुल्ली के लिये खरीदा सामान मोल ले लूँगा।"

बसन्ते की हँसी निकल गई। निरंजन ने पूछ लिया, "क्यों, हँस क्यों रहे हो ?"

"इसलिये कि वास्तव में तो सत्तो बदकार नहीं है। तुमने कहा था कि मैं जरा मुकर जाऊँ तो मेरी उससे सुलह करा दोगे। जरा सीतलू को शिक्षा दे लेने दो। और अब तुम मेरी बीवी को वेश्या बना बस्ती में रखना चाहते हो। तुम्हारे मन की बात सुन हँसी निकल गईहै।"

"पर तुम खुद ही तो कहते थे कि वह औरत अच्छी नहीं है।"

"अच्छी का मतलब यह था कि वह अब अपने बाप से अपने बच्चे के खाने-पीने के लिये कुछ ला नहीं रही थी। उसके बाप की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कोई सन्तान तो है नहीं, फिर उसकी कमाई हमको ही तो मिलनी चाहिए।"

"उस दिन भी उसने पाँच रुपये अपने बाप से माँगने से इन्कार कर दिया तो मैंने पीट कर घर से निकाल दिया था। वरना वह बदकार नहीं थी।"

निरंजन झेंप गया और अपनी झेंप मिटाने के लिये पूछने लगा, "देखो बसंते ! अब जो कुछ हो गया सो हो गया। पिछली बात को गलत कहोगे तो बिरादरी में भारी बदनामी हो जायेगी। अब तो जरा धीरज रखो और तुम्हारा नया विवाह कर देंगे।"

"पर कबीर ! तुम्हारी अपनी लड़की तो है कोई नहीं। विवाह किससे कर दोगे !"

"मेरी एक दोहिती है, दो वर्ष में वह विवाह के योग्य हो जावेगी।"

अब तो बसन्ता और भी खिलखिला कर हँस पड़ा। उसने हँसते हुए पूछ लिया, "क्या आयु है उसकी ?"

"आठ दस वर्ष की तो है ही।"

"आठ-दस वर्ष तो तुम्हारी लड़की के विवाह को भी नहीं हुए। तुम्हारी दुहिती साढ़े चार वर्ष की है और मैं हूँ उन्नीस वर्ष का।"

इस पर तो निरंजन की भी हँसी निकल गई। हँसकर उसने कह दिया, "बन्तो तो बहुत छोटी है, परन्तु मैं तुमको कोई जवान लड़की ढूंढ दूंगा।"

"तो अब मैं जाऊँ ?"

"तो क्या फैसला हुआ ?" कबीर ने पूछ लिया।

"जो तुम दोनों बड़े आपस में फैसला करोगे वह मुझको बता देना। फिर मैं विचार कर लूँगा।"

"क्या विचार कर लोगे ?" निरंजन का प्रश्न था।

"यही कि मुझको क्या करना चाहिये।"

"तुमको तो वही कुछ करना चाहिये जो हम कहें। नहीं तो हम बिरादरी के फैसले भी बदल सकते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो चौधरी ! पहले बताओ कि मैं क्या करूँ। किसी लड़की से मेरी सगाई का प्रबन्ध कर दो तब ही तो मैं तुम्हारी बात मानूँगा।"

बसन्ता तो यह कह अपनी कुल्ली में चला गया और निरंजन तथा कबीर एक दूसरे का मुख देखते रह गये। कुछ विचार कर कबीर ने कह दिया, "सब काम बिगड़ गया है।"

"यह तुमने ही बिगाड़ा है।"

"मैंने कैसे बिगाड़ा है।"

"तुम सीतलू की कुल्ली मोल लेने का विचार करने लगे थे ?"

"और तुम जो उसकी लड़की की अपने मतलब के लिये रखने का विचार करने लगे थे ?"

दोनों बिरादरी के प्रमुख झगड़ते-झगड़ते रुक गये और फिर एक भी शब्द कहे बिना अपनी-अपनी कुल्ली में चले गये। बसन्ता अपनी कुटिया में जा खाट पर लेट गया और पूर्ण घटना पर विचार करने लगा।

: ३ :

सीतलू के भगतू की कुल्ली के समीप एक अपने लिये कुल्ली बनानी आरम्भ करने से, बस्ती के इस कक्ष में भी चर्चा चल पड़ी थी। सहतू और रामी में बातचीत हो रही थी। रामी इस नवीन प्राणी के उनके साथ आने से प्रसन्न थी। वह समझ रही थी कि उसकी बात दूसरों की समझ में आ रही है। सहतू कुछ संशित मन था। उसका कहना था सत्तो और किसनू में पुरानी प्रीति है और अब उसका समीप आकर रहना पुरानी प्रीति को जगा सकता है। इस बात का भय इस कारण और भी अधिक था कि सत्तो अपने पति से त्यक्त होकर आ रही थी। सहतू अब नानकी से मोह करने लगा था। उसको यह लड़की बहुत ही समझदार और शुद्ध मन की प्रतीत हुई थी।

रामी का कहना था, "मैं समझती हूँ कि सत्तो नसीम के सामने विजयी नहीं हो सकेगी। यह ठीक है कि शारीरिक सौन्दर्य में वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नानकी से उत्तम है परन्तु अन्तःकरण नानकी का सत्तो के अन्तःकरण से बहुत श्रेष्ठ है। साथ ही किसी के कल्याण का कार्य किसी अज्ञात भय के कारण हम रोक नहीं सकते। हमें तो अपनी बुद्धि से विचारा कार्य करना है ही और उसके शुभ फल के लिये हमको परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिये। वह सदा निःस्वार्थभाव से कार्य करने वालों की रक्षा करते हैं।"

अभी वे बातें कर ही रहे थे कि शहीदू आया और एक नई कुल्ली बनते देख कुछ काल तक उसे देखता रहा और फिर वहीदन से बातें करता हुआ अपनी कुल्ली की ओर चला गया।

भगतू भी अपनी कुल्ली से निकल आया और रामी के पास आकर कहने लगा, "इस नये आने वाले की सूचना पाकर शहीदू बड़ा प्रसन्न मालूम होता है।"

रामी ने कह दिया, "यह मूर्ख अभी भी यह समझ रहा है कि वह इस्लाम की तरक्की कर रहा है। वह हम सबको मुसलमानी नाम रखकर यह समझ रहा है कि हम सब मुसलमान हो गये हैं। मुझको कुछ यह भी समझ आ रहा है कि वह दूसरे हिन्दुओं को हमारे विरुद्ध भड़का रहा है।"

"वह तो जो कुछ कर रहा है करता ही है। परन्तु यह निरंजन इत्यादि को क्या हो गया है कि सीतलू की लड़की को ही आवारा मान रहे हैं। किसी ज्योतिषी का ज्योतिष असफल होते देख निष्पाप लड़की को ही दुराचारिणी कहने लगे हैं।"

रामी का कहना था, "दो में से एक बात है। या तो ये लोग महामूर्ख हैं और या इस पूर्ण कहानी में इनका कोई स्वार्थ है।"

"क्या स्वार्थ हो सकता है ?" सहतू का प्रश्न था।

इस समय बसन्ता इनकी ओर आता दिखाई दिया। सहतू के मुख से निकल गया, "यह दुष्ट क्या करने के लिये आ रहा है।"

किसी ने उत्तर नहीं दिया। रामचन्द्र भी बसन्ते को आता देख अपने बाप के पास आ गया। बसन्ते ने रामी और सहतू को एक साथ ही देखा तो इसे शुभ लक्षण समझ 'जय राम जी की' कहकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बोला, "चाचा ! मैं तुमसे एक बात करने के लिए आया हूँ।"

"हाँ करो।"

इस पर रामी और सहतू जाने लगे तो बसन्ते ने कह दिया, "रामी माँ ! जरा ठहरो। बात तो तुम सबसे है।"

रामी ठहर गई। वे सब समझ गये कि यह अपनी पत्नी से किसी प्रकार के झगड़े के विषय में कहने आया है। इस कारण कोई भी वहाँ से नहीं गया। रामचन्द्र भी वहीं खड़ा रहा।

बसन्ते ने कहा, "चाचा ! तुम मेरी सत्तो के बाप से सुलह करा दो।"

सहतू तो इस बात से भौंचक्का हो मुख देखता रहा। उसे अवाक् बसन्ते के मुख की ओर निहारते देख उत्तर रामी ने देते हुए कहा, "बसन्ते ! सत्तो से सुलह करोगे तो सीतलू से सुलह अपने आप ही हो जायेगी।"

"मेरा मतलब यही है रामी माँ ! वे अब यहाँ कुल्ली बना रहे हैं। इससे आपका कहना मान लेंगे।"

अब सहतू ने मुख खोला। उसने कह दिया, "पति पत्नी की बातों में कोई बाहर का आदमी दखल नहीं दे सकता। मैं समझता हूँ कि दखल देना भी नहीं चाहिये।"

"चाचा ! बात यह है कि बात इतनी दूर तक चली गई है कि बिना किसी के बीच में पड़े सुलह होगी नहीं। मेरा कोई बड़ा है नहीं। होता तो उसको सत्तो के माँ-बाप के पास भेज देता। इस लिये तुमको बीच-बचाव के लिये कहने आया हूँ।"

"परन्तु बसन्ते ! रामी ने फिर बात बीच में ही काट कर कहा, "तुमने उसको पीटा भी तो है। और फिर कभी दोबारा क्रोध आ गया तो उसकी हत्या भी कर सकते हो। यदि ऐसा हुआ तो उस हत्या का पाप हम पर भी तो आयेगा।"

"नहीं रामी माँ ! ऐसा नहीं होगा। मैं सत्तो से क्षमा माँग लूँगा।"

"और तुमने उसको दुराचारिणी कहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो निरंजन ने सिखाया था।"

"तो निरंजन को क्यों नहीं कहते कि वह तुम्हारी सुलह करा दे?"

"वह तो लड़ाई कराने वाला है।"

"देखो बसन्ते! यह इस तरह नहीं हो सकता। हमको पहले सीतलू से पूछ लेने दो। कल शाम को तुम मिलना, फिर मैं बताऊँगी कि किस प्रकार सुलह हो सकती है।"

बसन्ते ने रामी माँ के चरण स्पर्श कर कहा "रामी माँ! माँ बनकर ही बच्चे की भूल को क्षमा कर दो। मैं जानता हूँ कि तुम कहोगी तो बात बन जायेगी।"

"अच्छा, कल आना, फिर तुमको बताऊँगी कि वे लोग क्या कहते हैं।"

बसन्ता गया तो ये परस्पर विचार करने लगे कि क्या हो गया है। रामी माँ का यह विचार था कि बसन्ते का निरंजन से झगड़ा हो गया है और यह सहतू भैया की बिरादरी में शामिल होने आ रहा है।

"पर प्रश्न तो यह है कि हमें इस मामले में दखल देना है कि नहीं।"

"सत्तो और सीतलू से बात करके ही किसी प्रकार की राय दी जा सकती है। मेरा विचार यह है कि दोनों पक्षों को सुलह करने की प्रेरणा तो देनी ही चाहिये। परन्तु सुलह की बात उनको परस्पर स्वयं करनी चाहिये।"

रामी के इस सुझाव ने बात बना दी। अगले दिन जब सीतलू अपनी कुल्ली नबवाने आया तो सहतू ने बसन्ते के आने की बात बता दी। सीतलू को भी इस पर बहुत विस्मय हुआ। उसने विचारोपरान्त कहा, "मैं सत्तो और उसकी माँ से बात करके ही कुछ कह सकता हूँ।"

"देखो सीतलू भैया! हमको दोनों पक्षों को शान्त करने का ही यत्न करना चाहिए। मुख्य बात तो पति-पत्नी में होनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि दोनों पक्ष एकान्त में बैठकर किसी निर्णय पर पहुँच सकें तो हमें उसमें बाधा नहीं डालनी चाहिये। पति-पत्नी का धर्म का सम्बन्ध है। यह न टूटे तो अच्छा ही है।"

सीतलू ने अपनी पत्नी और लड़की से बात की और ये एक निष्कर्ष पर पहुँचे कि वे नई कुल्ली में चल कर रहेंगे। यदि बसन्ता भी उनके साथ उसी कुल्ली में आकर रहना चाहे तो आ सकता है। सुलह तो समय पाकर मनोमालिन्य दूर होने से ही हो सकती है।

रामी की राय से वे पहले ही दोहरी कुल्ली बना रहे थे। कुल्ली का द्वार एक ही था परन्तु भीतर से वह दो भागों में बँटी हुई थी और एक में ही दो परिवार रह सकते थे। अतः सीतलू ने यह निश्चय रामी के द्वारा बसन्ते को बता दिया।

बसन्ता भी अब बस्ती के उस कक्ष में रहना नहीं चाहता था जिसका चौधरी निरंजन था। वह तुरन्त मान गया। कुल्ली तीन दिन में तैयार हो गई और सीतलू के साथ बसन्ता भी उसमें आ कर रहने लगा।

: ४ :

जब सीतलू ने भी बस्ती के इस ओर कुलिया बनवानी आरम्भ कर दी तो शहीदू ने अपनी बेटी वहीदन को बुला कर पूछ लिया, "यह सीतलू यहाँ क्या करने के लिए आ रहा है?"

शहीदू जानता तो था परन्तु केवल बात करने के विचार से पूछ रहा था।

वहीदन ने कह दिया, "वह अपनी बेटी सत्तो के लिए यह कुलिया बना रहा है। उसके घर वाले ने उसको घर से निकाल दिया है।"

"तो वह भी मुसलमान हो जावेगी?"

"अब्बा! यह कैसे?"

"कोई मुसलमान उस पर चादर डाल लेगा।"

"यहाँ कौन मुसलमान है जो ऐसा कर लेगा?"

"दो तो हैं ही, एक मैं और दूसरा तुम्हारा भाई रहमान!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो माँ और भाभी क्या करेंगी ?"

"वे भी रहेंगी। हमारे मज़हब में चार-चार बीवियाँ लिखी हैं।"

"पर माँ तो कहती थी कि उसको पेट भर खाने को भी नहीं मिलता। अब्बा ! तुम सब शराब में खर्च कर देते हो।"

"वह तो मैं छोड़ नहीं सकता।"

"मैं तो यह पूछ रही हूँ कि नई बीवी लाओगे तो उसको खिलाओगे क्या ?"

"वह अपनी तकदीर साथ लेकर आवेगी। और फिर रहमान तो शराब नहीं पीता। उसके पास तो एक और बीवी के खिलाने के लिए गुंजाइश है ?"

"उनके पास एक ही बिस्तर है। दोनों रात को उसी में सोते हैं। रहमान की बीवी उस बिस्तर में तीसरे को सोता देख उसको लात मार-मार का बाहर निकाल देगी।"

शहीदू हँसता हुआ अपनी कुल्ली की ओर चल दिया। वहीदन को यह सब वाहियात लग रहा था। उसने आवाज़ देकर कहा, "अब्बा !"

शहीदू लौट पड़ा और प्रश्न-भरी दृष्टि में उसकी ओर देखने लगा। वहीदन ने कह दिया, "रामी माँ ने मेरा नाम बासन्ती रख दिया है।"

"क्यों ?"

"वह कहती है कि मैं मौसमे-बहार की तरह सुन्दर लगने लगी हूँ।"

"कहती तो ठीक है। तुम बहुत खूबसूरत होती जा रही हो। पर मुझको यह नाम पसन्द नहीं है।"

"तो तुमको क्या पसन्द है ?"

"मुझे तो वहीदन ही ठीक लगती है।"

"तो तुम मुझे वहीदन ही कहा करो, रामी माँ बासन्ती कहा करेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, वह ऐसा नहीं कह सकती।"

"क्यों ?"

"वह नाम बदल कर तुम्हें हिन्दू बना रही है।"

"नहीं बाबा ! उसने मुझे पहले हिन्दू बनाया है। नाम तो आज ही विचार कर रखा है।"

"वाह ! कैसे हिन्दू बना लिया उसने ? तुम उधर अपनी माँ के पास आओ, तुम से कुछ पूछना है।"

"मगर आज तो तुम्हारा पीने का दिन है न ?"

"तो क्या मेरी शराब तुमको काटती है ?"

"नहीं, शराब तो नहीं काटती पर शराब पीकर तुम्हारी बेहयाई नहीं देखी जाती।"

इस पर शहीदू बोला, "अच्छा जब तुम चली जाओगी, तब पीयूंगा।"

वहीदन शहीदू के साथ चल दी। शहीदू की कुलिया वैसी ही गन्दी थी जैसा कि पहले हुआ करती थी। हाँ अब माँ के कपड़े फटे हुए थे और उन पर पैबन्द लग रहे थे। वह खाना बना चुकी थी और शहीदू के आने की प्रतीक्षा कर रही थी।

उसे देख सईदन ने पूछ लिया, "तुम क्यों आई हो ?"

"अब्बा बुला कर लाये हैं।"

"क्या कहते हो इसको ?" सईदन ने शहीदू से पूछा।

"काटने को क्यों दौड़ रही हो ? मैं इसको यह बताने के लिए लाया हूँ कि यह रामी की बच्ची इसको हिन्दू बना रही है। उसने इसका नाम तक बदल दिया है।"

"कैसे हिन्दू बना लिया है उसने ?"

वहीदन बोली, "उसने मुझे नहाने का ढंग बताया है, दातून-कुल्ला करने, हाथ धोने, नित्य धुले हुए कपड़े पहनने के लिए कहती है। अब हमारा बिस्तर साफ रहता है। मेरे घर वाले का बिस्तर मेरे से अलहदा रहता है। जब हममें इकट्ठे सोने की ख्वाहिश होती है तो हम एक-दूसरे से पूछ लेते हैं। हम अब झूठ नहीं बोलते। चोरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं करते और रोज खुदा की इबादत करते हैं।

"कई दिन तक रामी माँ हमारे घर में आकर हमें बताती रही है कि यह करो, वह करो। आज दोपहर के वक्त आई तो मैं धुले कपड़े पहन आइने में मुख देख रही थी। वह मूझको देखकर बोली, 'वहीदन ! तुम तो अब बहुत खूबसूरत लग रही हो। मौसमे-बहार की तरह खूब-सूरत होने से तुम्हारा नाम बासन्ती हुआ।'

"मैंने कहा, "पर यह वह तो हिन्दुआना नाम है ?"

"वह कहने लगी, तो तुम पहले ही बन चुकी हो।"

"इसके बाद उसने अपने पड़ोस में सबको कह दिया कि आज से मेरा नाम बासन्ती रख दिया गया है।

"मैंने कहा कि मैं तो रोज खुदावन्द करीम का नाम लेती हूँ।

"उसने कह दिया, 'न राम-राम करने से कोई हिन्दू होता है और न खुदा का नाम लेने से कोई मुसलमान। आमालों से नेक और बद होते हैं। तुम नेक औरत हो इसलिए तुम अब हिन्दू हो।"

इस पर सईदन ने पूछ लिया, "तो सब नेक आदमी हिन्दू ही होते हैं क्या ?"

"मैं क्या जानूं अम्मी ! मैं तो यह जानती हूँ कि अब्बा नेक नहीं हैं। वे अपने को हिन्दू नहीं कहते। इसलिए हिन्दू वह है, जो अब्बा जैसा नहीं है।"

"बताओ मियाँ ! क्या कहते हो ? बेटी कहती तो ठीक ही है कि तुम नेक आदमी नहीं हो। तुम अपनी बेटी को ही बीवी बनाने की सोचा करते हो। बताओ तुम मुसलामन हो क्या ? अगर तुम मुसलमान हो तो तुम्हारी बेटी वैसी मुसलमान नहीं है।"

वहीदन बाप के ख्यालात को जानती थी। इसीलिए वह उसकी कुल्ली में आने से डरा करती थी। उसने माँ के सवाल का जवाब दे दिया, "माँ ! रामी माँ कहती थी कि नेक मुसलमान और नेक हिन्दू एक जैसा ही होता है। बेवकूफों ने ये अलहदा नाम रख लिए हैं।"

इस समय शहीदू ने जेब से बोतल निकाल कर बाहर रख ली और बोला, "वहीदन ! मुर्गी बना है खाओगी ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं अब्बा ! मैं चली, तुम खाओ।"

जब वह चली तो शहीदू बोला, "इस रामी बदजात को यहाँ से भगाना चाहिए। थोड़ी पी लूँ तो उसका बन्दोबस्त करता हूँ।"

सईदन ने समझा कि वह उसके साथ फौजदारी करने जा रहा है। इससे वह कुलिया के दरवाजे पर बैठ गई और बोली, "देखती हूँ तुम कैसे पीकर बाहर जाते हो ? वे सब मिल गये तो तुमको जान से ही मार डालेंगे।"

: ५ :

वहीदन ने अपने घर वाले से जाकर बताया, "अब्बा तो मेरे हिन्दू हो जाने पर बहुत नाराज़ हो रहे हैं।"

"तो फिर ?"

"आज उसके पीने का दिन है। वह फौजदारी भी कर सकता है।"

"तो क्या किया जाय ? यदि किसी पर जबरदस्ती करेगा तो वह चूड़ियाँ ही पहने बैठा होगा क्या ?"

इसका अभिप्राय यह था कि राम ने शहोदू के साथ झगड़ा करने का निश्चय कर लिया है। एक दिन उसने भी सुना था कि शराब के नशे में वह वहीदन से बलात्कार करने की सोचा करता है।

उसने कुछ विचार कर कह दिया, "अगर वह यहाँ आया तो तुम भाग कर रामी माँ की कुलिया में चला जाना।"

"और आप ?"

"मैं रस्सी से उसके हाथ पाँव बाँध कर यहाँ कैद कर रखूंगा। प्रातः नशा उतर जाने पर उसको शरमिन्दा कर, यहाँ से निकाल दूंगा।"

"देखिये जी ! शराब पीकर वह भली-बुरी बात में फरक नहीं कर सकता। इस कारण उससे बहुत झगड़ा नहीं करना।"

"अगर उसने मुझ पर हाथ उठाया तो फिर अपनी हिफाजत तो करनी ही होगी।"

इस पर वहीदन ने अपने मन में यह संकल्प कर लिया कि चाहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ भी हो जाय वह यहाँ से जायेगी नहीं।

वहीदन और राम मन में अनेकानेक विचार करके लेटे तो सो गये। वे दो घण्टे से अधिक नींद ले चुके थे कि उनकी नींद एक चीख सुनने से खुली। वे एक-दूसरे का मुख देखने लगे। कुछ विचार करने पर वहीदन ने कह दिया. "यह चीख तो अब्बाजान की कुलिया से आई लगती है।"

राम के मन में भी यही आया कि चीख तो वहीदन की मां की थी। इससे वह कुलिया से बाहर निकल आया और शहीदू की कुलिया के बाहर जा वहाँ दरवाजे से कान लगा कर सुनने लगा। शहीदू कह रहा था, "अब चुप की है। कहा था हट जाओ, हट जाओ, हटती ही नहीं थी।"

इस समय वहीदन, नसीम, लालचन्द और किसनू इत्यादि भी वहाँ पर आ गये।

रामी ने कुलिया का दरवाजा खटखटाया तो अन्दर से आवाज आई, "कौन है ? मियाँ-बीवी के झगड़े में कौन दखल देने के लिए आया है। जाकर सो रहो।"

वहीदन पुकार रही थी, "अम्मी अम्मी !"

सईदन की कोई आवाज नहीं आ रही थी।

रहमान आया तो उसने दरवाजा उखाड़ कर निकाल दिया। दरवाजा खुला तो सबने देखा कि सईदन नीचे अचेत पड़ी है और शहीदू उसकी गर्दन पकड़े छाती पर सवार था। रहमान ने अपने बाप को डाँट कर कहा, "अब्बा ! क्या कर रहे हो ?"

रहमान ने उसे बाँह से पकड़ कर एक ओर किया तो उसकी समझ में आया कि गला घोट देने से उसकी माँ मर चुकी है। उसका बाप तो मुर्दे की गर्दन दबा कर उसे चुप करा रहा था।

यह समझ लेने पर कि सईदन को शहीदू ने मार डाला है, सब भौचक्के हो, एक-दूसरे का मुख देखने लगे। शहीदू कुछ देर तक तो अपनी बीवी को गर्दन फेंके लेटे देखता रहा। एकाएक उसकी समझ में आय कि वह तो मर गई है और मैंने उसका गला-घोंट कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार डाला है। इसके साथ ही उसकी समझ में यह भी आया कि मैं कातिल हूँ और मुझको फाँसी पर लटका दिया जायेगा। डर के कारण उसका नशा कम होने लगा।

रामी माँ ने जब समझा कि हत्या हो गई है तो उसने रहमान को कह दिया, "अपने बाप के हाथ-पाँव बाँध लो, कहीं भाग न जाय।"

रहमान कुछ दूसरा ही विचार कर रहा था। वह इस कारण झिझक रहा था कि उसको बाप के फाँसी पर लटक जाने की सम्भावना प्रतीत हो रही थी।

शहीदू को अपनी मौत दिखाई देने लगी तो वह उठा और वहाँ खड़े हुओं को इधर-उधर धकेलता हुआ कुलिया से निकल एक ओर को भाग गया।

वहीदन ने कहा, "रामी माँ! मरने वाली तो मर गई, अब हम अब्बा को फाँसी पर चढ़ा कर क्या ले लेंगे?"

इसका उत्तर रहमान ने देते हुए कहा, "आप सब लोग अपनी-अपनी कुल्लियों में जाकर सो जाइये और ऐसे सोइये मानो आपको इस वारदात के बारे में कुछ जानकारी ही न हो। बाकी का बन्दोबस्त कर दूंगा।"

रामी कुछ देर तक विचार करती रही। फिर बोली, "बाप जाने, बेटा जाने। एक ने बीवी की हत्या की है और वह दूसरे की माँ थी। हम से कोई पूछेगा तो हम ठीक-ठीक बता देंगे। नहीं पूछेगा तो हम अपने-आप किसी से कहने के लिए जायेंगे नहीं।"

लालचन्द और सहतू को यह तजवीज पसन्द नहीं आई। मगर नसीम ने अपने श्वसुर की ओर दयनीय दृष्टि से देखा तो वह आँखें झुकाये शहीदू की कुलिया से निकल अपनी कुलिया की ओर चल पड़ा। लालचन्द और भगतू उसके पीछे-पीछे निकल गये। रामी, मनकी और लक्ष्मी भी चल दीं।

अब रहमान, उसकी बीवी शबनम, राम और उसकी बीवी वहीदन, तथा किसनू और उसकी बीवी नसीम वहाँ रह गये। रहमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने वहीदन की ओर देख कर कहा, "देखो वहीदन ! माँ मर गई है। बाप पकड़ा गया तो जरूर फाँसी हो जावेगा। हमको इससे क्या फायदा होगा ? इसलिए हमें अपने-आप पुलिस में रिपोर्ट लिखाने का क्या मतलब ! मैं कल सुबह माँ को दफना दूंगा। अगर उससे पहले ही पुलिस में बात खुल गई तो यही कहेंगे कि हमने दिन निकलने पर इस कुलिया का दरवाज़ा खुला पाया था और माँ को मरा हुआ देखा। उस वक्त बाप यहाँ नहीं था।"

"तो अब क्या करे ?" वहीदन का सवाल था।

"माँ को बिस्तर पर लिटा देते हैं। कुलिया का दरवाजा खुला छोड़ देते हैं और अपनी-अपनी कुलिया में जाकर सोने का बहाना कर लेट जाते हैं।

"मेरा मतलब यह है कि हम अपने-आप बाबा के खिलाफ रिपोर्ट नहीं लिखवायेंगे। हमने कुछ देखा भी तो नहीं। जाहिर भी ऐसा ही करेंगे और अगर सुबह तक सब अमनो-अमान रहा तो माँ को दफना देंगे।

इस राय को सबने ठीक समझा और माँ के शव को उसके बिस्तर पर लिटा, कुल्ली का दरवाजा खुला छोड़, सब अपनी-अपनी कुल्लियों में चले गये।

दूसरी ओर सब रामी की कुलिया में इकट्ठे हो गये। वे लोग भी वैसा ही विचार कर रहे थे, जैसा कि रहमान ने बताया था। रामी ने कह दिया, "नींद तो आयेगी नहीं। इस पर भी जिनकी माँ मरी है, वे ही निश्चय करेंगे कि क्या करना है। हम को तो इस पूर्ण घटना से अपनी अनभिज्ञता प्रकट करनी चाहिए। आप लोग अपनी-अपनी कुल्लियों में जाकर लेट जाइए।"

सबने इस बात को ठीक समझा और अपनी-अपनी कुल्लियों में जाकर सो गये। इस पर भी वे लेटे नहीं रह सके। दिन निकलने से पूर्व ही पुलिस शहीदू को हथकड़ी लगाये वहाँ आ पहुँची।

पुलिस शहीदू की कुलिया में गई। वहाँ शव को पड़ा देख आस-पास की कुल्लियों के निवासियों को जगाना आरम्भ कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया।

सबसे पहले आँखें मलता हुआ रहमान निकला। फिर एक-एक कर अन्य सभी बाहर निकल आये। सबके कच्चे बयान हुए, और सब को थाने में आने के लिये कह पुलिस लाश को उठवा और शहीद को साथ लेकर चली गई।

: ६ :

शहीदू कुलिया से भागा तो सीधा यमुना के किनारे जा पहुँचा। उसने खुदकशी करने के लिये यमुना में कूदना उचित समझा। वह यमुना में कूद पड़ा परन्तु पानी ठण्डा होने के कारण एक ही डुबकी में उसका रहा-सहा नशा भी उतर गया। वह तैर कर पुनः किनारे पर आ लगा। वहाँ बैठ विचार करने लगा कि क्या करे? अब उसके मन में पश्चात्ताप हो रहा था। उसको अपने किये पर दुःख होने लगा। इस पर वह अपने कर्म और उसके पूर्व के विचारों पर मनन करने लगा इससे उसे स्वयं पर ग्लानि अनुभव होने लगी।

उसके कपड़े भीग गये थे और वह सर्दी से ठिठुर रहा था। आत्म-ग्लानि से गलता हुआ वह अपनी बस्ती की ओर चल पड़ा। उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब उसने देखा कि उसके पाँव, उसके मन की इच्छा के विपरीत, उसकी बस्ती की ओर न जाकर तिमार-पुर की ओर बढ़े जा रहे हैं। इस बात को अनुभव कर वह पुनः अपने कर्मों और उनके अन्तिम परिणाम, अपनी ही औरत की हत्या के विचारों में खो गया। वह अर्द्धचेतना की अवस्था में पुलिस चौकी में जा पहुँचा और वहाँ पर पहरा देने वाले कान्स्टेबल को अपने कुकर्म बताने लगा।

वह उसको पकड़ कर भीतर मुंशी के पास ले गया। जब शहीदू ने बतलाया, मैं अपनी बीवी को कत्ल करके आया हूँ और रपट लिखाना चाहता हूँ, तो मुंशी और कान्स्टेबल चौकन्ने हो गये। उन्होंने तुरन्त थानेदार को जगाया और उसके सामने शहीदू के बयान लिख लिए। थानेदार एक हैड-कान्स्टेबल और पाँच-छः पुलिस के सिपाहियों को साथ लेकर घटनास्थल पर जा पहुँचा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहमान ने तो कत्ल को छिपाने की योजना बना ली थी, परन्तु होनी बहुत प्रबल सिद्ध हुई। यदि शहीदू वहाँ से भाग जाता तो रहमान की योजना में वह भी सम्मिलित हो बच जाता। परन्तु पाप उसके सिर पर नाच रहा था और उसके अपने मुख से ही वह सब बातें निकल रही थीं, जो उसको दण्डनीय सिद्ध कर रही थीं।

शहीदू पर मुकद्दमा चला। उसमें उसके बयान और फिर उसका पुलिस को लेकर घटनास्थल पर जाना तथा वहाँ पर घटित घटना का सविस्तार वृत्तान्त बताना ही उसको दण्ड दिलाने में पर्याप्त था। रहमान के तथा उसकी बहिनों के कहने पर रामी, सहतू आदि ने घटना से अनभिज्ञता प्रकट की।

सेशन कोर्ट में शहीदू को आजन्म कारावास का दण्ड मिल गया।

मुकद्दमे को छः मास लग गये। इतने समय में नसीम और वहीदन, नानकी तथा बासन्ती विख्यात हो गई थीं। रहमान को अपने संस्कारों के कारण यह सब अस्वाभाविक प्रतीत होता था। उसने अपनी बहिनों को समझाने का यत्न किया, परन्तु वह सफल न हो सका। इससे वह एक दिन समीप की किसी मसजिद से एक मुल्ला को पकड़ लाया।

मौलाना अब्दुल वहीद देवबन्द के मकतब से इस्लामी मजहब की तालीम लेकर मसजिद में काम करता था। उसने जब शहीदू की लड़कियों की बात सुनी तो एक दिन जब नसीम और वहीदन के घर वाले काम पर गये हुए थे, आ गया। रहमान ने बहिनों को बुला लिया। नसीम ने मुल्ला को देखा तो वह समझ गई कि वह उनको कुछ समझाने के लिए आया है। इससे उसने रहमान से कहा, "भैया! रामी माँ को भी बुला लूं?"

"क्यों?"

"हम सब बातों का जवाब नहीं जानती।"

इस पर अब्दुल वहीद नें कह दिया, "जवाब की जरूरत नहीं। मजहब के मामलों में दलील को दखल नहीं होता। देखो बेटी! खुदा ला-शरीक है। उसके बराबर कोई नहीं। उसके कलाम में हमारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्ल को दखल नहीं। खुदा का रसूल वली-उल-इस्लाम हजरत मोहम्मद हैं। वे खुदा के कलाम को हम तक पहुँचाने वाले हैं। कुरआन हज़रत वली-उल-इस्लाम मुहम्मद साहब पर नाजल हुआ था और उसने हमको बताया है कि उस पर ईमान न लोने वाले काफिर हैं। काफिरों के साथ ताल्लुक बनाना कुफ्र है। वे दोज़ख में जायेंगे। हज़ारों सालों तक वे दोज़ख की आग में जलेंगे। तब वे चीख-पुकार करेंगे और उनकी सुनने वाला कोई नहीं होगा।

"इससे में तुमको कहता हूँ कि तुम इन काफिरों से ताल्लुक छोड़ दो। हजरत मुहम्मद और खुदा के कलाम कुरआन शरीफ पर ईमान लाओ।"

इतना कह मुल्ला नसीम की ओर देखने लगा। उसके मुख पर अविश्वास प्रकट हो गया था। जब मुल्ला चुप हो गया तो नसीम ने पूछ लिया, "हजरत ! हम अपने खाविन्द से भी ताल्लुक छोड़ दें क्या ? वे दोनों हिन्दू के बेटे हैं।"

"नहीं, उनको हजरत की उम्मत में शामिल कर लो।"

"कैसे ?"

"उसका नाम बदल कर और उनको गाय का गोश्त खिला कर।"

"इससे वे मुसलमान हो जायेंगे क्या ?"

"हाँ।"

"नाम तो आपने बदल दिये थे। गाय गोश्त हम भी नहीं खातीं। अब्बाजान भी नहीं खाते थे।"

"तुम तो मुसलमान की बेटी हो न। यह तो काफिर के दिमाग से कुफ्र निकालने का नुसखा है।"

"हमसे यह नहीं हो सकता।"

"तो तुम भी उनके साथ दोज़ख में हज़ारों साल जलोगी। तुम्हारी रूह तड़फड़ाने लगेगी और तब तुम्हारी सुनने वाला कोई नहीं होगा।"

"अगर हम नेक, पाक-साफ रहें और रोज उस परवरदिगार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुदाबन्द करीम का नाम लें, तव भी दोज़ख में भेज दी जायेंगी क्या ?"

"हाँ काफ़िरों से ताल्लुक रखने वालों के लिए ऐसा ही लिखा है।"

"आप झूठ बोलते हैं। हम इस्लाम को इतना गिरा हुआ नहीं समझतीं। इसलिए या तो आप झूठे हैं या इस्लाम गलत है।"

मुल्ला नसीम को, क्रोध में भौंचक्का हो देखता रहा गया। वह अभी नसीम का क्रोध से लाल मुख देख ही रहा था कि वहीदन ने कह दिया, "रहमान भैया ! यह किस मूर्ख को पकड़ कर ले आये हो ? इसकी बातों से तो हमारा इस्लाम से एतबार ही उठने लगा है।

"देखो मुल्ला साहब ! हमारे बाप ने हमारी माँ को गला घोंट कर मार दिया था। वह दोज़ख में जायेगा या बहिश्त में ? उसका नाम शहीदू है। वह खुदा का नाम ले-लेकर कसमें खाता था और काफ़िरों से नफरत करता था।"

मुल्ला अभी भी विचार कर रहा था कि इसका उत्तर कैसे दे। इस पर नसीम ने रामी के मुख से सुनी बात कह दी—"देखो, वह नेक आदमी नहीं था। शराब पीता था, और नशे में वहशीपना करता था। अपनी लड़की की खूबसूरती और जवानी को देख उससे बदफेली करने की कोशिश में अपनी बीवी को कत्ल कर बैठा। वह मुसलमान होने पर भी, रोज कलमा पढ़ने पर भी, दोज़ख में ही जायेगा। अगर आप कहें कि मुसलमान होने से बहिश्त में जायेगा तो आप झूठ बोल रहे हैं।

"जब बुरा काम करने पर हिन्दू और मुसलमान दोनों दोज़ख में जायेंगे तो नेक काम करने वाले हिन्दू और मुसलमान दोनों बहिश्त में क्यों नहीं जायेंगे ?"

आखिर मुल्ला को एक युक्ति सूझी। उसने कहा, "आमालों से इतना कुछ नहीं होता, जितना एतकाद से होता है। एक पत्थर की मूर्ति पर एतकाद रखने वाला नेक काम कर ही नहीं सकता।"

"परन्तु यहाँ रामी माँ तो बहुत नेक है। वह भगवान कृष्ण की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूर्ति की पूजा करती है और सबका भला करती रहती है। किसी की भी वह निन्दा नहीं करती। सब कीभ लाई में ही दिन-रात लगी रहती है। यहाँ तक कि बाबा के पकड़े जाने पर भी उसने किसी को उसके खिलाफ अदालत में पेश नहीं होने दिया।

"आप कहते हैं कि वह दोज़ख में जायेगी और दुराचारी कातिल बहिश्त में जायेगा। क्या आपकी बात सच हो सकती है ?"

मुल्ला ला जवाब हो रहा था। अब उसने दूसरी चाल चली। उसने वहीदन से पूछ लिया, "तुम्हारा नाम क्या है ?"

"वहीदन।"

"पर वह रामी और दूसरे लोग तुम्हें बासन्ती कहते हैं।"

"हाँ।"

"तुम उनको मना क्यों नहीं करतीं ?"

"मेरी माँ मुझको चुटकी कहती थी। मैंने उसे मना नहीं किया। अब कोई मुझे बासन्ती कहे तो मैं क्यों मना करूँ ?"

"तुम बासन्ती कहने पर मत बोला करो।"

"क्यों ?"

"क्योंकि यह काफिरों का-सा नाम है।"

वहीदन और नसीम दोनों हँस पड़ीं और उठ खड़ी हुईं। नसीम ने खड़े-खड़े कह दिया, "तुम मुझको नसीम कहो। दूसरे मुझे नानकी कहें। मैं किसी को मना नहीं करती। अब हम जाती हैं।"

"ठहरो-ठहरो।" मुल्ला ने उनको हाथ से रुकने का संकेत कर पूछा, "वह रामी तुमको हिन्दू कहती है क्या ?"

"हाँ, वह समझती है कि हिन्दू नेक आदमी को कहते हैं। यह हम को नेक समझती है। इसलिए हमको हिन्दू मानती है। अंग्रेजी में भले लोगों को जैंटलमैन कहते हैं, हमें भी यदि कोई ऐसा कहे तो तुम्हें क्या एतराज़ है ?"

मुल्ला हँस पड़ा और रहमान से बोला, "इनको वहम हो गया है कि हिन्दू भले आदमी को कहते हैं। असल में हिन्दू के मायने तो चोर, डाकू और बदमाश होता है। यह फारसी का लफ़्ज़ है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु नसीम और बहीदन तो मुल्ला के इस कथन से पूर्व ही निकल कर अपनी-अपनी कुल्लियों में जा चुकी थीं।

: ७ :

रामी कुछ अधिक पढ़ी-लिखी औरत नहीं थी। वह गीता-रामायण भी नहीं पढ़ सकती थी। कभी मन्दिर में रामायण की कथा सुना करती थी और उसी पर अपनी बुद्धि से जोड़-तोड़ कर बान बना लेती थी।

दिन-पर-दिन व्यतीत होने लगे। अब उनके समीप आकर सीतलू और उनका परिवार भी रहने लगा था। सीतलू के जब कोई कहता, "तुम भी मुसलमान हो गए हो!" तो वह कह देता, "तुम, तुम्हारा बाप, तुम्हारा दादा, मुसलमान होगा। मैं नहीं। तुम सब बेईमान और मूर्ख हो। तुम भली लड़की को बिना प्रमाण के दुराचारिणी कहते थे। मैं तुम्हारी बिरादरी से बाहर हूँ।"

काल व्यतीत होने पर बस्ती के कुछ अन्य लोगों को अपनी भूल का आभास होने लगा और वे निरंजन के चौधरपन को छोड़ लोग पुनः सहतू को चौधरी मानने लगे।

सन्तू प्रति रविवार को अपने माता-पिता से मिलने के लिए आया करता था। वह भी इस बस्ती में होने वाले परिवर्तन को देख अपनी बाल-बुद्धि से अर्थ लगाया करता था। इसके अर्थ लगाने में रामनारायण की पत्नी उसकी सहायिका हो रही थी।

तिमारपुर वाली इस निर्धनों की गन्दी बस्ती में यह संघर्ष चलते हुए कई वर्ष व्यतीत हो गये थे। बस्ती के आधे से अधिक हिन्दू परिवार सहतू चौधरी की बिरादरी में सम्मिलित हो चुके थे। वास्तव में सहतू की परामर्शदात्री रामी माँ थी और जब कभी भी कोई जटिल समस्या उपस्थित होती, जो सहतू समझा नहीं सकता था, वह रामी माँ से राय लेकर समझाने का यत्न करता। रामी प्रायः सभी समस्याओं का सुझाव बता दिया करती थी और उससे सहतू की प्रतिष्ठा बढ़ती थी।

सीतलू की लड़की अपने पति के साथ बाप के पास रहती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका घर वाला अपनी भूल समझ गया। सत्तो के एक लड़का भी हो चुका था।

रहमान मुल्ला को निरुत्तर हो जाते देख मन में विचार करने लगा था कि रामी की बात भी सुननी चाहिए। इससे अब वह भी कभी-कभी उसके पास आकर बैठ जाता और उसकी अन्य लोगों से हो रही बातों को ध्यान से सुना करता था।

रामी माँ की सबसे प्रबल युक्ति होती थी, "तुम लोग नसीम को हिन्दू नहीं मानते। न मानो। तुम उसके हाथ से खाना न खाना चाहो तो मत खाओ। परन्तु मैं अथवा अन्य कोई, उसको हिन्दू कहते अथवा मानते हैं तो तुम मना क्यों करते हो? वह बहुत से हिन्दुओं से अधिक पाक-साफ, नेक कर्म करने वाली, दया, क्षमा करने वाली हैं। मैं उसको बहुत अच्छी समझती हूँ। इसमें तुमको क्यों दुःख होता है?

हिन्दुओं के विरोध पर भी नसीम, नानकी और वहीदन, बासन्ती होती जा रही थीं। रहीम-करीम नाम भूले जाने लगे थे और रामचन्द और किसनू नाम प्रचलित होते जाते थे।

एक बार निरंजन आदि ने यह विख्यात कर कि रामी हिन्दू धर्म का नाश कर रही है उसको अकेले देख मार डालने का षड्यन्त्र भी किया, परन्तु वे रामी को छू तक नहीं सके। निरंजन ने अपने दो साथियों की सहायता से एक सायंकाल उसको रोक लिया। रोक कर वह बोला, "राँड तैंने धर्म का नाश कर दिया है तू...!"

निरंजन ने कहते-कहते लाठी मारने के लिए उठाई, परन्तु रामी को मुस्कराते देख वह रुक गया। उसने कहा, "तुझे मरने से डर नहीं लगता? तू तो हँस रही है।"

"मारो न भैया! रुक क्यों गये? एक अबला बहिन की हत्या कर हिन्दू धर्म की रक्षा कर लो।"

रामी के हाथ में दाल-आटे की गठरी थी। वह पुनः बोली, "इस देह से छटकारा दिला कर पुण्य कमा लो भैया!"

निरंजन के साथी निरंजन को वार करने में संकोच करते देख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ से भाग खड़े हुए। उनको भागते देख निरंजन को सन्देह हुआ कि कोई आ रहा है। इसलिए उसने भी अपनी लाठी नीची कर ली और बोला, "जाओ, आज बच गई हो। फिर किसी दिन···।"

रामी हँसती हुई अपने मार्ग पर चलती गई। इस घटना के बाद तो रामी की धूम मच गई। वे लोग समझने लगे कि भगवान उसकी रक्षा कर रहा है। निरंजन बदनाम हो बस्ती छोड़ गया!

मोहिनी चौदह वर्ष की हुई तो उसका विवाह सहतू के छोटे लड़के के साथ कर दिया गया। विवाह के अवसर पर सन्तू तीन दिन की छुट्टी लेकर वहाँ आया था। विवाह के उपलक्ष्य में लाजवन्ती, रामनारायण, मोहिनी को शकुन डालने आये। उन्होंने मोहिनी को रेशमी पोशाक और गले का एक आभूषण दिया। इससे तो सन्तू की महिमा बढ़ गई। सन्तू ने भी बहिन को एक जोड़ा कपड़ा अपने वेतन में से दिया।

लाज ने इन लोगों की बस्ती देखी तो वहाँ पर नालियाँ, टट्टी इत्यादि के लिए किसी प्रकार का प्रबन्ध न देख रामी से कह दिया, "आप लोग यहाँ कैसे रहते हैं? यह तो बहुत ही गन्दी जगह है?"

"हाँ, ललाइन! पर क्या करें? यहाँ एक परिवार की डेढ़-दो रुपये दैनिक से अधिक आय नहीं है। सब मेहनत-मजदूरी ककने वाले लोग हैं। आप लोगों से ये अधिक खाते हैं। इनकी आय का सब से अधिक भाग भोजन में व्यय होता है। शेष कुछ कपड़ों में। मकान के लिए तो इनके पास कुछ बचता ही नहीं है।

"इस बस्ती के इस ओर मैंने इनकी अपनी मेहनत से कुछ तो सफाई का प्रबन्ध किया है। वह देखों, औरतों के लिए दिन के समय टट्टी-पेशाब का स्थान बन गया है, परन्तु यह तो कुछ भी नहीं।"

रामनारायण कुछ और ही विचार कर रहा था। उसने रामी की विवशता को देखा तो पूछ लिया, "यदि कोई समीप तुम लोगों के लिए मकान, नल, शौचालय, नालियाँ इत्यादि बनवाये और बहुत ही मामूली भाड़े पर तुम लोगों को दे तो कैसा रहे?"

"इसके साथ ही एक बात यह हो जाये तो बहुत आराम हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाएगा। उस पक्की बस्ती की सफाई का प्रबन्ध भी उस भाड़े में ही हो तो बात चल जाएगी। यदि उनकी मरम्मत, सफाई इन लोगों पर छोड़ दी गई तो ये कर नहीं सकेंगे।

"कुल्ली की तो हम नदी के तट से चिकनी मिट्टी और गोबर लाकर, पुताई और मरम्मत कर लेते हैं। शौच के लिए हम जंगल में चले जाते हैं। वहाँ धूप, पानी और सूअर सफाई कर देते हैं। जब बस्ती पक्की बनी, शौचालय भी पक्के बन गये तो उनकी सफाई और मरम्मत हमारे बस की बात नहीं होगी। वहाँ की सफाई तो कच्ची कुल्लियों से भी अधिक कठिन हो जायेगी।"

रामनारायण कुछ नहीं बोला, परन्तु यह योजना उसके मन में चक्कर काटती रही। वह एक बात मान गया था कि रामी की व्यावहारिक बुद्धि पढ़े-लिखे व्यक्तियों से भी अधिक है। उसके लिए विचारणीय बात यह थी कि संसार भर का वह कल्याण तो कर नहीं सकता। अपनी सीमित शक्ति से वह क्या इन बीस-तीस घर वालों की सुख-सुविधा का प्रबन्ध कर सकता है?

घर जाकर वह भूमि, नक्शा और पूंजी तथा चालू खर्च का हिसाब-किताब बनाता रहा। उसने एक इंजीनियर को, सस्ते परन्तु मजबूत मकानों की एक बस्ती बनाने, उसमें सेनेटरी प्रबन्ध और फिर कुआँ इत्यादि के प्रबन्ध पर विचार करने के लिये कहा। उसने यह भी बताया कि वह किराया तो खर्च के लिए लेना चाहेगा।

इंजीनियर ने दो मास में एक बस्ती की योजना बनाई। उसने कुआं और कुएँ के चारों ओर पचास मकानों की बस्ती, मकानों से कुएँ तक आने-जाने के लिए पक्के मार्ग, नालियाँ और बस्ती से कुछ दूर हट कर शौचालय के लिए स्थान की व्यवस्था दस एकड़ भूमि के अन्तर्गत योजना-बद्ध कर दी। रामनारायण ने एक ऊँची ऊसर भूमि, गाँव वालों से तीन सौ रुपया प्रति एकड़ के हिसाब से लेकर इस पर सोलह-सत्रह हजार रुपया ऊपर लगा कर इंजीनियर द्वारा बनाई गई योजनानुसार एक बस्ती बना दी। समय-समय पर रामी, सहतू और अन्य बस्ती के समझदार लोगों को दिखा-दिखा कर उन की सुविधाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के लिए प्रबन्ध भी कर दिया।

जब नई बनी बस्ती में ये लोग जाकर बसने लगे तो रामनारायण ने दो रुपये महीना एक मकान का किराया नियत कर दिया। सब मिल-मिला कर पचपन मकान थे। इनका किराया सौ रुपए के लगभग आने लगा।

दूसरी ओर रामी भी अपना दिमाग लड़ा रही थी। वह समझ रही थी कि एक दाता ने पक्की बस्ती बना दी है। उस दाता के इस धन की रक्षा करना इन मकानों में रहने वालों का काम है। इसके लिए उसकी समझ में आया कि सहतू की बिरादरी को सुदृढ़ करना चाहिए।

रामी ने उन पचास घरों के पुरुषों की पंचायत बुलाकर कहा, "हम पहले यमुना के तट पर श्मशान भूमि के समीप एक लाला द्वारा बनाये गये झोपड़ों में रहते थे। उन झोंपड़ों का किराया भी हम दो रुपया मासिक ही दिया करते थे। वे कच्चे, गन्दे और बरसात में टपकाने वाले थे और साथ ही आँधी में उड़ भी जाया करते थे। इस पर भी किराया लेने के बाद लाला उनकी मरम्मत नहीं करवाता था।

"यमुना में बाढ़ आई तो हमारे सामान सहित वे झोंपड़े पानी में बह गये। हमारी वर्षों की कमाई जल में बह गई। बाढ़ उतरने के बाद लाला ने उसी स्थान पर झोंपड़े बनाये तो उनका किराया दो के स्थान तीन कर दिया। मैंने जब पूछा कि अब किराया क्यों ज्यादा लिया जा रहा है तो वह बोला कि झोंपड़ों के बह जाने से उसकी हानि जो हुई है?

"अब लाला रामनारायणजी ने यह बस्ती बनाई है। मकान पक्के हैं। रसोई घर भी साथ में है। पर्देदार नहाने का स्थान है। शौचालय हैं, नालियाँ और सड़कें है। इस सब पर तो बहुत रुपया खर्च हुआ होगा। इस पर भी मेरे कहने पर उन्होंने दया कर किराया दो रुपये प्रति-मास ही रखा है। भगवान जाने उनको हानि हो रही है अथवा लाभ! मेरी समझ में तो एक बात आ रही है, हमको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाभ हो रहा है।

"इसलिए मेरा चौधरीजी से कहना है कि यहाँ की सफाई, मरम्मत और किराया एकत्रित करके देने का प्रबन्ध हमारी बिरादरी ही किया करे और उनको यह किराया घर बैठे ही मिल जाया करे। इसके लिए हम एक रुपया मासिक और खर्च करें, जिसमें से शौचालय की सफाई, और बस्ती में सैकड़ों अन्य सम्मिलित स्थानों की सफाई की जा सके और कभी टूट-फूट हो तो मरम्मत कराई जा सके।

"इस एक रुपया अधिक किराये से हम इन कामों के लिए एक आदमी, जिस पर आप लोगों का विश्वास हो, नियत कर दें।"

: ८ :

राधाकृष्ण और रामनारायण की दुकानें पृथक्-पृथक् चलते हुए चार वर्ष हो गये थे। दुकानें अगल-बगल में ही थीं। राधाकृष्ण हठ कर रहा था कि परम्परागत दुकान उसको मिले। वह बाप का बड़ा लड़का है। रामनारायण इससे परेशानी तो अनुभव करता था परन्तु वह भाई से झगड़ा करना नहीं चाहता था। फैसला कराने वाले लाला बनवारी लाल थे।

बनवारी लाल दोनों भाइयों में पंच बनना नहीं चाहता था। रामनारायण उससे ही पंच बनने के लिए आग्रह कर रहा था। बनवारी लाल ने कहा भी कि राधाकृष्ण उसका दामाद होने से अनजाने और बिना इच्छा के भी कोई यह बात हो सकती है जो उसको अथवा किसी अन्य को राधाकृष्ण के साथ रियायत प्रतीत हो सकती है। उस समय वह बड़े धर्म संकट में पड़ जावेगा।

रामनारायण ने कहा, "लाला जी! यह बात नहीं। मैं आपकी न्याय-बुद्धि पर अगाध विश्वास करता हूँ और यदि अनजाने में कुछ रियायत किसी पर हो गई तो हम दोनों भाइयों में ही होगी न? इससे हमको क्या गिला होगा? सत्य बात तो यह है कि मैं आपको अपने पिता के समान मानता हूँ। और यदि पिता हममें से किसी के साथ रियायत करता है तो किसी भी पुत्र को भला इसमें कुछ कहने का अवसर क्यों होगा? पिता की सम्पत्ति है। जिस पुत्र को वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठीक समझे दे सकता है। साथ ही मेरी एक और भावना है। घर का झगड़ा घर में ही रहे तो ठीक है।"

बनवारी लाल न मानता यदि चन्दो बीबी ने भी उससे कहना आरम्भ न किया होता कि उसको ही पंच बनना चाहिये। बनवारी लाल विवश हो गया।

चन्दोबीबी का कहना था, "पिताजी ! आपका इस विषय में दखल देना ठीक ही है। यदि किसी और को मध्यस्थ बनाया गया और उसने बड़े भाई की इच्छा के विरुद्ध कुछ कर दिया तो वे मानेंगे नहीं और बात कचहरी में चली जावेगी। इससे दोनों भाई बरबाद हो जावेंगे। और फिर आपकी बेटी भी कष्ट भोगेगी।"

"परन्तु चन्दो ! राधाकृष्ण मेरी बात को भी तो अस्वीकार कर सकता है।"

"वे नहीं कर सकेंगे। वे आपके अहसान में दबे हुए हैं और साथ ही भविष्य में आपसे बहुत सहायता की आशा करते हैं।"

"और रामनारायण न माना तो ?"

"वह बेचारा गौ है। मैं उसको मना लूंगी। उसके विषय में मुझे कुछ भी चिन्ता नहीं। यदि आप उसे एक पैसे का भी अधिकारी नहीं मानेंगे तो वह तब भी नहीं बोलेगा।"

बनवारी लाल माना तो निर्णय सुगमता से हो गया। पहले सिद्धान्त निश्चय हुए फिर उसके अनुसार सम्पत्ति का मूल्य आंका गया और बँटवारा हो गया।

दुकान के विषय में दुकान की प्रतिष्ठा के मूल्य को बोली की गई। इसका मूल्य सौ रुपये से आरम्भ हो कर दस सहस्र रुपये तक गया। दस सहस्र रुपया रामनारायण की बोली थी।

राधाकृष्ण और ऊँची बोली नहीं दे सका। इस पर भी वह इस मूल्य पर दुकान उसको मिलने की योजना बना बैठा। उसने कहा, "राम ! तुम इसका मूल्य दस हजार रुपया लगाते हो। माना, पर यदि मैं इतना मूल्य दे दूं तो दुकान मुझको दे दो। मैं बड़ा हूँ। और मेरा पिताजी की सम्पत्ति पर विशेषाधिकार है। यह अधिकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुपयों में नहीं तोला जा सकता । यह तो है ही ।"

रामनारायण तो यह भी मानने के लिए तैयार हो रहा था कि बनवारी लाल ने एक प्रस्ताव कर दिया, "देखो बरखुरदार ! बड़े लड़के का पिता की सम्पत्ति पर इसी आधार पर अधिक दावा होता है कि पिता उससे अधिक स्नेह करता है । वे तो अब जीवित नहीं और उनकी इच्छा जानी नहीं जा सकती । इस पर भी एक तरीका है जिससे इस बात का पता किया जा सकता है कि पिताजी, जो इस समय भगवान के पास में हैं, क्या चाहते हैं ।

"मेरी राय यह है कि कीमत दस सहस्र ही रखी जाय और इस पर भी लाटरी डाल ली जाय । दो पर्चियाँ दोनों भाइयों के नाम की लिख कर एक लोटे में डाल देते हैं और किसी तीसरे को उठाने के लिये कह देते हैं । जिसके नाम की पर्ची निकले, वह दस हजार रुपया देकर दुकान ले ले ।"

राधाकृष्ण मानता नहीं था । परन्तु जब बनवारी लाल ने कहा कि यदि वह यह नहीं मानता तो मेरा पूर्व निश्चय चलेगा कि सबसे ऊँची कीमत देने वाला दुकान लेगा ।

इस पर राधाकृष्ण विवश हो गया । वह लाटरी डालने पर राजी हो गया । अब प्रश्न यह उपस्थित हुआ कि पर्ची कौन निकाले । रामनारायण ने कह दिया, "भाभी पर्चा निकाल ले ।"

"वह तो अपने पति की रियायत करेगी ।"

"जैसे आप अपने दामाद की रियायत कर रहे हैं ? देखिये लाला जी ! यदि मुझको आप पर विश्वास न होता तो मैं आपको पंच नहीं मानता । इसी प्रकार मुझे भाभी के न्यायप्रिय होने पर विश्वास न हो तो उनकी यह कष्ट न दूं ।"

राधाकृष्ण भी चान्दोबीबी को बीच में लाना नहीं चाहता था । बनवारी लाल ने राय के सबसे छोटे बच्चे के हाथ से यह काम करने का प्रस्ताव कर दिया । इस प्रस्ताव का राधाकृष्ण ने घोर विरोध किया । चन्दोबीबी ने पूछा, "क्यों, उसमें क्या दोष है ?"

"वह मनहस है, उसकी मां मनहस है । उसके सब बच्चे मेरे लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखकारक नहीं।"

इस पर बनवारी लाल को क्रोध चढ़ आया। उसने कहा, "तो राधाकृष्ण ! ऊँची बोली बोल लो।"

इस पर राधाकृष्ण ने चन्दोबीबी के परची चुनने के निर्णय को मान लिया।

"परन्तु मैं नहीं मानती।"

"क्यों ?" राधाकृष्ण ने उससे पूछा।

"इसलिए कि कहीं मेरे हाथ से राम की पर्ची निकल आई तो शेष जीवन के लिए मैं भी मनहूस बन जाऊँगी।"

"पर मुझे तो विश्वास है कि तुम मेरे नाम की पर्ची ही उठाओगी।"

"कैसे उठाऊँगी ? मुझे तो पता नहीं होगा कि बीच में किसका नाम लिखा है।"

"कुछ भी हो, तुम्हारे हाथ से मैं बाजी हार गया तो मुझे शोक नहीं होगा। तब मैं अपने भाग्य को ही कोसूंगा।"

"तो चन्दो ! तुम ही यह काम कर दो।" बनवारीलाल ने कह दिया—

"बस यह एक काम रह गया है। मैं इसको अब समाप्त कर देना चाहता हूँ।"

चन्दोबीबी ने राम की ओर देखा तो उसने भाभी के चरण स्पर्श कर कह दिया, "भाभी ! तुम तो माँ हो न। तुम बिना पर्ची उठाए भी यदि कह दोगी कि दुकान छोड़ दो तो मैं वैसे ही छोड़ दूंगा।"

पर्चियाँ लिखकर एक लोटे में डाल दी गईं। लोटे को भली-भाँति हिला दिया गया और चन्दोबीबी ने पर्ची निकाली तो दुकान राम के नाम हो गई।

राधाकृष्ण को बहुत शोक हुआ। परन्तु उसने बिलकुल बगल में एक दुकान खाली करवा ली। और उसमें व्यापार होने लगा। दोनों दुकानों में प्रतिस्पर्द्धा चलने लगी। रामनारायण की प्रवृत्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य, न्याय और कम लोभ की रही थी। प्रतिस्पर्द्धा में पहले तो रामनारायण की दुकान का काम मन्दा पड़ने लगा परन्तु धीरे-धीरे राधाकृष्ण का स्वभाव चतुराई, स्वार्थ और लोभ के लिए प्रत्येक उपाय को क्षम्य मानना, विख्यात होने लगा। इससे धीरे-धीरे राधाकृष्ण का नियमित काम मन्दा पड़ने लगा। रामनारायण की दुकान चलने लगी।

इस पर भी राधाकृष्ण काम के मन्दे से होने वाली हानि को पूरा करने के कई उपाय करता रहता था। राधाकृष्ण की दुकान चोरों और ठगों में विख्यात हो गई। और दुकान के पिछले कमरे में घुस कर काम होने लगा। उससे राधाकृष्ण आशातीत लाभ कमाने लगा।

दुकान रामनारायण की चलती थी। परन्तु जायदाद राधाकृष्ण की बढ़ रही थी। समय व्यतीत होता गया और धीरे-धीरे एक अन्य भय राधाकृष्ण के मन में उत्पन्न होने लगा था। यह आय बढ़ने के साथ स्वाभाविक है। राधाकृष्ण को अपना निस्सन्तान होना अखरने लगा था।

एक दिन घर पर बैठा हुआ राधाकृष्ण अपनी बही में अपनी सम्पत्ति का जोड़ लगा रहा था। उसने देखा कि बँटवारे के समय उस के पास दो लाख रुपया नकद और साठ सहस्र की सम्पत्ति थी। और उसके चार वर्ष उपरान्त उसके पास नकद बैंकों में छः लाख रूपया है और स्थावर सम्पत्ति चार लाख की है।

वह इन आँकड़ों को देख एक दीर्घ निश्वास ले हताश हो वहीं भूमि पर लेट गया। अपना हिसाब-किताब वह अपने घर पर बैठकर किया करता था। यह रात के भोजन के उपरान्त ही होता था इस। समय चन्दोबीबी लाला जी के पीने के लिए दूध लाया करती थी और लाला जी दूध पीकर सो जाया करते थे।

आज वह दूध देने के लिए आई तो लाला जी को बही के पास लेटे हुए, टुकर-टुकर छत की ओर देखते पा उसे चिन्ता लग गई। उसने पूछ लिया, "क्यों तबीयत तो ठीक है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, बहुत गड़बड़ हो रही है।"

चन्दोबीबी की चिन्ता का बरापार नहीं रहा। उसने दूध उस डैस्क पर रख दिया जिस पर बही रखी थी और स्वयं लाला जी के समीप बैठ उनके माथे पर हाथ रखकर पूछने लगी, "क्या बात है ?"

चन्दोबीबी के माथे पर हाथ रखने से लाला की हँसी निकल गई। इस पर चन्दोबीबी को सान्त्वना मिली और उसने पूछ लिया, "तो मुझे डरा रहे थे ?"

"डरा नहीं रहा मेरी चन्दो ! मैं यह विचार कर रहा था कि चार साल में चार लाख से अधिक जमा हो गया है और इसके भोग करने वाला कोई नहीं।"

"भोग करने वाले तो बहुत हैं। भला यह भी कोई चिन्ता का विषय है। उठिये, दूध पीजिये और बताइये इस सब में कितना भोग्यार्य देना चाहते हैं ?"

"तो तुम भोग करोगी ?"

"मुझमें और आप में कोई अन्तर है क्या ? बताइये कितना व्यय करने के लिये आपके पास है ?"

राधाकृष्ण इसका अर्थ नहीं समझा। उसने चन्दोबीबी का आशय समझे बिना ही अपने मन की बात कह दी, "भली औरत ! मेरा मतलब था कि कोई बाल-बच्चा हो जाता तो इस धन-दौलत का कुछ अर्थ दिखाई देने लगता।"

"बस इतनी-सी बात के लिये परेशान हो रहे हैं ?"

"तो क्या कुछ उम्मीदवारी है ?"

चन्दो की हँसी निकल गई। उसने कहा, "उठिये, दूध पीजिये और फिर मैं आपको बताती हूँ।"

राधाकृष्ण समझा कि वह किसी बच्चे को गोद लेने की बात करने वाली है। यद्यपि यह उसके मन की बात नहीं थी, परन्तु वह उठ कर दूध पीने लगा। दूध पीते हुए उसने पूछ लिया, "बताओ, इस बूढ़ी अवस्था में कुछ बना रही हो ?"

चन्दो ने मुस्कराते हुए कहा, "तो आप मुझको बूढ़ी हो गई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझते हैं ?"

"वैसे तो बूढ़ी नहीं। परन्तु शादी हुए सोलह वर्ष हो गये हैं।"

"अभी मैं तीस वर्ष की हूँ। मगर मैं अपना बच्चा होने की बात नहीं कह रही। मेरा मतलब है कि आपकी चिन्ता निवारण के तीन उपाय हैं। एक यह कि आप यह सब धन दान-दक्षिणा में लगा दें।

"किस लिये ?"

"धन का भोग करने के लिये।"

वाह ! इसको तुम भोग समझती हो ?" यह तो नाली में बहाने के तुल्य होगा।"

"तो एक दूसरा उपाय है।"

"हाँ, वह भी बता दो। तुम्हारी पहली बात तो बिलकुल नहीं जँची।"

"आप एक दूसरा विवाह कर लीजिये।"

"और उससे लड़का ही होगा। यह कैसे कह सकती हो ?"

"सब के होते हैं, आपके क्यों नहीं होंगे ?"

"मैंने प्रयत्न किया है, नहीं होता।"

इस सुचना से चन्दोबीबी अवाक् बैठी रह गई। राधाकृष्ण ने मुस्कराते हुए कहा, "तुम नाराज तो होगी परन्तु यह सत्य है। मैंने एक कुमारी लड़की से सम्बन्ध बनाया था और उससे सन्तान की आशा लगाई थी। परन्तु दो वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी कुछ नहीं हुँआ। इस पर उसकी माँ ने उसका विवाह एक अन्य युवक से कर दिया है और तीन मास में ही उसके गर्भ ठहर गया है।"

"तो उसकी सन्तान को गोद ले लीजिये।"

"यह नहीं हो सकता। एक तो उसकी शादी एक अति निर्धन युवक के साथ हुई है और एक गरीब का बेटा मुझे पसन्द नहीं। दूसरे वह लड़की मुझसे लड़ पड़ी है।"

"ओह, तो एक तीसरा उपाय है। किसी और के लड़के को गोद ले लीजिये।"

"किसको गोद में ले लूँ ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अपने भाई के लड़के को गोद ले सकते हैं।"

"तुम्हारे भाई के लड़के को क्यों न लूँ ?"

"मैंने केदार से बात की है। वह माना नहीं। उसने कहा है कि आपकी कमाई उसके बच्चे के पेट में नहीं जा सकती।"

"क्यों ? यह वहाँ जाती अटक क्यों जावेगी ?"

"कमाई तो अटकेगी नहीं। वह तो जा सकती है। परन्तु भैया उसको बच्चे के पेट में जाने नहीं देंगे। वे इस कमाई को ठीक नहीं समझते।"

"तो अपनी बहिन को इस कमाई की रोटी खाने से मना क्यों नहीं करते ?'

"वह तों कई बार कह चुका है कि मैं पिता जी के घर से पचास रुपया मासिक ले आया करूँ और अपनी रोटी का प्रबन्ध उसमें से कर लिया करूँ। पर मैं तो आपकी सेवा करती हूँ। और उसके बदले में ही खाना-पीना करती हूँ। मैं तो अपनी मेहनत मजदूरी की कमाई ही प्रयोग करती हूँ।"

"तो फिर किसका बच्चा गोद ले लूँ ?"

"किसी वैसी के ही बच्चे को गोद ले लो जिसने अपनी कुमारी लड़की आपके हवाले कर दी थी।"

"अब मेरी रुचि उस ओर नहीं रही।"

"तो कहीं और ढूंढिये। कोई न कोई मिल जायेगा।"

"मैंने एक बात विचार की है परन्तु उसमें तुम ही मदद कर सकती हो।"

"बताइये।"

"देखो चन्दो ! सन्तू अभी भी तुमको माँ कहता है और उसका लाला रामनारायण भी तुमको माँ मानता है। तो सन्तू माँ की सन्तान बनने से ना नहीं कर सकता। और रामनारायण भी इसमें बाधा नहीं बनेगा।"

"पर सन्तू तो मेरा लड़का पहले ही बना हुआ है। अब एक बने लड़के को लड़का बनने के लिये कैसे कहूँ ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम अपने लड़के को अपने पास रखो और उसको अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दो।"

"वह मेरा उत्तराधिकारी तो है। परन्तु मेरी सम्पत्ति है कितनी। स्त्री तो अपने पति की सम्पत्ति में से एक पैसे की भी अधिकारिणी नहीं। तो उसका पुत्र भी किसी प्रकार की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी नहीं हो सकता।"

राधाकृष्ण इस सरल-सी बात को भी नहीं समझ सका। उसने पूछ लिया, "क्या मतलब ? मैं यह फिलोसौ की समझा नहीं।"

"तो समझ लीजिये। एक हिन्दू पति की हिन्दू स्त्री अपने पति के मरने पर केवल गुजारे की हकदार है। पति की पूर्ण सम्पत्ति पति के पुत्र और पुत्रों के अभाव में अन्य सम्बन्धी ही पाते हैं।"

"परन्तु क्या पत्नी के पुत्र पति के पुत्र नहीं भी होते क्या ?"

"हाँ, जब बच्चा गोद लिया जाय। पत्नी बिना पति की स्वीकृति के नहीं ले सकती। यदि पति की स्वीकृति के बिना गोद में ले, तो गोद लिया बच्चा पति की सम्पत्ति का हकदार नहीं हो सकता।

"साथ ही जब लड़का सज्ञान हो तो उसकी स्वीकृति भी लेनी आवश्यक है कोई किसी को बलपूर्वक अपना धर्मपुत्र नहीं बना सकता। सन्तू मेरा तो पुत्र बन गया है परन्तु वह आपका पुत्र बनना स्वीकार नहीं करेगा।"

"कैसे कहती हो यह ? लाखों की सम्पत्ति है। यह मान जावेगा।"

"तो मना लीजिये। मैं कौन हूँ मना करने वाली।"

: ९ :

जब राधाकृष्ण किसी प्रकार भी हो रुपया एकत्रित करने में संलग्न था, रामनारायण अपनी साधारण-सी आय से भी 'धर्मादा' निकाल रहा था। वह अपनी आय का दस प्रतिशत धर्मखाते में जमा कर रहा था। इस धर्मखाते में से ही उसने बीस हजार रुपया व्यय कर मजदूरों के लिये तिमारपुर के समीप एक बस्ती बना दी थी। पचास परिवारों के रहने के लिये स्थान था और उसका भाड़ा एक सौ रुपया महीना आता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह तो रामी के सुप्रबन्ध का परिणाम था कि रामनारायण को किराया महीने की अन्तिम तिथि को पहुँच जाता था और उसकी सफाई तथा मरम्मत के लिये अपने पास से व्यय करना नहीं पड़ता था। सन्तू अब दुकान पर काम करता था और रामनारायण ने उसको तीस रुपया मासिक वेतन के अतिरिक्त दुकान के लाभ में से पाँच प्रतिशत का भागीदार बना लिया था। इस प्रबन्ध को एक वर्ष हो चुका था और वर्ष का लाभ-हानि का चिठ्ठा बना। सन्तू को एक सहस्र पचास रुपये लाभ के हिस्से के मिले तो वह चकित रह गया। उसके लाभ में भागीदार बनाए जाने की बात उसको बताई नहीं गई थी। यह बात तो लाभ में से उसका भाग देने के समय ही उसको पता चली।

लाला रामनारायण ने जब उसके भाग की रकम उसके हाथ में दी तो वह पूछने लगा "क्या करना है इसका ?"

"देखो सन्तू ! पिछले वर्ष तुम्हारी बड़ी माँ ने कहा था कि तुमको दुकान के लाभ में भागीदार बना लेना चाहिये। तो उसी दिन मैंने तुम्हारा नाम अपनी बही में लिख लिया था और पिछले वर्ष का हिसाब गिना गया तो तुम्हारा इतना लाभ में बना है।"

"पर आपने यह किस लिये किया है ? मैं तो आपका नौकर हूँ और वेतन पाता ही हूँ।"

"ठीक है नौकरी का वेतन पाते हो। मैं भी तीन सौ रुपया महीना अपना वेतन निकालता हूँ। इस पर भी इसके लाभ का मालिक पिता का पुत्र होने के नाते हूँ। बड़ी माँ ने कहा कि तुम उनके पुत्र हो। इस नाते तुमको यह भोग मिलना चाहिये। तुम जानते हो कि वह मेरी भी माँ है। इसलिये मैं उनकी बात से इन्कार नहीं कर सकता।"

"तब ठीक है।" सन्तू ने रुपये जेब में डालते हुए कहा।

"क्या ठीक है ?"

"मैं ये रुपये उसी माँ के चरणों में दूंगा, जिनका पुत्र होने के नाते यह मिला है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामनारायण इसका अर्थ समझने के लिये सन्तू के मुख पर देखने लगा। सन्तू नें उनको परेशान देख अपना मतलब समझाते हुए कहा, "लाला जी ! मेरा मतलब है कि मेरी दो माँ हैं। एक माँ का सन्तू तीस रुपये मासिक वेतन पाता है और दूसरी माँ का सन्तू एक हजार पचास रुपया वेतन पाता है। तीस रुपये वाला सन्तू अपनी माँ को वह वेतन दे देता है और एक सहस्र पचास रुपये पाने वाला सन्तू एक सहस्र पचास रुपये अपनी माँ को दे देगा।"

"तो यह बात है ?"

"जी !"

"अच्छा जाओ, अपनी माँ के चरणों में अपनी इस कमाई को अर्पण कर आओ।"

सन्तू संकेत पा उठा और जूता पहन सीधा घर पहुँचा। यह उसके अगले दिन की बात थी जिस रात राधाकृष्ण ने चन्दोबीबी से सन्तराम को अपना पुत्र बनाने का प्रस्ताव किया था।

"बड़ी माँ !" उसने चन्दोबीबी के चरणस्पर्श कर कहा, "मैं आज विशेष प्रयोजन से आया हूँ।"

"आओ बैठो सन्तू, बताओ।" चन्दोबीबी ने समझा कि वह बड़े लाला के प्रस्ताव पर विचार करने आया है।

सन्तू उसके कमरे में जा भूमि पर बैठ गया। चन्दोबीबी ने एक मूढ़े पर बैठते हुए पूछा, "तो बताओ।"

सन्तू ने जेब से एक हजार पचास रुपये निकाल चन्दोबीबी के चरणों में रख कर कहा, "ये आपके हैं।"

"कैसे मेरे हैं ?"

"आपके पुत्र सन्तू को आज छोटे लालाजी ने अपनी दुकान के लाभ में से भाग दिया है।"

"सत्य ? कितने हैं यह ?" चन्दो को स्मरण हो आया था कि उसने सामान्य रूप में रामनारायण से यह कहा था कि सन्तू को तो दुकान में साझीदार बना लेना चाहिये। रामनारायण ने यह संकेत पा अपने मन से उसकी पाँच प्रतिशत लाभ का भागीदार बना लिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था।

सन्तू ने बताया, "एक सहस्र पचास रुपये।"

चन्दो ने उन रुपयों में से ग्यारह रुपये अपने पास रखकर कहा, "देखो बेटा सन्तू ! यह मैंने आशीर्वाद रूप ग्यारह रुपये ले लिये हैं। शेष रुपयों को तुम बैंक में अपने खाते में जमा कर लो। मैं भगवान से यह प्रार्थना करती हूँ कि शीघ्र ही तुम्हारा अपना मकान हो जावे और तुम अपनी बहू के साथ सुखपूर्वक रहने लायक हो जाओ तो मुझको सुख मिलेगा।"

इस शुभ कामना को बड़ी माँ के मुख से सुन सन्तू गद्गद् प्रसन्न हो गया। इससे उसकी आँखें तरल हो उठीं। उसने सामने बैठी देवी के चरणस्पर्श किये और रुपये उठा अपने माथे से लगा जेब में रख लिये। वह उठने लगा तो चन्दोबीबी ने कहा, "जरा ठहरो। मैं भी तुम से एक बात करना चाहती हूँ।"

सन्तू बैठा रहा। उसने उत्सुकता से बड़ी माँ के मुख पर देखा वह समझ रहा था कि वे उसको कुछ सीख देने वाली है। बात ठीक थी। चन्दोबीबी ने उसको अपने पति की ओर से आने वाले प्रस्ताव का कुछ संकेत दे देना आवश्यक समझा था। इस पर भी अपना नाम वह बीच में नहीं आने देना चाहती थी।

चन्दोबीबी ने कहा, "देखो सन्तू ! तुम मेरे बेटे हो। इसलिए कहती हूँ। इमानदारी की कमाई एक रुपये की भी बेईमानी की एक लाख रुपये की कमाई से अच्छी है। एक रुपये में भी वह बरकत पड़ जाती है जो बेईमानी के लाखों में नहीं होती। यह तुम्हारी ईमानदारी की कमाई है। इसमें ही वह बरकत पड़ेगी कि तुम्हारे पुत्र पौत्र तक इसका भोग करेंगे परन्तु आम के पेड़ पर फल लगने में समय लगता है। बबूल का पेड़ तो एक वर्ष में ही फलने लगता है।"

एकाएक चन्दोरानी चुप कर गई। फिर बोली, "बस इसको स्मरण रखना और जाओ, ईश्वर तुम्हारी सहायता करेगा।"

सन्तू जब घर को गया था, राधाकृष्ण दुकान पर आ गया। रामनारायण भाई को आकर "जय राम जी की।" करते देख बोला,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जय राम जी की भैया, आओ बैठो। आज दर्शन हुए हैं। क्या कारण है। मैं क्या सेवा कर सकता हूँ ?"

जब से दुकान का बँटवारा हुआ था और सम्पत्ति पृथक्-पृथक् हुई थी, यह पहला दिन था कि राधाकृष्ण रामनारायण की दुकान पर आया था। रामनारायण के मन में शंका समा गई कि किसी कठिनाई के समय ही उसका भाई आया है; अन्यथा यह उसको गाली देता ही सुना जाता था।

राधाकृष्ण रामनारायण के सामने बैठ गया और पूछने लगा, "सन्तू कहाँ गया है ?"

"किसी काम से घर भेजा है।"

"ठीक है। मैं उसकी अनुपस्थिति में ही बात करना चाहता था।"

रामनारायण आगे सुनने के लिए दत्तचित्त हो बैठ गया। राधाकृष्ण ने बात जारी रखी, "तुम तो जानते ही हो कि मेरे कोई सन्तान नहीं है। चन्दोबीबी इससे बहुत दुःखी रहती है। उसकी इच्छा है कि सन्तू को गोद ले लिया जाए। वैसे तो सन्तू को वह मन में पहले से ही अपना पुत्र मानती है। परन्तु इस प्रकार गोद लेने मे वह मेरी पूर्ण सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बन जाएगा और बाद में किसी प्रकार का झगड़ा नहीं होगा।"

रामनारायण ने कुछ उत्तर नहीं दिया। वह मन में विचार कर रहा था कि चन्दोबीवी का सन्तो के प्रति स्नेह तो है ही, कदाचित् उस स्नेह के अनुरूप ही उसका यह प्रस्ताव है और सन्तू भी उसकी दुकान में भागीदार बनाये जाने में चन्दोबीबी का कृतज्ञ है, अतः वह उसकी इच्छा का अनादर न कर सके। ऐसी अवस्था में राधाकृष्ण के प्रस्ताव के स्वीकार होने की सम्भावना है तो वह क्यों इसमें बाधा खड़ी करे।

रामनारायण को चुप देख राधाकृष्ण ने पूछ लिया, "चुप क्यों हो गये ?"

"इसलिए कि मैं इसमें गौण हूँ। यह भाभी और सन्तू के बीच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की बात है। इसमें मैं किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करूँगा।"

"और तुम इसमें सहायता नहीं करोगे क्या।"

"करूँगा। यदि बिना मेरी सहायता के काम में कोई बाधा उपस्थित हो गई और साथ ही यदि भाभी ने मुझे कहा तो।"

"और मेरे कहने पर सहायता नहीं करोगे।"

"पर भैया! तुम भी तो यह बात भाभी के लिये कर रहे हो। तुमने अभी बताया है कि भाभी बहुत उदास रहती है और वे ही ऐसा चाहती हैं। अन्यथा तुमने अपनी कोई आवश्यकता नहीं बताई।"

"पर तुम विरोध तो नहीं करोगे न?"

"भाभी मेरी माँ है। और जिस बात से माँ को प्रसन्नता और सुख मिले उसका मैं विरोध कर सकता ही नहीं।"

राधाकृष्ण ने कह दिया, "मैं भी सन्तू को पसन्द करता हूँ।"

"वह है ही बहुत अच्छा लड़का। भैया! एक बात बताऊँ। सन्तराम के अच्छा होने में कारण है रामी। उसकी बातें विचित्र हैं और उसके और आचार को देख मैंने उन लोगों के लिए बीस हजार रुपया लगा कर एक बस्ती तिमारपुर के समीप बना दी है। उसमें पचास के लगभग मजदूरों से परिवार रहते हैं और वे उससे सुख अनुभव करते हैं।"

"और क्या किराया लेते हो?"

"मेरा तो किराया कुछ भी न लेने की इच्छा थी। परन्तु जब रामी ने कहा कि उस बस्ती की सफाई और मरम्मत का उत्तरदायित्व भी मैं अपने ऊपर लूँ तो मैंने दो रुपया प्रति घर किराया नियत कर दिया था।

"अब एक बात और हो गई है कि लोग स्वयं ही किराया दुकान पर पहुँचा देते हैं। और सफाई इत्यादि का प्रबन्ध वे परस्पर मिल कर करने लगे हैं। इस प्रकार यह सौ रुपया मासिक तो बच ही जाता है।"

"तुम बहुत मूर्ख हो!"

"क्यों भैया!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बीस हजार लगा कर और सौ रुपया बचा कर प्रसन्न जो हो रहे हो।"

"वह व्यापार नहीं भैया ! वह तो धर्मादा है।"

राधाकृष्ण समझ रहा था कि रामनारायण महामूर्ख है। वह चुप ही रहा और सन्तू की प्रतीक्षा में वहाँ बैठा रहा। सन्तू नहीं आया। वह एक सहस्र रुपया अपने बैंक में जमा करने के लिए चला गया था और वहाँ से यह शुभ समाचार अपनी माँ और रामी को देने चला गया था।

: १० :

रामनारायण के इस बस्ती बनाने पर राधाकृष्ण को विस्मय हुआ था। नगर में बीस हजार रुपया खर्च कर कोई हवेली मोल ले ली जाती तो आसानी से तीन-चार सौ रुपया महीने की आय हो सकती थी। नगर से दूर बस्ती बनाने से तो इतना लाभ नहीं हो सकता था। उसको यह समाचार इंजीनियर से मिला था, जिसने इस बस्ती का मानचित्र बनाया था। वह राधाकृष्ण के लिए करौल बाग में एक बँगले का मानचित्र तैयार कर रहा था।

राधाकृष्ण ने घर आकर चन्दो को कहा तो यह जान कर कि उसकी पत्नी को यह सब कुछ ज्ञात है, उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। उसने कहा, "तो तुमने मुझे नहीं बताया ?"

"मैं जिस प्रकार राम को आपकी बातें नहीं बताती, उसी प्रकार राम की बातें भी आपको नहीं बताती।"

इससे राधाकृष्ण ने कुछ खीझ कर पूछा, "तो क्या मैं भी कुछ खराबी कर रहा हूँ ?"

"खराबी और भलाई की बात मैं तो जानती नहीं। मैं तो एक बात जानती हूँ। तुम दोनों भाइयों की बातें एक कान से सुनती हूँ और दूसरे कान से निकाल देती हूँ।"

"तुम तो बहुत समझदार हो गई हो। वह तुम से बातें करता रहता है। इसलिए तुम्हें उसको बताना चाहिए कि वह अपने बाल-बच्चों के लिए बचा कर कुछ रखे। बाप-दादाओं की जायदाद खुर्द-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुर्द कर देगा, तो वे बेचारे पीछे क्या करेंगे ?"

"आपका ही भाई है, आप स्वयं उसको क्यों नहीं समझा देते ? मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि आपके तो कोई छोटा बाल-बच्चा है नहीं, फिर आप किसके लिए पाप कमाते रहते हैं ?"

"तो मैं पाप कमाता हूँ ?"

"हाँ, क्यों नहीं। वह करौल बाग की भूमि आपने किस प्रकार ली है। मुझे सब पता है। वह क्या पाप नहीं हुआ ?"

"यह कैसे पाप हो गया ?"

"देखिये, हबीब और अख्तर दोनों भाई थे। आपने उन दोनों में झगड़ा करवाया। हबीब आपसे रुपया उधार लेकर मुकद्दमा लड़ता रहा। हबीब को वह जमीन मिल गई। परन्तु तीन वर्ष तक मुकद्दमा लड़ने के बाद और हाई कोर्ट का द्वार खटखटाने के बाद हबीब को माँ की सम्पत्ति का आधा भाग मिल गया, परन्तु वह कर्जे के नीचे दब गया और उस ऋण के एवज़ में आपने यह दो एकड़ भूमि ले ली।"

"यह सब ठीक है। परन्तु यह पाप कैसे हो गया ? देखो, अख्तर मूर्ख था। वह अपने शरीफ भाई का हक छीनना चाहता था। हबीब राधेश्याम वकील के पास पहुँचा। राधेश्याम ने उनको मुकद्दमा लड़ जाने की राय दी।

"इसके लिए रुपयों की आवश्यकता थी, वह मैंने दे दिया। हबीब मुकद्दमा जीत गया तो मुझे मेरा रुपया मिलना चाहिए था।"

"परन्तु मुझे बताने वाले ने तो यह भी बताया है कि हबीब सुलह कर लेना चाहता था। अख्तर आधे से कुछ अधिक माँगता था आप ने और वकील ने सुलह नहीं होने दी।

"एक बात और बताई गई है कि आप पाँच सौ रुपया देकर हजार लिखवाते थे। आप कहते थे कि मुकद्दमा हार जाने पर तो कुछ भी नहीं मिलेगा। अब चार हज़ार देकर आठ हज़ार असल बन गया और उस पर सूद डाल कर बारह हज़ार बन गया।

"बताइए, यह छीना-झपटी पाप नहीं क्या ? इतने पर भी बला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टल जाती तो दूसरी बात थी। बीस हज़ार की भूमि आपने बारह हज़ार पर ले ली है।"

"यह व्यापार है, रानी!"

"तो आप रामनारायण को इस व्यापार की बात स्वयं ही बता दें। मैं तो ऐसा समझ रही हूँ कि उसके बच्चे पढ़ रहे हैं, वे अपनी कक्षा में प्रथम रहते हैं। उसने उनके लिए रुपया भी जमा कर रखा है, उसके बाद यह अपना परलोक सुधारने के लिए निर्धनों की सहायता कर रहा है।

"एक दिन उसने मुझे यह सब हिसाब बताया था। उसका कहना था कि सब पर बीस हज़ार रुपया खर्च हुआ है। उस पर एक सौ रुपया मासिक आय हो रही है। वह कहता था कि यह छः प्रतिशत है। बैंक से उसको ढाई प्रतिशत मिलता था। शेष साढ़े तीन प्रतिशत में से दो प्रतिशत वह इमारतों की घिसाई और डेढ़ प्रतिशत वहाँ पर मन्दिर बनवाने के लिए पृथक् रख रहा है।

"रामनारायण का लेखा तो स्पष्ट है। उसने बच्चों के मुख से कुछ नहीं छीना। परन्तु अपना परलोक सुधारने का यत्न किया है। वह रामी, जो सन्तू की माँ बनी हुई है, यहाँ आई थी और बताती थी कि बस्ती में रहने वाले सब छोटे लाला के गुण गाते हैं। उन गरीबों की दुआ से ही राम के घर में इस समय चार लड़के हैं।

"एक आप हैं। कोई लड़का-बाला तो है नहीं फिर भी सीधे तथा उलटे ढंग से रुपया एकत्रित करने में संलग्न हैं।"

"मैं एक लड़का गोद लेने का विचार तो कर रहा हूँ।"

इस पर राधाकृष्ण ने सन्तू को मिलने के लिये रामनारायण की दुकान पर जाने की बात बता दी। उसने आगे कहा, "परन्तु वह दुकान पर था नहीं। एक घण्टा उसकी प्रतीक्षा कर लौट आया हूँ।"

"राम से बात की थी?"

"हाँ?"

"कहता था कि भाभी तो माँ तुल्य है, वह उसकी इच्छा का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरोध नहीं कर सकता।"

"तो आपने बताया होगा कि मेरी इच्छा भी है।"

"हाँ, यह तो बताया ही था।"

"यह तो आपने गलत बात कर दी है। मेरी इच्छा-अनिच्छा इसमें कुछ नहीं है।"

"पर तुम चुप रहो न। अपने मुख से कुछ न कहो। शेष तो मैं सब कर ही रहा हूँ।"

"पर उनमें से किसी ने मुझसे पूछ लिया तो मैं झूठ नहीं बोलूंगी।"

"सत्य क्या है ?"

"सत्य यह है कि आपकी सम्पत्ति में मेरा केवल गुजारे का हक है। शेष सम्पत्ति किसको मिलती है यह मेरे विचार करने अथवा इच्छा करने की बात नहीं है।"

"तो तुम सन्तू को पुत्र बनाने के हक में नहीं हो ?"

"मेरा पुत्र तो वह है। आपका पुत्र वह बने न बने इस विषय में मुझे कुछ नहीं कहना है। यह उसके अपने विचार करने की बात है।"

राधाकृष्ण जानता था कि सन्तू का पिता बिना रामी से राय किए कुछ नहीं करेगा। अतः एक दिन उससे बात करने के विचार से वह अपनी मोटर में सवार हो नई बस्ती की ओर चल पड़ा।

उस दिन मंगलवार था। प्रायः सभी पुरुष और काम करने योग्य बालक अपने-अपने काम पर चले गये थे। रामी नौकरों द्वारा बस्ती की सफाई करवा रही थी। उसके काम में नानकी सहायता कर रही थी।

लगभग सफाई हो चुकी थी। बस्ती चमकने लगी थी। रामी शौचालय देखने के लिए जा रही थी कि राधाकृष्ण की मोटर बस्ती के कुएँ के पास आकर रुकी। नानकी और रामी विस्मय में देखती रह गईं। लाला रामनारायण की तो घोड़ा गाड़ी थी। वह कभी-कभी उस घोड़ा-गाड़ी में आता और रामी को बस्ती ठीक रखने में सुझाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दे जाया करता था।

उसको आश्चर्य हुआ यह देख कर कि राधाकृष्ण मोटर से उतर कर बस्ती को देख रहा है। बच्चे मोटर के पास आकर खड़े हो गये। राधाकृष्ण मोटर की ओर पीठ किये उधर देख रहा था, जिधर मन्दिर की नींव रखी जा रही था।

इस समय एक बच्चे ने एक कंकर उठा कर मोटर को निशाना मारने के लिए हाथ उठाया ही था कि रामी ने उसे देख लिया और उसको रोकते हुए कहने लगी, "कालू ! यह क्या कर रहा है ?"

रामी की आवाज सुनकर राधाकृष्ण ने घूम कर देखा। एक पाँच वर्ष का बच्चा एक पत्थर का टुकड़ा उठा मोटर के शीशे पर मारने वाला था कि रामी ने दौड़ कर उसका हाथ पकड़ लिया। राधाकृष्ण लौट कर छड़ी से उस लड़के को पीटने के लिए लपका। रामी ने लड़के को अपने पीछे कर लिया और स्वयं राधाकृष्ण के सम्मुख हो गई।

राधाकृष्ण ने रामी को पहचाना तो छड़ी नीचे कर ली। और बोला, "ओह रामी माँ ! मैं तो तुम्ही को खोज रहा था। तुमने मेरी मोटर बचा ली, नहीं तो इस लड़के ने तीस-चालीस रुपये का नुकसान कर ही दिया होता।

"मैंने अभी-अभी सुना था कि राम ने यह बस्ती बनवाई है। यह भी सुना था कि बहुत सुन्दर बनी है। इसलिए देखने चला आया हूँ। पता चला था कि रामी माँ यहाँ का प्रबन्ध करती हैं।

"अच्छा रामी माँ ! मुझे एक बार यह सारी बस्ती दिखा तो दो ?"

रामी, राधाकृष्ण के विषय में सन्तू द्वारा, उसके गुण-अवगुण का वर्णन सुनती रहती थी। इसलिए राधाकृष्ण के वहाँ आने पर वह प्रसन्न नहीं थी। परन्तु जब उसने कहा कि वह देखने के लिए आया है, तो दिखाने से असहमति प्रकट नहीं कर सकी।

उसने राधाकृष्ण को कुआँ, स्नानागार, कपड़े धोने का स्थान, शौचालय इत्यादि तथा मन्दिर का स्थान दिखाया और फिर उसे अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमरे में ले गई। वहाँ मोहिनी बैठी हुई मंगल के लिए कुरता सी रही थी।

राधाकृष्ण ने मोहनी को पहचान लिया। उसने कहा, "यह तो सन्तू की बहिन मालूम होती है!"

"हाँ, अब इसका विवाह हो गया है।"

"किसके साथ हुआ है?"

"यहाँ से चौधरी के लड़के मंगल से।"

"क्या करता है वह?"

"इस समय कश्मीरी गेट में हिन्दू कालेज की इमारत बन रही हैं। वह वहाँ राजगीर का काम करता है। दो रुपये चार आने प्रतिदिन ले आता है।"

"हूँ।" राधाकृष्ण ने हुँकार भर आगे पूछा, "यहाँ पर कुल कितने कमरे हैं?"

"एक मकान में तीन कमरे हैं। दो रहने के लिए, एक रसोई के लिए। ऐसे कुल पचास मकान यहाँ पर हैं।"

"एक का कितना किराया देते हो?"

"दो रुपया मासिक।"

"और कुछ?"

"लालाजी तो यही लेते हैं?"

राधाकृष्ण ने दो-तीन मकान और देखे। रामी साथ-साथ थी। एक मकान के आगे पर्दा लगा था। राधाकृष्ण ने पूछ लिया, "यहाँ कौन रहता है?"

"एक रहमान मियाँ है, ठेकेदार शादीराम के यहाँ जमादार का काम करता है"

"यह मुसलमान इस बस्ती में क्यों रख छोड़ा है? राम को कहूँगा कि इसको निकाल दे।"

"जी नहीं। यहाँ की पंचायत बनी है। उसकी मर्जी के बिना लालाजी किसी को मकान किराये पर नहीं दे सकते। यह रहमान चौधरी सहतू का रिश्तेदार है। रहमान की दोनों बहिनें चौधरी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लड़कों से ब्याही जा चुकी हैं।"

"सहतू भी मुसलमान है क्या।"

"नहीं, वह हिन्दू है ?"

"और उसके लड़के ?"

"वे भी हिन्दू हैं। बड़े लड़के रामचन्द के दो बच्चे भी हैं। एक का नाम रामकृष्ण है और दूसरे का नाम सीताराम है।"

राधाकृष्ण विस्मय में रामी का मुख देखता रह गया। रामी मुस्करा रही थी। राधाकृष्ण ने समझा कि रामी उसकी हँसी उड़ा रही है। इस कारण उसने पूछा, "रहमान मियाँ नाराज़ नहीं होता?"

"पहले होता था, अब नहीं होता। वह उन बच्चों को लतीफ और मजीद नाम से पुकारता है। हम इसमें आपत्ति नहीं करते।"

"चौधरी की बहुओं का नाम क्या है ?"

"एक का नाम बासन्ती और दूसरी का नाम नानकी। रहमान उनको वहीदन और नसीम नाम से पुकारता है। वह देखिये चौधरी की बड़ी बहु कुएँ से जल भरने जा रही है।"

बासन्ती अपने घर से निकली थी और पीतल की बलटोई लिये कुएं से जल भरने के लिए जा रही थी।

"यह पर्दा नहीं करती क्या ?"

"नहीं, मुसलमानों की भाँति नहीं करती। रहमान की पहली बीवी भी हमसे पर्दा नहीं करती। बस्ती में वह भी ऐसे ही घूमती हैं, जैसे हम लोग। मगर उसकी दूसरी बीवी, अभी नई आई है। वह अभी पर्दा करती है। मैं समझती हूँ दो-चार मास में वह भी यहाँ के रीति-रिवाज सीख जायेगी।"

राधाकृष्ण को ये सब बातें विचित्र प्रतीत हो रही थीं। उसकी समझ में कुछ इस प्रकार आया कि रामी आर्यसमाज से प्रभावित है।

राधाकृष्ण रामी की बातों में अपने आने का प्रयोजन ही भूल गया था, वह बस्ती देख मोटर की ओर लौटा तो रामी ने हाथ जोड़ जय रामजी की कर दी, इस समय राधाकृष्ण को अपने आने का प्रयोजन स्मरण हो आया। उसने पूछा, "सन्तू का बाप कहाँ रहता है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह उस मकान में रहता है। इस समय काम पर गया है।"

"वह क्या काम करता है ?"

"आजकल वह राजगीर का काम करने लगा है।"

"मुझे उससे तथा सन्तू से काम है।"

"उसको तो रविवार को ही फुरसत मिलती है।"

"अच्छा, तो उसको कहना कि मैं रविवार को मध्याह्न उससे तथा सन्तू से मिलने के लिए आऊँगा, वह कहीं जाये नहीं।"

रामी समझ नहीं सकी कि राधाकृष्ण का भगतू से क्या काम हो सकता है।

रविवार को राधाकृष्ण पुनः उस बस्ती में आया। भगतू तो वहाँ था, परन्तु वह सन्तू के सामने ही अपने मन की बात बताना चाहता था। ठीक दो बजे लाला रामनारायण की घोड़ा-गाड़ी में सन्तू आया। उसके साथ एक औरत थी, जिसने सिर से पाँव तक स्वयं को लपेट रखा था। सन्तू उस औरत को अपने पीछे-पीछे आने के लिए कह रामी के घर की ओर जाने लगा। इस समय राधाकृष्ण ने उसे आवाज दे दी।

सन्तू ने उधर देखा तो वहाँ राधाकृष्ण की मोटर और उसमें राधाकृष्ण को बैठे उसके पिता से बातें करते देख, वह भौंचक्का रह गया। मोटर से चल कर उसके समीप आ बोला, 'बेटा ! लालाजी सुबह से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

"उनसे कहो, अभी ठहरें। मैं इसे जरा रामी माँ के पास छोड़ आऊँ।"

"कौन है यह ?"

"वहीं आ जाओ, बताता हूँ।"

भगतू ने समझा कि सन्तू घर पर बहू लाया है। इससे वह भागा हुआ मोटर के समीप गया और राधाकृष्णन को कहने लगा, "लालाजी ! आपको अभी और ठहरना पड़ेगा। नहीं तो किसी और दिन बात कर लेंगे।" इतना कह, बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये, वह रामी के घर की ओर चला गया। राधाकृष्ण की समझ में भी यही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ रहा था कि सन्तू विवाह करके अपनी बहू लाया है। इससे वह मोटर से उत्तर पीछे-पीछे रामी के घर पर चला गया।

बस्ती के अन्य निवासी भी, जो वहाँ पर उपस्थित थे, मोटर और फिर घोड़ा गाड़ी में सन्तू के साथ एक औरत को आते देख विस्मय कर रहे थे।

सन्तू ने उस औरत को रामी के द्वार पर खड़ा करके रामी माँ को आवाज़ दी। अन्दर से रामी माँ ने कहा, "आई बेटा !"

रामी ने द्वार खोला और कहा, "सन्तू···!" किन्तु उसके पीछे एक औरत को देख वह चुप हो गई।

"यह कौन···।" उसने पूछना चाहा। परन्तु सन्तू ने होठों पर उँगली रख कर, उस औरत को दूसरे हाथ से पकड़ कर भीतर की ओर भेज दिया। इस समय भगतू और राधाकृष्ण भी आ गये थे। सन्तू ने उन दोनों को भीतर नहीं आने दिया। उसने भीतर जाकर दरवाजा बन्द कर दिया।

रामी विस्मय में उस औरत को देख रही थी। जब द्वार बन्द हो गया तो सन्तू ने कहा, "लो पकड़ लाया हूँ। सँभालो अब अपनी बिटिया को।"

उस औरत ने भी अपनी चादर उतार दी और कहा, "माँ ! मैं हूँ···।"

रामी ने उसे देखा, पहचाना और लपक कर गले लगा लिया। यह देवी थी। उसकी अपनी बेटी।

कितनी ही देर तक माँ-बेटी गले मिल रोती रहीं। सन्तू कुछ देर तक उन दोनों का मिलन देखता रहा। फिर द्वार खोल बाहर चला आया। बाहर निकल उसने पुनः द्वार बन्द कर दिया। भगतू ने उससे पहले पूछा, "यह कौन है ?"

"बाबा ! देवी है। आज अकस्मात मिल गई तो पकड़ लाया हूँ।"

"देवी !" उसने आश्चर्य में कहा और फिर मोहिनी को आवाज देते हुए कहा, "जाओ, जल्दी करो। अपनी माँ को बुला कर ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आओ।"

: ७ :

राधाकृष्ण को देवी के लापता होने की बात विदित थी। उसने सन्तू को एक ओर ले जाकर पूछ लिया, "यह रामी माँ की लड़की है न ?"

"हाँ, लालाजी ! आठ वर्ष हुए, यमुना में बाढ़ आई थी। उस दिन वह बिछुड़ गई थी। तब से आज मिली है।"

"सन्तू ! मैं तुमसे एक अत्यावश्यक विषय पर बात करने के लिए आया हूँ !"

"बताइए।"

"मैं समझता हूँ, इस सब हलचल में तुम भली-भाँति सोच-समझ नहीं सकोगे। अब मैं चलता हूँ। सायंकाल तुमसे बड़ी माँ के सम्मुख बात होगी। आओगे न ?"

"आप कहते हैं, तो अवश्य आऊँगा।"

देवी के मिलने की घटना इस प्रकार हुई थी—

सन्तू दुकान के अन्दर बैठा बही लिख रहा था। इस समय दो आदमी और एक औरत कुछ आभूषण खरीदने के लिए दुकान पर आये। रामनारायण ने उनको बैठाया और आभूषण दिखाने लगा। आभूषण देखे गए, पसन्द किए गए और उनके मूल्य के विषय में भाव-ताव होने लगा। रामनारायण ने सन्तू को आवाज दे दी। और उससे स्टाक रजिस्टर मँगवाया।

उस औरत ने सन्तू का नाम सुना तो कण्ठी, जो उसके हाथ में थी गिर गई। वह रामनारायण और सन्तू के मुख पर देखने लगी। जब उसने सन्तू को देखा तो उसकी आँखें झुक गईं और कण्ठी, जो उसने फिर उठा ली थी उसके हाथों में काँपने लगी। सन्तू ने इस औरत के साथ आए आदमी को कण्ठी का हिसाब-किताब समझा दिया। वह बोला, "चार तोले दो माशा सोना इसमें लगा है। मूल्य इकासी रुपये आठ आने, नगीने बीस रुपये चार आने के, बनवाई पाँच रुपये तोले के हिसाब से बीस रुपये और दुकान का मुनाफा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीस रुपये। कुल सोना जो इसमें है चार तोला ड़ेढ़ माशा है। चार रत्ती बनाई में घिसाई है।" इसी प्रकार उसने अन्य आभूषणों का मूल्य भी बताकर कहा, "यह सब आप लिख लीजिए। इसमें यदि एक पैसे का भी फरक हो तो हम जिम्मेवार हैं।"

उस आदमी ने पाँच सौ बीस रुपये निकालकर सामने रख दिए। रामनारायण ने कहा "बारह आने और चाहियें।"

"क्या इतना भी नहीं छोड़ सकते ?"

"जी नहीं, क्षमा करें। दुकान की आय में दुकान के सब खर्चे सम्मिलित हैं। यह नकद लाभ नहीं है।" जब रामनारायण उस आदमी से बातें कर रहा था, तो सन्तू उस औरत को देख रहा था। पहले तो वह उसको जानी-पहचानी-सी प्रतीत हुई। फिर उसको सन्देह हुआ कि यह तो देवी जैसी लगती है। उसे देखे आठ वर्ष से अधिक हो चुके थे। वह नौ वर्ष की थी, जब लापता हुई थी। इस पर भी वह ज्यों-ज्यों देखता था, त्यों-त्यों उसको विश्वास होता जाता था। रामनारायण ने रुपयों की रसीद लिखकर नीचे अपने हस्ताक्षर कर दिए। रुपया देने वाले व्यक्ति ने पूछ लिया, "क्या शुभ नाम है आपका ?"

"रामनारायण !"

वह स्त्री, रुपया देने वाले आदमी को आभूषण पकड़ा कर बोली, "सन्तू ! पहचाना नहीं मुझको ?"

"पहचान रहा हूँ, किन्तु आँखों पर विश्वास नहीं आ रहा था। देवी ! कहाँ हो तुम ?"

"जरा दुकान के अन्दर चलो।"

देवी का नाम सुन रामनारायण भी सतर्क हो गया। उसने रुपये सन्दूकची में रख ताला लगा दिया और उन आदमियों से पूछने लगा, "आप लोग कहाँ से आए हैं ?"

"लखनऊ से। यह वहाँ की मशहूर तवायफ है। अभी अल्हड़ लड़की ही तो है। यहाँ दिल्ली की सैर करने के लिए आए हैं।"

भीतर देवी सन्तू को बता रही थी—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं गठरी उठाए इस किनारे पर आ लगी तो किसी आदमी ने मेरे मुख पर रूमाल डाला और मुझे उसी समय चक्कर से आने लगे। उसने मेरी बाँह पकड़ ली और कुछ दूर तक मुझे घसीटता हुआ ले गया। फिर मैं बेहोश हो गई।

"मुझे होश आया तो मैं एक कमरे में बन्द थी। मुझ में खड़े होने की ताकत नहीं थी। मैं लेटी रही। कुछ देर में मूझको दूध पीने के लिये दिया गया। रोटी खिलाई और फिर मुझे बताया गया कि मेरी माँ बाढ़ में बह गई है। उसका पता नहीं चला। मैंने बताया कि वह तो किनारे पर आ गई थी। परन्तु उस औरत ने मुझे विश्वास दिलाया और मुझ को अपनी लड़की की भाँति प्यार करने का आश्वासन दिया।

"अगले दिन वह औरत और उसके साथ एक आदमी मुझे अल्मोड़ा ले गये। वहाँ मुझको गाना और नाचना सिखाया जाने लगा। पाँच वर्ष तक ये कलाएँ सिखा कर मुझे लखनऊ में लाया गया और एक आदमी के पास पाँच हजार रुपये में बेच दिया गया। वहाँ मुझ से वेश्यावृत्ति कराई जाने लगी। जो कुछ मिलता था, आधा मेरा होता था और आधा मुझे रखने वाले का।

"दो वर्ष से मैं यही कर रही हूँ। इनके साथ, जो बाहर बैठे हैं, औरत के रूप में आई हूँ। मेरे संरक्षकों को ये तीन सौ रुपया दे आये हैं। मुझको पाँच सौ रुपया देने की बात थी। मैंने आभूषण खरीदने के लिए कहा तो होटल के मैनेजर ने इस दुकान का पता बता दिया। हम यहाँ चले आये हैं। रामनारायणजी का नाम सुना हुआ प्रतीत होता था। तुम्हारा नाम सुना तो बचपन की सब बातें स्मरण हो आई हैं"

देवी की आँखें डबडबा रही थीं। सन्तू ने उसके आभूषण देखे तो कह दिया, "यहाँ तुम बहुत सुखी प्रतीत होती हो।"

"तुम ऐसा समझते हो सन्तू ?"

"तुम्हारे वस्त्राभूषण देखकर तो कुछ ऐसा ही समझना पड़ रहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इनके बिना तो वेश्या का काम ही नहीं चल सकता। तुम भी तो आभूषणों को हरे रंग के कागज पर रख कर दिखाते हो।"

"तो तुमको वहाँ कुछ कष्ट है ?"

"सन्तू ! माँ क्या सत्य ही मर गई थी ?"

"नहीं, वह जीवित है और तुम्हें स्मरण कर रोती रहती है।"

"मुझे वह अब अपने घर में रख लेगी ?"

"न रखने के लिए क्या हुआ है तुमको ?"

"तो तुम जानते नहीं कि वेश्याओं को क्या होता है ?"

"जो हो, मैं समझता हूं कि तुम वहाँ रह सकोगी। परन्तु वहाँ तो अभी भी बाजरे की रोटी और बथुए का साग ही खाया जाता है।"

"तुम्हारा विवाह हो गया है क्या ?"

"नहीं, अभी नहीं।"

"मैं माँ के पास चलूंगी।"

"तो इनको छोड़ दो और मेरे साथ चलो।"

"आओ, मैं इनको विदा कर देती हूँ।"

वे दोनों बाहर दुकान पर आ गये। देवी ने एक को सम्बोधित कर कहा, "वीरेन्द्रसिंह जी ! आप जाइए, मैं माँ के पास जा रही हूँ।"

"माँ के पास कैसे जा सकती हो तुम ? हम तुमको सौसन बाई के पास वापस करने का वायदा करके लाये हैं ? नहीं तो वह हमको पुलिस में दे देगी। वह कहेगी, हमने तुम्हें मार कर यमुना में बहा दिया है और आभूषण स्वयं रख लिए हैं। तुम्हारे सामने ही तो उसने एक-एक आभूषण, जो तुम पहने हुए थीं, गिना कर हमारे साथ भेजा था।"

"मैं आपको लिख कर दे देती हूँ कि मैं अपनी मर्जी से यहाँ रह गई हूँ। मैं उस सौसन बाई की गुलाम नहीं हूँ।"

"तुम ठीक कहती हो। परन्तु तुम रजिस्टर्ड तवायफ हो। तुम्हें पुलिस में चलकर रिपोर्ट लिखानी होगी।"

"लिखवा देती हूँ, चलो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे दोनों बहुत परेशान मालूम होते थे। रामनारायण ने भी देवी का साथ देते हुए कहा, "ठीक है, चलो मैं भी तुम्हारे साथ ही चलता हूँ थाने में। आप पर किसी तरह का हरफ नहीं आवेगा।"

"आभूषणों का क्या होगा ?"

"ये देवी के हैं। क्यों देवी ?"

"लालाजी ! मैं इनको लेकर क्या करूँगी ?"

"अभी तो ले लो। फिर विचार कर लेगे।"

देवी ने वे आभूषण रामनारायण के पास रखवा दिए। सभी रामनारायण की घोड़ा-गाड़ी में सवार हो थाने जा पहुँचे।

रामनारायण ने रिपोर्ट लिखने वाले को दस रुपये का नोट दिया तो निपोर्ट लिख दी गई। अपना पूर्ण वृतान्त लिखा कर देवी ने लिखाया, "मुझे यह बताया गया था कि मेरे माता-पिता का देहान्त हो गया है। नहीं तो मैं पहले ही यहाँ चली आती। अब सन्तराम से मुझको विदित हुआ है कि वे दोनों जीवित हैं। इस कारण मैं अपनी इच्छा से वेश्यावृत्ति का त्याग कर रही हूँ। मैं अपने माता-पिता के पास रहना चाहती हूँ। मैं अपनी माँ, जो रामनारायण-बस्ती तिमारपुर नम्बर बारह में रहती है, के पास रहने के लिए जा रही हूँ।"

देवी के साथियों को थाने में ही छोड़, रामनारायण देवी और सन्तराम को साथ लेकर अपनी दुकान पर आ गया। देवी ने अपने शरीर से सभी आभूषण उतार दिये। उसने अपने चटक-मटक के वस्त्र भी उतार दिये। सलवार, कुरता और ऊपर एक चादर ओढ़ वह सन्तू से बोली, "अब मुझे माँ के पास ले चलो।"

यह सब करने-धरने में दोपहर का एक बज गया। सन्तू और देवी लाला रामनारायण की घोड़ा गाड़ी में तिमारपुर जा पहुँचे।

× × ×

सायंकाल जब सन्तू आया तो राधाकृष्ण उसको अपनी पत्नी के पास ले गया। वहाँ उसने उसको गोद लेने की बात कही।

बातचीत रामनारायण, लाजवन्ती और चन्दोबीबी के सम्मुख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई। चन्दोबीबी ने सन्तू से कहा भी की जैसे वह रहना पसन्द करेगा, वैसे ही उसके रहने का प्रबन्ध कर दिया जावेगा। इस पर सन्तू ने कहा, "देवी ने एक वेश्या के वैभव-सम्पन्न जीवन पर माँ की बाजरे की रोटियों को पसन्द किया है। इसी प्रकार अनायास लाखों होने के स्थान पर मुझे अपने माँ-बाप के साथ रहते हुए मेहनत मजदूरी के तीस रुपये मासिक कहीं अधिक पसन्द हैं।"

रामनारायण ने कह दिया, "तुम अपने जीवन भर में भी इतना नहीं कमा सकोगे। भैया भी तुम्हारी संगति में रहकर ईमानदारी से कमाई करेंगे। फिर किसी बड़े घर में तुम्हारा विवाह हो जाएगा।"

"मैं तो रामी माँ को बचन दे आया हूँ। मेरा विवाह देवी के साथ ही होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुस्तकालय
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या R 089·9143 आगत संख्या 167928
GUR-P

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त

1894-1989 शिक्षा : एम. एस-सी.

प्रथम उपन्यास "स्वाधीनता के पथ पर" से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं।

विज्ञान की पृष्ठभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये।

वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भांषा में प्रस्तुत करना गुरुदत्त की ही विशेषता है।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नही जा सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar